Postal Regn No./C.G./RYP DN/48/2022-24

website- www.dvpnews.in

रायपुर (छ.ग.) एवं झांसी (उ.प्र.) से एक साथ प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी पत्र

दैनिक विश्व परिवार

● अंक : 300 ● वर्ष : 12 ● रायपुर, गुरुवार 22 मई 2025 ● पृष्ठ : 08 ● मूल्य : 3 रूपए ● संस्थापक : कीर्तिशेष- श्री कैलाश चन्द्र जैन

सुविचार

विश्व में सबसे अधिक शक्ति आत्मा में है।

The Self (Soul) is the strongest power in the world.

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

मुठभेड़ में नक्सलियों का शीर्ष नेता बसवराजू मारा गया

27 नक्सलियों के शव और भारी मात्रा में हथियार बरामद, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी व गृह मंत्री अमित शाह ने जवानों को सराहा

नक्सली हमले का बहादुरी से मुकाबला करते हुए डीआरजी का एक जवान शहीद

रायपुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ में नक्सलियों के खिलाफ लगातार सुरक्षाबलों की तरफ से ऑपरेशन चलाए जा रहे हैं। इसी कड़ी में नारायणपुर, बीजापुर, दंतेवाड़ा के सीमावर्ती क्षेत्रों में हुई मुठभेड़ में सुरक्षाबलों ने एक ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल की है। अब तक इस अभियान के दौरान नक्सलियों के शीर्ष नेता बसवा राजू समेत कुल 27 नक्सलियों के शव और भारी मात्रा में हथियार बरामद किए गए हैं। अनुमान है कि अभियान के दौरान कई माओवादी गंभीर रूप से घायल हुए हैं। मुठभेड़ के दौरान नक्सली हमले का बहादुरी से मुकाबला करते हुए डीआरजी का एक जवान शहीद हो गया है। मुठभेड़ में कुछ अन्य जवानों को इस ऑपरेशन के दौरान चोटें आई हैं। सभी घायल खतरे से बाहर हैं। सर्च अभियान लगातार जारी है। सुरक्षाबललों की इस सफलता पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और गृहमंत्री अमित शाह ने जवानों के पराक्रम की सराहना की है।

नारायणपुर और बीजापुर इलाके में नक्सलियों पर सुरक्षाबलों के जवान आज प्रलय बनकर टूटे। नक्सलियों के खिलाफ इस एक्शन में नक्सलियों का शीर्ष नेता बसवा राजू भी मारा गया है। बसवा राजू कुख्यात नक्सली रहा है उसके ऊपर डेढ़ करोड़ रुपए का इनाम है।

हमें अपने सैन्य बलों पर गर्व है : प्रधानमंत्री मोदी

छत्तीसगढ़ में सुरक्षाबलों को मिली कामयाबी और 27 नक्सलियों के मारे जाने पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि हमें अपने सैन्य बलों पर गर्व है। हमारी सरकार माओवाद के खतरे को खत्म करने और अपने लोगों के लिए शांतिपूर्ण और प्रगतिशील जीवन सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध है।

कौन था बसव राजू...

जानकारी के मुताबिक 2018 में बसव राजू को नक्सल संगठन की कमान सौंपी गई थी। बसवा राजू का असली नाम नंबाला केशव राव है। उसे गगन्ना, प्रकाश और बीआर के नाम से भी जाना जाता है। उसके पिता का नाम वासुदेव राव है और वह काफी उम्रदराज है। उसकी उम्र करीब 75 साल के आसपास बताई जा रही है। उसने बीटेक की पढ़ाई की थी वह आंध्र प्रदेश के श्रीकाकुलम का रहने वाला था। वसवा राजू खूंखार नक्सली था वह भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) का सीनियर कैडर था और दक्षिण बस्तर डिवीजनल कमेटी का चीफ था। राजू छत्तीसगढ़, ओडिशा से लेकर आंध्र प्रदेश की सीमाओं पर सक्रिय था।

गृहमंत्री अमित शाह ने कहा- नक्सलवाद को खत्म करने की लड़ाई में ऐतिहासिक उपलब्धि

केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने कहा कि नक्सलवाद को खत्म करने की लड़ाई में एक ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल हुई है। छत्तीसगढ़ के नारायणपुर में एक ऑपरेशन में हमारे सुरक्षा बलों ने 27 खूंखार माओवादियों को मार गिराया है, जिनमें सीपीआई-माओवादी के महासचिव, शीर्ष नेता और नक्सल आंदोलन की रीढ़ नंबाला केशव राव उर्फ बसवराजू भी शामिल है। नक्सलवाद के खिलाफ भारत की लड़ाई के तीन दशकों में यह पहली बार है कि हमारे बलों द्वारा एक महासचिव स्तर के नेता को मार गिराया गया है। मैं इस बड़ी सफलता के लिए हमारे बहादुर सुरक्षाबलों और एजेंसियों की सराहना करता हूँ। यह बताते हुए भी खुशी हो रही है कि ऑपरेशन ब्लैक फॉरेस्ट के पूरा होने के बाद, छत्तीसगढ़, तेलंगाना और महाराष्ट्र में 54 नक्सलियों को गिरफ्तार किया गया है और 84 नक्सलियों ने आत्मसमर्पण किया है। मोदी सरकार 31 मार्च 2026 से पहले नक्सलवाद को खत्म करने के लिए संकल्पित है।

जारी है विजय का शंखनाद, खत्म हो रहा नक्सलवाद : मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय

नक्सली मुठभेड़ को लेकर मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के मार्च 2026 तक देश-प्रदेश में नक्सलवाद के खात्मे के संकल्प को मजबूती प्रदान करते हुए सुरक्षाबल के जवान निरंतर सफलता हासिल कर लक्ष्य की ओर तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। नारायणपुर में छत्तीसगढ़ पुलिस की डीआरजी यूनिट के द्वारा कठिन भौगोलिक परिस्थितियों और अनेक चुनौतियों के बावजूद, वामपंथी उग्रवाद के खिलाफ इस निर्णायक अभियान को पूरी प्रतिबद्धता और दृढ़ संकल्प के साथ पूरा किया जा रहा है। इसका परिणाम है कि अब तक 27 नक्सली मारे गए हैं, जिनमें कुख्यात नक्सल लीडर नंबाला केशव राव और अलियास बसवराजू के खात्मे की भी पुष्टि हुई है। मुख्यमंत्री साय ने आगे कहा कि जवानों को मिली यह कामयाबी सराहनीय है, उनकी वीरता को नमन करता हूँ। ऑपरेशन के दौरान डीआरजी के एक जवान के वीरगति को प्राप्त होने और कुछ जवानों के घायल होने की दुःखद सूचना प्राप्त हुई है। घायल जवानों के त्वरित इलाज के निर्देश दिए हैं। ईश्वर से बलिदान हुए जवान की आत्मा की शांति और घायल जवानों के जल्द से जल्द स्वस्थ होने की प्रार्थना करता हूँ।

इस बड़े ऑपरेशन के लिए छत्तीसगढ़ पुलिस को बधाई

नारायणपुर में चल रहे ऑपरेशन में मारे गए 27 नक्सलियों पर छत्तीसगढ़ विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह ने कहा कि मैं इस बड़े ऑपरेशन के लिए छत्तीसगढ़ पुलिस को उनकी सफलता के लिए बधाई देता हूं। इस ऑपरेशन में एक पुलिसकर्मी के घायल होने के अलावा किसी को कोई नुकसान नहीं पहुंचा है। मैं केंद्रीय गृह मंत्री, मुख्यमंत्री और विजय शर्मा को भी बधाई देता हूं।

पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की 34वीं पुण्यतिथि पर राहुल गांधी ने शेयर किया भावुक पोस्ट

लिखा- आपके अधूरे सपनों को साकार करना ही मेरा संकल्प है

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश के पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न राजीव गांधी की 34वीं पुण्यतिथि पर लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष और कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने उन्हें याद किया है। राहुल गांधी ने अपने पिता के नाम एक भावुक पोस्ट भी शेयर किया। उन्होंने लिखा कि पापा, आपकी यादें हर कदम पर मेरा मार्गदर्शन करती हैं।

राहुल गांधी ने अपने आधिकारिक एक्स अकाउंट पर दो तस्वीरों को शेयर किया। एक तस्वीर में वह अपने पिता के साथ बैठे हुए दिखाई दे रहे हैं, जबकि दूसरी तस्वीर राजीव गांधी की समाधि स्थल की है, जहां राहुल अपने पिता को हाथ जोड़कर श्रद्धांजलि देते हुए नजर आ रहे हैं। राहुल गांधी ने इन तस्वीरों के साथ एक भावुक संदेश भी साझा किया। उन्होंने लिखा, पापा, आपकी यादें हर कदम पर मेरा मार्गदर्शन करती हैं। आपके अधूरे सपनों को साकार करना ही मेरा संकल्प है और मैं इन्हें पूरा करके रहूंगा।

इससे पहले कांग्रेस ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर कुछ तस्वीरें साझा की थीं। उन्होंने लिखा, स्वर्गीय राजीव गांधी की पुण्यतिथि पर, विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने वीर भूमि पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। राजीव गांधी के दूरदर्शी नेतृत्व ने हमारे राष्ट्र की नींव को बदल दिया, जो न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व पर आधारित है। उनकी स्थायी विरासत हमारे दृष्टिकोण का मार्गदर्शन करती रहती है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पूर्व पीएम राजीव गांधी की पुण्यतिथि पर उन्हें श्रद्धांजलि दी। पीएम मोदी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा, आज उनकी पुण्यतिथि पर मैं हमारे पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

रायपुर रेलवे स्टेशन पर मालगाड़ी के डिब्बे पटरी से उतरे

रायपुर (विसं)। रायपुर रेलवे स्टेशन पर आज सुबह बड़ा हादसा हुआ। मालगाड़ी के डिब्बे पटरी से उतर गए। गूड्स ट्रेन के दो डिब्बे पटरी से उतर गए है, मौके पर रेलवे अधिकारी, जीआरपी सहित तमाम संबंधित अधिकारी मौजूद है। रायपुर रेल मंडल के सीनियर डीसीएम अवधेश कुमार त्रिवेदी ने घटना की पुष्टि की है। रायपुर रेलवे स्टेशन पर मालगाड़ी डिरेल होने के बाद हडकंप मच गया। जांच के लिए सेफ्टी टीम मौके पर मौजूद है। डिब्बे को पटरी से हटाने सहित राहत काम शुरू किया जा रहा है। मालगाड़ी नागपुर डिवीजन के आंध्र से लोड हुआ था। डिब्बों में आयरन और लोह अयस्क भरा हुआ था। रायपुर रेलवे स्टेशन पर ही ये घटना हुई है। मालगाड़ी प्लेटफॉर्म पर खड़ी थी, इसी दौरान ट्रेन के पीछे के डिब्बे पटरी से उतर गए।

मैं आपके गांव-घर का बेटा, प्रदेश को विकास की राह में ले जाना मेरा संकल्प : विष्णुदेव साय

मुख्यमंत्री ने पीएम आवास सहित अन्य योजनाओं के हितग्राहियों से किया संवाद

जशपुर के ग्राम दोकड़ा के समाधान शिविर में शामिल हुए मुख्यमंत्री, कॉलेज सहित अन्य कार्यों की घोषणा की

रायपुर (विश्व परिवार)। सुशासन तिहार के तीसरे चरण में प्रदेश के कोने-कोने में शासन की योजनाओं के क्रियान्वयन की वस्तुस्थिति जानने निकले प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय का उड़नखटोला आज उनके गृह जिले जशपुर के दोकड़ा ग्राम में उतरा। यहाँ समाधान शिविर में उन्होंने सुशासन तिहार में प्राप्त आवेदनों पर की गई कार्यवाही और पीएम आवास सहित अन्य योजनाओं के लाभार्थियों से संवाद कर योजनाओं की हकीकत जानी। मुख्यमंत्री श्री साय ने आमनागरिको को सम्बोधित करते हुए कहा कि मैं आपके गाँव घर का बेटा हूँ। मेरा सौभाग्य है कि आपके आशीर्वाद से प्रदेश का मुख्यमंत्री बना। प्रदेश को विकास की राह में ले जाना मेरा संकल्प है।

मुख्यमंत्री श्री साय ने आगे कहा कि आपके आशीर्वाद से हमारी सरकार बनी है। विगत डेढ़ वर्ष में विकास के लिए कार्य कर रहे हैं। सरकार बनते ही पहले केबिनेट में पीएम आवास के हितग्राहियों के लिए 18 लाख आवास की स्वीकृति प्रदान की। उन्होंने कहा कि प्रदेश में लगातार आवास बन रहे हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने बिलासपुर में 3 लाख आवास के हितग्राहियों को गृह प्रवेश कराया। अम्बिकापुर में केंद्रीय पंचायत मंत्री श्री शिवराज सिंह ने 51 हजार हितग्राहियों को गृह प्रवेश कराया। मुख्यमंत्री ने कहा कि जिनका मकान पक्का नहीं है उन्हें चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। एसईसीसी और आवास प्लस के सर्वे में जिनका भी नाम है सभी का मकान बनेगा। प्रधानमंत्री ने पीएम आवास के लिए इस वर्ष बजट में बड़ी राशि का प्रावधान किया है। मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि हमने किसानों से जो वादा किया था उसे पूरा किया। 31 सौ रुपए प्रति क्विंटल में धान खरीदी, प्रति एकड़ 21 क्विंटल धान खरीदी, दो साल का बकाया बोनस की राशि भी दी। भूमिहीन कृषि मजदूरों को राशि देना शुरू किया है। महतारी वन्दन योजना से महिलाओं को प्रतिमाह एक हजार की राशि देकर उन्हें आर्थिक रूप से मजबूत बनाने और महिला सशक्तिकरण का काम किया जा रहा है।

सोनिया-राहुल गांधी के खिलाफ केस बनता है, अपराध की आय से 142 करोड़ कमाए : ईडी

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने नवंबर 2023 में नेशनल हेराल्ड से जुड़ी 751.9 करोड़ रुपये की संपत्ति जब्त नहीं कर ली। ईडी ने आगे दावा किया कि गांधी परिवार ने न केवल अपराध से प्राप्त धन को अर्जित करके धन शोधन किया, बल्कि उस धन को अपने पास भी रखा।

प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने बुधवार को दिल्ली की एक अदालत को बताया कि नेशनल हेराल्ड मामले में आरोपी सोनिया गांधी और राहुल गांधी ने अपराध से 142 करोड़ रुपये की कमाई की है। नेशनल हेराल्ड मनी लॉन्ड्रिंग मामले में संघीय एजेंसी का प्रतिनिधित्व कर रहे अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल एसवी राजू ने कहा कि आरोपी तब तक अपराध की आय का आनंद ले रहे थे। जब तक कि प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने नवंबर 2023 में नेशनल हेराल्ड से जुड़ी 751.9 करोड़ रुपये की संपत्ति जब्त नहीं कर ली। ईडी ने आगे दावा किया कि गांधी परिवार ने न केवल अपराध से प्राप्त धन को अर्जित करके धन शोधन किया, बल्कि उस धन को अपने पास भी रखा।

अंग्रेजी अखबार, स्थापना 1938 में पंडित जवाहरलाल नेहरू और स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों ने की। स्वामित्व एजेएल के पास था। जो नवजीवन (हिंदी), कौमी आवाजन्न (उर्दू) निकालता था।

एजेएल पर साल 2008 तक 90 करोड़ रुपए का कर्ज हो गया। इसका प्रकाशन बंद हो गया। कांग्रेस ने 2002 से 2011 के बीच एजेएल को 90 करोड़ रुपए की राशि ऋण के रूप में दी थी।

ऑपरेशन सिंदूर के तहत जम्मू-कश्मीर के अखनूर सेक्टर में नियंत्रण रेखा पर 72 टैंक तैनात

नई दिल्ली (एजेंसी)। ऑपरेशन सिंदूर के तहत भारत ने जम्मू-कश्मीर के अखनूर सेक्टर में नियंत्रण रेखा पर 72 टैंक तैनात किए थे। एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि 72 टैंक इस ऑपरेशन का अहम हिस्सा रहे। ये 125 मिमी की तोपों और 4, 000 मीटर तक की मिसाइल मारक क्षमता से लैस हैं। इन्हें संयुक्त बलों की तैनाती के तहत मोर्चे पर भेजा गया था।

72 टैंक अभी भी बख्तरबंद गाड़ियों के साथ तैनात हैं, ताकि घुसपैठ के रास्तों को पूरी तरह सील किया जा सके। सेना अधिकारियों ने यह भी बताया कि ऑपरेशन को औपचारिक तौर से खत्म नहीं किया गया है, बल्कि सिर्फ रोका गया है। पाकिस्तान के खिलाफ सैन्य कार्रवाई 10 मई से रुकी हुई है, लेकिन नियंत्रण रेखा पर जवान 24म7 निगरानी में जुटे हुए हैं। भारतीय वायुसेना ने मंगलवार को कहा था कि भारत के पास इतनी ताकत है कि वह पाकिस्तान के किसी भी हिस्से को निशाना बना सकता है।

4000 मीटर की दूरी तक मिसाइल गिराने में सक्षम, घुसपैठ के रास्तों को सील करना मकान इससे पहले, सेना ने वीडियो पोस्ट करके बताया 7-8 मई की रात पाकिस्तान ने सीजफायर का उल्लंघन किया था, जिसका मुंहतोड़ जवाब दिया गया। सेना पहले से सतर्क थी और पाकिस्तान की फायरिंग पैटर्न को समझकर कुछ ही सेकेंड में जवाब दिया। भारतीय वायुसेना ने ऑपरेशन सिंदूर के दौरान पाकिस्तान की मिसाइल को अपने एयर डिफेंस सिस्टम से तबाह कर दिया था। यह मिसाइल चीन में बनी थी। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, फाइव आइज देश (अमेरिका, ब्रिटेन, ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, न्यूजीलैंड) के अलावा फ्रांस और जापान इस मिसाइल के मलबे की जांच करना चाहते हैं, ताकि यह पता कर सकें कि इसे बनाने के लिए चीन ने किन टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल किया है। एयर डिफेंस चौफ लेफ्टिनेंट जनरल सुमेर इवान ने कहा-चाहे पाकिस्तानी सेना अपना मुख्यालय रावलपिंडी से हटाकर खैबर पख्तूनख्वा तक कहीं और क्यों न ले जाए, वह हमारी रेंज में ही रहेगा।

प्रधानमंत्री मोदी 28 को ओड़िसा, आंध्रप्रदेश और छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्रियों से करेंगे चर्चा

रायपुर (आरएनएस)। गोदावरी नदी में अंतर्राज्यीय बहुउद्देशीय पोलावरम बांध परियोजना के निर्माण को लेकर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में एक महत्वपूर्ण बैठक 28 मई को नई दिल्ली में होने जा रही है। इस बहुउद्देशीय परियोजना का उद्देश्य आंध्रप्रदेश में सिंचाई, पेयजल की आपूर्ति करना है। जबकि छत्तीसगढ़ में बीजापुर जिले के 25 गांव डूबान में आएंगे। वहीं ओड़िसा राज्य को पर्यावरण की क्षति होगी। प्रदेश के मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ओड़िसा के मुख्यमंत्री मोहन चरण मांझी, आंध्रप्रदेश के मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी उपस्थित रहेंगे। कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष दीपक बैज ने इस परियोजना विरोध करते हुए कहा कि कांग्रेस सदैव इसका विरोध किया है। इसको लेकर हमने सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा भी खटखटाया है। संवाददाता के अनुसार गोदावरी नदी में बनने वाले पोलावरम परियोजना से बीजापुर जिले के 25 गांव डूबान में आएंगे।

सनातन राष्ट्र शंखनाद महोत्सव में प्रबल प्रताप सिंह जूदेव को मिला सनातन धर्मश्री पुरस्कार सम्मान

रायपुर (विश्व परिवार)। गोवा स्थित परिपूर्ण अध्यात्मशास्त्र एवं साधना के प्रचार-प्रसार के लिए कार्यरत सनातन संस्था द्वारा संस्था के प्रमुख, पूज्य गुरूदेव डॉ. जयंत आठवलेजीं के जन्मोत्सव पर 18 से 19 मई 2025 को सनातन राष्ट्र शंखनाद महोत्सव में प्रबल प्रताप सिंह जूदेव जी को सनातन धर्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया. यह कार्यक्रम संस्था के रजत महोत्सव (25 वर्ष पूर्ण होने) के उपलक्ष्य में आयोजित किया गया.

17 से 19 मई 2025 तक चलने वाले इस त्रि-दिवसीय महोत्सव का आयोजन गोवा में किया गया है, जिसमें धर्म रक्षा, राष्ट्र सेवा और सनातन मूल्यों की पुनर्स्थापना को लेकर विविध कार्यक्रमों का आयोजन हुआ. अपने पिताजी श्रद्धेय दिलीप सिंह जूदेव जी के घर वापसी अभियान को आगे बढ़ाते हुए प्रबल प्रताप सिंह जूदेव ने हजारों लोगों को सनातन धर्म में पुन: प्रतिष्ठित किया है। धर्म जागरण और राष्ट्र सेवा के क्षेत्र में उनके अद्वितीय योगदान को मान्यता देते हुए उन्हें यह सम्मान प्रदान किया. कार्यक्रम में विष्णु शंकर जैन जी, सुरेश चावनके जी, टायगर राजा सिंह जी, उदय महुरकर जैसे गणमान्य एवं धर्म एवं राष्ट्र उत्थान के लिए समर्पित भाव से कार्य करने वाले ऐसे कई महाअनुभावों को भी सम्मानित किया गया.

अपने उद्बोधन में प्रबल प्रताप सिंह जूदेव ने कहा कि-इस सम्मान के लिए सनातन संस्था का हृदय से आभारी हूं. इस महान सम्मान को मैं अपने पूज्य पिताजी कुमार दिलीप सिंह जूदेव को समर्पित करता हूं।

दैनिक
विश्व परिवार
रायपुर/सूरजपुर
रायपुर, गुरूवार 22 मई 2025
www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

आचार्य श्री विद्यासागर जी की सद्प्रेरणा - धागे से आत्मनिर्भरता का उपक्रम

जबलपुर में 100% हस्त निर्मित वस्त्रों के विक्रय केंद्र श्रमदान अपनापन का भव्य शुभारंभ 27 मई को

जबलपुर (विश्व परिवार) । 27 मई 2025, प्रात: 9 बजे, च्न मॉल, ज्योति टॉकीज़ के सामने, आनंद होटल, जबलपुर में श्रमदान अपनापन हथकरघा विक्रय केंद्र का भव्य शुभारंभ होने जा रहा है । यह केंद्र पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज एवं आचार्य श्री समय सागर जी महाराज के पावन आशीर्वाद से प्रारंभ किया जा रहा है । श्रमदान के माध्यम से आज 1500 ग्रामीण परिवारों एवं 450 बंदियों को एक नया जीवन, सम्मानजनक आजीविका और आत्मनिर्भरता का अवसर मिला है । यह पहल केवल वस्त्र विक्रय केंद्र नहीं, बल्कि सामाजिक पुनर्निर्माण, पर्यावरणीय संतुलन और पुनर्वास की एक मिसाल है ।

यह अभिनव अभियान मध्यप्रदेश की 6 जेलों सहित तिहाड़ जेल (दिल्ली), सागर सेंट्रल जेल, बनारस सेंट्रल जेल, मिर्जापुर, आगरा एवं मथुरा जेल में संचालित है, जहाँ बंदी हथकरघा चला कर प्रति माह 8,000 से 10,000 तक की आय प्राप्त कर रहे हैं ।

श्रमदान अपनापन न केवल 100% हस्तनिर्मित, प्राकृतिक वस्त्रों की बिक्री का केंद्र है, बल्कि यह ग्रामीण भारत के पुनर्निर्माण की दिशा में एक प्रेरणादायक पहल है ।

आपके एक वस्त्र से किसी का घर चलता है, किसी की दुनिया संवरती है । इस शुभारंभ अवसर पर सामाजिक, आध्यात्मिक एवं प्रशासनिक क्षेत्रों की प्रतिष्ठित हस्तियाँ उपस्थित रहेंगी ।

दमोह जन परिषद चैप्टर के स्थापना दिवस समारोह में

दुबई की इंटरनेशनल मॉडल विद्या जोशी 18 जून को आएंगी

दमोह (विश्व परिवार) । बी यूनिक इंटरनेशनल मिसेज दुबई,मोस्ट पॉपुलर फेसऑफ आबू धाबी, लोकप्रिय रनवे मॉडल एवं एक्ट्रेस सुश्री विद्या जोशी पटेल,जन परिषद के दमोह चैप्टर के स्थापना दिवस समारोह में बतौर मुख्य अतिथि आगामी 18 जून को दमोह पधारेगी ।

दमोह चैप्टर के पदाधिकारी सर्वश्री सुधीर विद्यार्थी,मनोज जैन पत्रकार,दिनेश प्यासी, अभिषेक सिंघई एडवोकेट, सौरभ विद्यार्थी एवं सुश्री प्रीति गौतम ने जानकारी देते हुए बताया कि इस अवसर पर नगर को गौरवान्वित करने वाली प्रतिभाओं को सम्मानित करने के साथ , आकर्षक सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति की जाएगी तथा दमोह चैप्टर की वूमेन विंग के नव निर्वाचित पदाधिकारियों पदाधिकारियों का शपथ ग्रहण कार्यक्रम संपन्न होगा ।

उक्त आयोजन में जन परिषद के राष्ट्रीय संयोजक एवं वरिष्ठ पत्रकार श्री रामजी श्रीवास्तव एवं प्रांतीय सचिव श्री नितिन श्रीवास्तव,जन परिषद के मालवा सहसंयोजक मालवा एवं वरिष्ठ पत्रकार श्री जितेन्द्र पुरोहित , जन परिषद के संभागीय सचिव अन्नी दुबे एडवोकेट,उपाध्यक्ष अजय श्रीवास्तव,सुनील जैन पूर्व विधायक सागर के साथ दमोह जिले के सम्मानीय गणमान्य अतिथिगणों की विशेष उपस्थिति रहेगी ।

आयोजकों ने बताया कि समारोह में दमोह के इतिहास में पहली बार ब्यूटी एंड फैशन जगत की कोई अंतराष्ट्रीय स्तर की पर्सनैलिटी आ रही हैं ।

1 किलो 900 ग्राम गांजा जप्त आरोपी गिरफ्तार

सूरजपुर ब्यूरो - (विश्व परिवार)। एसएसपी प्रशांत कुमार ठाकुर ने जिले के थाना-चौकी प्रभारियों को नशे के धंधे में लिप्त लोगों के विरूद्ध सख्त कार्यवाही करने के निर्देश दिए है। इसी तारतम्य में दिनांक 19-20/05/2025 की दरम्यानी रात्रि में थाना सूरजपुर पुलिस को मुखबीर से सूचना मिला कि नया बस स्टैण्ड सूरजपुर में एक व्यक्ति गांजा बेचने हेतु ग्राहक की तलाश कर रहा है।

सूचना पर थाना सूरजपुर की पुलिस मौके पर पहुंची जहां शिव कुमार साहू पिता राजसजीवन साहू उम्र 45 वर्ष निवासी ग्राम सोनपुर, थाना सूरजपुर को पक?ा जिसके कब्जे से 1 किलो 900 ग्राम गांजा बरामद किया गया। जप्त गांजा की बाजारू कीमत करीब 40 हजार रूपये है। मामले में गांजा जप्त कर धारा 20(बी) एनडीपीएस एक्ट के तहत कार्यवाही कर आरोपी को गिरफ्तार किया गया है। कार्यवाही में थाना प्रभारी सूरजपुर विमलेश दुबे व उनकी टीम सक्रिय रही।

कलेक्टर सूरजपुर जयवर्धन ने की बाल विवाह रोकने की अपील

सूरजपुर ब्यूरो विश्व परिवार) सुशासन तिहार 2025 के अंतर्गत जनपद पंचायत प्रतापपुर के ग्राम टुकुडांड में समाधान शिविर का आयोजन कलेक्टर श्री एस. जयवर्धन की उपस्थिति में किया गया। इस अवसर पर नगर पंचायत उपाध्यक्ष श्री अजीत शरण सिंह, ग्राम सरपंच तथा अन्य जनप्रतिनिधिगण भी उपस्थित थे। शिविर के दौरान कुल 13 ग्रामीणों को राशन कार्ड तथा 5 हितग्राहियों को ऋण पुस्तिका का वितरण किया गया। साथ ही नशा मुक्ति एवं जल संरक्षण हेतु सामूहिक शपथ दिलाई गई।

कचरा प्रबंधन एवं बाल विवाह पर कलेक्टर का विशेष आग्रह शिविर को संबोधित करते हुए कलेक्टर श्री एस. जयवर्धन ने ग्रामवासियों से आग्रह किया कि वे कचरा प्रबंधन की प्रणाली को अपनाकर अपने ग्राम को स्वच्छ और सुंदर बनाएँ। उन्होंने बाल विवाह के विरुद्ध जागरूकता फैलाने की अपील करते हुए कहा कि ल?कियों का विवाह 18 वर्ष और ल?कों का विवाह 21 वर्ष की आयु से पहले न किया जाए। ऐसा न करने से परिवार की वर्तमान और आने वाली पी?ी को आर्थिक , शारीरिक, मानसिक जैसी परेशानियों का सामना करना प? सकता है। कलेक्टर ने क्षेत्र के पटवारियों को निर्देशित किया कि वे प्रत्येक सोमवार और मंगलवार को अपने निर्धारित मुख्यालय में नियमित रूप से उपस्थित रहें, जनता की समस्याओं का निराकरण करें तथा मुख्यालय में निवास की जानकारी आमजन को उपलब्ध कराएँ। साथ ही नामांतरण, बंटवारा और सीमांकन के आवेदन विधिवत तहसीलदार एवं नायब तहसीलदार को प्रस्तुत कर समय पर निराकरण करने के निर्देश दिए। राशन कार्ड एवं ऋण पुस्तिकाओ का वितरण

शिविर में जिन 13 हितग्राहियों को राशन कार्ड वितरित किए गए उनमें लगपति सिंह/गंगा कुमार (केरता), रूपा सिंह/चौन सिंह, ज्योति सिंह/मनरूप सिंह, सुखमेन/यार सिंह, सुषमा बेक/सुनील बेक, राजेश्वरी/विनोद कुमार, ललिता सिंह/शंख सिंह, अनिमा सिंह/लाल बहादुर, अनिता/उदय कुमार, फुलेश्वरी/रामलाल, घुरनी देवी टेकाम/देवनाथ सिंह और मोहनी/रामप्रीत शामिल हैं। वहीं ऋण पुस्तिका वितरण में मनाराम (ग्राम नवाडीह), लाल साहेब (ग्राम मकनपुर), रमा शंकर (ग्राम मसगा), रामप्रीत (ग्राम चंदेली) और अंकित (ग्राम मसगा) को लाभान्वित किया गया। समाधान शिविर में ब?ी संख्या में ग्रामीणों ने भाग लिया और शासन की जनहितकारी योजनाओं का लाभ प्राप्त किया।

नशा मुक्ति एवं जल संरक्षण हेतु सामूहिक शपथ

कार्यक्रम के दौरान नशे से दूर रहने और जल संरक्षण को अपनाने की सामूहिक शपथ दिलाई गई। इस शपथ समारोह का उद्देश्य नशा के दुष्परिणामों और जल की ब?ती समस्या से समाज को अवगत कराना और इसके लिए आवश्यक कदम उठाने हेतु प्रोत्साहित करना था। एवं आमजन से इन विषयों को गंभीरता से लेने हेतु अपील करना था। साथ ही साथ लोगों को स्वच्छ, स्वस्थ एवं सतत जीवनशैली के लिए प्रेरित करना था।

खनिज विभाग अंततः जागा जयनगर पुलिस के साथ अवैध रेत खनन पर कार्रवाई, 7 वाहन जब्त

सूरजपुर ब्यूरो (विश्व परिवार)। कलेक्टर एस. जयवर्धन के निर्देशानुसार एवं अनुविभागीय अधिकारी के मार्गदर्शन में आज खनिज, राजस्व एवं पुलिस विभाग की संयुक्त टीम ने कार्रवाई करते हुए ग्राम राजापुर में 5 और हर्राटिकरा में 2 वाहनों को अवैध रेत परिवहन एवं उत्खनन करते हुए पकड़ा। इस प्रकार कुल 7 वाहनों पर कार्रवाई की गई है। कार्यवाही के दौरान जब्त किए गए सभी वाहन पुलिस थाना जयनगर की अभिरक्षा में सुरक्षार्थ रखे गए हैं।

गौरतलब है कि कलेक्टर जयवर्धन के नेतृत्व में जिले में अवैध रेत खनन और परिवहन पर अंकुश लगाने के लिए जिला स्तर पर गठित टास्क फोर्स द्वारा लगातार निगरानी की जा रही है। प्रशासन द्वारा खनिज राजस्व की हानि रोकने हेतु सख्त कदम उठाए जा रहे हैं, और इस दिशा में नियमित कार्रवाई की जा रही है।

गौरतलब है कि बरसात आने से कुछ ही दिन पहले खनिज विभाग रेत खनन एवं परिवहन करने नींद से जगी है इससे पूर्व खनिज विभाग कुंभकरणी निद्रा में सो रही थी । बता दे की बरसात में ऐसे भी रेत माफिया कोयला उत्खनन एवं परिवहन बंद कर देते हैं अब अचानक खनिज विभाग का जगना लोगों को औपचारिकता मात्र ही लग रही है।

धानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार के लिए 31 जुलाई तक ऑनलाईन आवेदन आमंत्रित

सूरजपुर ब्यूरो (विश्व परिवार)। देश के मेघावी बच्चों को सम्मानित करने हेतु भारत सरकार महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार 2025 के लिए 31 जुलाई तक ऑनलाईन नामांकन आमंत्रित किए गए हैं। इच्छुक एवं पात्र युवा निर्धारित अवधि तक अधिकृत ऑनलाईन राष्ट्रीय पुरस्कार पोर्टल में आवेदन कर सकते हैं। भारत सरकार के महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा यह पुरस्कार प्रदान किया जाता है। नामांकन केवल राष्ट्रीय पुरस्कार पोर्टल- अवार्डस डॉट जीओव्ही डॉट इन के जरिए स्वीकार किए जाएंगे।

छत्तीसगढ़ क्रिकेट प्रीमियर लीग के दूसरे संस्करण का आयोजन 6 जून से शानदार ट्राफी का किया गया अनावरण, 6 टीमें लेगीं हिस्सा

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ स्टेट क्रिकेट संघ द्वारा गत वर्ष छत्तीसगढ़ क्रिकेट प्रीमियर लीग (सी.सी.पी.एल.) के प्रथम संस्करण का आयोजन सफलतापुर्वक किया गया, जिसे राष्ट्रीय स्तर पर अभूतपूर्व सराहना प्राप्त हुयी एवं जिसके फलस्वरुप राज्य के क्रिकेट खिलाडीयों को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाने में सफलता प्राप्त हुयी। इंडियन प्रीमियर लीग के गत ऑक्शन में प्रदेश के 7 खिलाडीयों को सम्मिलित किया जाना इस सफलता को दर्शाता है।

छत्तीसगढ़ स्टेट क्रिकेट संघ द्वारा छत्तीसगढ़ किकेट प्रीमियर लीग (सी.सी.पी.एल.) के दूसरे संस्करण का आयोजन दिनांक 06 जून 2025 से 15 जून 2025 तक शहीद वीर नारायण सिंह अंर्तराष्ट्रीय किकेट स्टेडियम, नवा रायपुर में किया जाना है। गत वर्ष की भांती इस वर्ष भी लीग में 6 टीमें हिस्सा लेंगी जिनमें गत वर्ष की विजेता रायपुर रायनोस, बिलासपुर बुल्स, बस्तर बायसंस, रायगढ लायंस, राजनांदगांव पैंथर्स तथा सरगुजा टाइगर्स सम्मिलित हैं।

आज दिनांक 21 मई को छत्तीसगढ़ क्रिकेट प्रीमियर लीग (सी.सी.पी.एल.) के दूसरे संस्करण की ट्राफी का अनावरण किया गया। विशेष रुप से निर्मित ट्राफी में छत्तीसगढ़ प्रदेश के राजकीय पशु बायसन को विशेष रुप से दर्शाया गया है, जो

राज्य की गरीमा, प्रगती तथा दृढता को प्रदर्शित करता है।

साथ ही सभी 6 टीम तथा उनके कप्तान एवं खिलाडियों की घोषणा की गयी। इस अवसर पर सभी 6 टीमों की जर्सी का भी अनावरण किया गया।

छत्तीसगढ़ क्रिकेट प्रीमियर लीग (सी.सी.पी.एल.) के दूसरे संस्करण के स्तर को उच्च बनाने एवं अंर्तराष्ट्रीय स्तर के मानक स्थापित करने हेतु इस वर्ष निम्न सुविधाओं के विस्तार किये जा रहें हैं।डी आर एस सिस्टम इस संस्करण में डिसीजन रिव्यू सिस्टम (डी.आर.एस.) उपलब्ध होगा। खिलाडी अंपायर के निर्णय को चुनौती दे पायेगें। मध्य भारत में आयोजित किसी भी प्रतियोगिता में यह प्रथम बार होगा।

सोनी स्पोर्ट्स नेटवर्क पर सीधा प्रसारण प्रतियोगिता के सभी मैचों का सीधा प्रसारण सोनी स्पोर्ट्स चैनल पर किया जायेगा, जिसका प्रसारण अंर्तराष्ट्रीय स्तर पर अनेक देशों में किया जायेगा, इसके अतिरिक्त कुछ डिजिटल प्लेटफार्म पर भी सीधा प्रसारण उपलब्ध रहेगा।

अंर्तराष्ट्रीय स्तर के कमेंटेटर इस संस्करण में सभी कमेंटेटर अंर्तराष्ट्रीय स्तर के होगें। सभी मैचों के सीधे प्रसारण को अंर्तराष्ट्रीय मानकों के अनुरुप बनाने हेतु संघ द्वारा अनुभवी एवं प्रसिद्ध कमेंटेटर की टीम उपलब्ध रहेगी।

जल संरक्षण हेतु जन-जागरूकता का प्रभावशाली आयोजन

सूरजपुर ब्यूरो (विश्व परिवार) । आज जनपद पंचायत सूरजपुर के अंतर्गत ग्राम पंचायत कल्याणपुर में ''सुशासन तिहार'' के अंतर्गत समाधान शिविर का आयोजन श्रीमती लक्ष्मी राजवा? मंत्री महिला एवं बाल विकास विभाग के उपस्थिति में किया गया। जिसमें मोर गांव मोर पानी एवम जल शक्ति अभियान के तहत एक सशक्त एवं जनहितकारी कार्यक्रम संपन्न हुआ।

मंत्री श्रीमती लक्ष्मी राजवा? द्वारा शिविर में सभी नागरिकों को जल संरक्षण की शपथ दिलाई गई। उन्होंने वर्षा जल संचयन के महत्व को रेखांकित करते हुए नागरिकों से रेन वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम और सोखता गड्ढा जैसे उपायों को अपनाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि जल संरक्षण हम सभी की नैतिक जिम्मेदारी है और यह समय की आवश्यकता भी है। जल संकट की भयावहता को रोकने के लिए जनसहभागिता से जल संचयन को एक जन आंदोलन का रूप देना अत्यंत आवश्यक है।

इस अवसर पर श्रीमती कमलेश नंदनी साहु, मुख्य कार्यपालन अधिकारी, जिला पंचायत सूरजपुर ने जानकारी दी कि जिले में मोर गांव मोर पानी मिशन के अंतर्गत जल शक्ति अभियान का क्रियान्वयन किया जा रहा है, जिसके पाँच प्रमुख घटक हैंकृ(1) जल संरक्षण एवं वर्षा जल संचयन, (2) वाटर शेड विकास, (3) पारंपरिक एवं अन्य जल टैंकों का नवीनीकरण, (4) बोरवेल रिचार्ज संरचनाओं का पुन: उपयोग, तथा (5) जल स्रोतों की समग्र संवर्धन। उन्होंने अभियान का प्रमुख स्लोगन बारिश को वहीं एकत्र करें, जहाँ गिरे, जब गिरे को दोहराते हुए लोगों से इसमें सक्रिय भागीदारी का आग्रह किया।

शिविर में अनेक गणमान्य अतिथियों की उपस्थिति रही, जिनमें श्री बाबूलाल अग्रवाल, श्रीमती किरण केराम, जिला पंचायत सदस्य; श्रीमती स्वाती संत सिंह, अध्यक्ष, जनपद पंचायत सूरजपुर; श्री मनमत कुमार बछा?, उपाध्यक्ष; लोकान्ता सिंह एवं राजकुमारी पैकरा, जनपद सदस्य; ठाकुर पैकरा; श्री बाबूलाल शाह, श्री मोहन शर्मा, श्री दिपेन्द्र दुबे, श्रीमती शिवानी जायसवाल, एसडीएम सूरजपुर; श्री विनोद सिंह, सीईओ जनपद पंचायत सूरजपुर; श्री सुरेंद्र पैकरा तहसीलदार लटोरी; श्री शैलेन्द्र कुमार, नायब तहसीलदार लटोरी; श्री विमल सिंह, एसडीओ, आरईएस; तथा संबंधित क्लस्टर के सभी सरपंच, सचिव एवं ग्रामवासी शामिल रहे।

यह कार्यक्रम न केवल जल संरक्षण के प्रति सामूहिक चेतना का परिचायक बना, बल्कि भविष्य की पी?यों के लिए जल सुरक्षा सुनिश्चित करने की दिशा में एक सार्थक कदम सिद्ध होगा।

कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव, जिला- रायपुर (छ.ग.)
Email :birgaonmcp@gmail.com,
Website : www.nagarnigambirgaon.com

-: निगम अभिलेखों में नामांतरण की सूचना :-
नामांतरण प्रकरण क्र. 61 दिनांक 21-05-2025
वार्ड का नाम- राजीव गांधी वार्ड
वार्ड क्र. 05 वर्ष- 2025-26

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि निम्नानुसार भवन/भूमि जो कि निगम के संपत्ति कर मांग पंजी में वार्ड क्रमांक 05 मांग **पंजी क्र. 185 युआईडी 12163** अनुसार अधिभोगी का नाम श्री/श्रीमती **हेमिन बाई / दशरथ पारथी** से दर्ज है, श्री/श्रीमती **कान्ति / नगेन** अधिभोगी के द्वारा रजिस्ट्री/ लिखत द्वारा/ वंशानुक्रम/ बिक्रीनामा आधार पर अधिभोग प्राप्त कर नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत नामांतरण हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त अधिभोग परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो इस प्रकाशन के 30 दिन के भीतर/अथवा दिनांक **20-06-2025** तक प्रकरण क्रमांक सहित कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव में लिखित दावा-आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। निर्धारित समयावधि पश्चात किसी भी प्रकार की कोई दावा-आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी। दावा-आपत्ति प्राप्त नहीं होने की स्थिति में अधिभोगी के द्वारा देय राशि भुगतान उपरांत अधिभोगी के पक्ष में नामांतरण की कार्यवाही की जावेगी।

राजस्व अधिकारी
नगर पालिक निगम, बीरगांव
जिला-रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव, जिला- रायपुर (छ.ग.)
Email :birgaonmcp@gmail.com,
Website : www.nagarnigambirgaon.com

-: निगम अभिलेखों में नामांतरण की सूचना :-
नामांतरण प्रकरण क्र. 60 दिनांक 21-05-2025
वार्ड का नाम- राजीव गांधी वार्ड
वार्ड क्र. 05 वर्ष- 2025-26

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि निम्नानुसार भवन/भूमि जो कि निगम के संपत्ति कर मांग पंजी में वार्ड क्रमांक 05 मांग **पंजी क्र. 185 युआईडी 12163** अनुसार अधिभोगी का नाम श्री/श्रीमती **हेमिन बाई / दशरथ पारथी** से दर्ज है, श्री/श्रीमती **हेमबती राजगोड / रोशन राजगोड** अधिभोगी के द्वारा रजिस्ट्री/ लिखत द्वारा/ वंशानुक्रम/ बिक्रीनामा आधार पर अधिभोग प्राप्त कर नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत नामांतरण हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त अधिभोग परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो इस प्रकाशन के 30 दिन के भीतर/अथवा दिनांक **20-06-2025** तक प्रकरण क्रमांक सहित कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव में लिखित दावा-आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। निर्धारित समयावधि पश्चात किसी भी प्रकार की कोई दावा-आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी। दावा-आपत्ति प्राप्त नहीं होने की स्थिति में अधिभोगी के द्वारा देय राशि भुगतान उपरांत अधिभोगी के पक्ष में नामांतरण की कार्यवाही की जावेगी।

राजस्व अधिकारी
नगर पालिक निगम, बीरगांव
जिला-रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव, जिला- रायपुर (छ.ग.)
Email :birgaonmcp@gmail.com,
Website : www.nagarnigambirgaon.com

-: निगम अभिलेखों में नामांतरण की सूचना :-
नामांतरण प्रकरण क्र. 59 दिनांक 21-05-2025
वार्ड का नाम- मां दंतेश्वरी माता वार्ड
वार्ड क्र. 16 वर्ष- 2025-26

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि निम्नानुसार भवन/भूमि जो कि निगम के संपत्ति कर मांग पंजी में वार्ड क्रमांक 16 मांग **पंजी क्र. 396 युआईडी 16979** अनुसार अधिभोगी का नाम श्री/श्रीमती **शंकर निषाद / दहरू निषाद** से दर्ज है, श्री/श्रीमती **टीकेश्वरी निषाद / शंकर निषाद** अधिभोगी के द्वारा रजिस्ट्री/ लिखत द्वारा/ वंशानुक्रम/ बिक्रीनामा आधार पर अधिभोग प्राप्त कर नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत नामांतरण हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त अधिभोग परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो इस प्रकाशन के 30 दिन के भीतर/अथवा दिनांक **20-06-2025** तक प्रकरण क्रमांक सहित कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव में लिखित दावा-आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। निर्धारित समयावधि पश्चात किसी भी प्रकार की कोई दावा-आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी। दावा-आपत्ति प्राप्त नहीं होने की स्थिति में अधिभोगी के द्वारा देय राशि भुगतान उपरांत अधिभोगी के पक्ष में नामांतरण की कार्यवाही की जावेगी।

राजस्व अधिकारी
नगर पालिक निगम, बीरगांव
जिला-रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-10)
अमलीडीह पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone10@gmail.com

पत्र क्र./19724/ न.पा.नि./जोन क्र.-10/2025
रायपुर, दिनांक 20-05-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 19724
वार्ड का नाम- 50 - रानी दुर्गावती वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 50 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR446E0265A** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **MANISH KUMAR SHAH** पिता/पति, श्री/श्रीमती **LT. HARGOVIND SHAH** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **HARI SHANKAR MUKHERJEE** पिता/पति, श्री/श्रीमती **S/O SHRI SHAMBHU MUKHERJEE** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री विवेकानन्द दुबे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-(10)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

समयबद्ध एवं पारदर्शी तरीके से आमजनों तक योजनाओं को पहुंचाना सुशासन का उद्देश्य : विधायक मोहल

पंडरभट्ठा क्लस्टर अंतर्गत 02 हजार 578 आवेदनों का हुआ गुणवत्तापूर्ण निराकरण

मुंगेली। सुशासन तिहार अंतर्गत मुंगेली विकासखण्ड के ग्राम पण्डरभट्ठा में समाधान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में विधायक पुन्नूलाल मोहले, कलेक्टर कुन्दन कुमार, जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीकांत पाण्डेय शामिल सहित स्थानीय जनप्रतिनिधिगण हुए। उन्होंने शिविर का विधिवत शुभारंभ किया और 14 ग्राम पंचायतों के 177 लोगों को शौचालय व 05 को पीएम आवास का प्रतिकात्मक चाबी, 04 हितग्राहियों को पशु एवं बकरी शेड निर्माण हेतु स्वीकृति पत्र प्रदान किया। इसके साथ ही 05 कृषकों को पौधा वितरण, 05 हितग्राहियों को पीएम किसान सम्मान निधि, 15 कृषकों को केसीसी योजना के तहत ऋण व 04 को एटीएम कार्ड वितरण, 02 बच्चों को श्रवण यंत्र, 01 हितग्राही को आईस बॉक्स, 10 को आयुष्मान वय वंदना कार्ड, 07 को राशनकार्ड, 15 को पेंशन स्वीकृति पत्र, 12 को जॉब कार्ड, 04 स्व सहायता समूहों को सी.आई.एफ व आर.एफ का चेक तथा 07 महिलाओं को लखपति दीदी प्रमाण पत्र और 07 हितग्राहियों को श्रम कार्ड प्रदान कर लाभान्वित किया गया। इसके साथ ही कक्षा 10वीं व 12वीं के 16 विद्यार्थियों को बोर्ड परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन पर सम्मानित किया गया। इस

दौरान लोक कला संगीत के माध्यम से बूंद-बूंद पानी बचाना हैं का संदेश दिया गया और विष्णु के सुशासन में चलाई जा रही जनहितैषी और जन कल्याणकारी योजनाओं की मनमोहक प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए विधायक मोहले ने कहा कि मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में शासन की योजनाओं को पारदर्शी ढंग से पात्र व्यक्तियों को समयबद्ध लाभ दिलाने के लिए समाधान तिहार का आयोजन किया जा रहा है। शिविर में शासन-प्रशासन की सक्रियता और प्रतिबद्धता से आमजनों की समस्याओं का त्वरित समाधान किया जा रहा है। उन्होंने आमजनों को योजनाओं की जानकारी दी और लाभ उठाने प्रेरित करते हुए कहा कि विष्णु के सुशासन में सांय-सांय काम हो रहा है। विधायक ने सुशासन तिहार में प्राप्त आवेदनों के निराकरण के मामले में मुंगेली जिले को प्रदेश में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर बधाई दी। उन्होंने शिविर में मोर गॉव, मोर पानी अभियान अंतर्गत प्रत्येक घर में वाटर हार्वेस्टिंग बनाने, जल के अपव्यय को रोकने, कुआॅ, बावड़ी, तालाब आदि की सफाई के साथ भविष्य के लिए जल संरक्षण की शपथ दिलाई।

कलेक्टर ने आयुष्मान महाभियान में आमजनों से की सहभागिता की अपील

कलेक्टर ने कहा कि सुशासन तिहार में जिले के अधिकारी-कर्मचारी आप लोगों की मांगों एवं समस्याओं के समाधान करने में लगातार जुटे हुए हैं। वे स्वयं सभी शिविरों में जाने का प्रयास कर रहे हैं, ताकि जिले की समस्याओं को वे बारीकी से समझ सकें और उसका गुणवत्तापूर्ण निराकरण किया जा सके। कलेक्टर ने कहा कि जिला प्रशासन द्वारा 21 मई को ''आयुष्मान महाभियान'' आयोजित किया जा रहा है। इसके तहत जिले में 01 लाख प्लस कार्ड बनाने का लक्ष्य रखा गया है। जिला प्रशासन की टीम द्वारा घर-घर जाकर आयुष्मान कार्ड बनाया जाएगा। उन्होंने लोगों को 21 मई को इस महाभियान में अधिक से अधिक सहभागिता निभाते हुए अपना आयुष्मान कार्ड बनवाने की अपील की। जिला पंचायत सीईओ प्रभाकर पाण्डेय ने बताया कि 14 ग्राम पंचायतों में कुल 02 हजार 585 आवेदन प्राप्त हुए, इनमें 02 हजार 578 आवेदनों का गुणवत्तापूर्ण निराकरण कर लिया गया है। सबसे ज्यादा पीएम आवास में 01 हजार आवेदन प्राप्त हुए, इनका नाम जोड़ लिया गया है।

नपं पथरिया में आयोजित समाधान शिविर में शामिल हुए बिल्हा विधायक कौशिक

अटल परिसर का लोकार्पण एवं आकांशौचालयों का किया गया भूमिपूजन

मुंगेली। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के सुशासन संकल्प को मूर्त रूप देने हेतु नगर पंचायत पथरिया में सुशासन तिहार के अंतर्गत समाधान शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में मुख्य अतिथि के रूप में बिल्हा विधायक धरमलाल कौशिक शामिल हुए। कौशिक ने नगर पंचायत क्षेत्र में 19.95 लाख रुपए की लागत से नवनिर्मित अटल परिसर का लोकार्पण किया, साथ ही 16.92 लाख रुपए की लागत से बनने वाले दो नग आकांशौचालयों का भूमिपूजन कर नगरवासियों को शुभकामनाएं दी। उन्होंने समाधान शिविर में विभिन्न विभागों की योजनाओं के तहत 36 हितग्राहियों को लाभान्वित किया। इनमें 07 हितग्राहियों को श्रम कार्ड, 05 को आयुष्मान व वय वंदना कार्ड, 08 को नोनी सुरक्षा योजना अंतर्गत बॉन्ड पेपर, 09 को नवीन राशन कार्ड, 05 को हाफबिजली बिल प्रमाण पत्र एवं

02 हितग्राहियों को बैटरी चलित स्प्रेयर प्रदान किया गया। इससे पहले उन्होंने भक्त कर्मा माता चैक से अटल चैक तक आयोजित तिरंगा यात्रा में भाग लेकर राष्ट्रभक्ति का संदेश दिया। विधायक कौशिक ने अपने संबोधन में कहा कि मुख्यमंत्री साय के नेतृत्व में प्रदेशभर में जनहित को सर्वोपरि रखते हुए सुशासन तिहार का आयोजन हो रहा है। इस पहल का मुख्य उद्देश्य आमजनों की समस्याओं का मौके पर समाधान और योजनाओं का त्वरित लाभ प्रदान करना है। उन्होंने ऑपरेशन सिंदूर का विशेष उल्लेख करते हुए देश की रक्षा में लगे वीर जवानों और सुरक्षा जागरूकता फैलाने वाले नागरिकों के प्रति सम्मान प्रकट किया। अपर कलेक्टर एवं नोडल अधिकारी मेनका प्रधान ने बताया कि वार्ड क्रमांक 09 से 15 तक के लिए मंगल भवन में शिविर आयोजित किया गया, जिसमें राजस्व, नगरीय प्रशासन, महिला एवं बाल विकास, खाद्य तथा विद्युत विभाग से संबंधित कुल 522 आवेदन प्राप्त हुए। कलेक्टर कुन्दन कुमार के मार्गदर्शन में सभी आवेदनों का त्वरित एवं गुणवत्तापूर्ण निराकरण किया गया। शिविर में प्रधानमंत्री आवास योजना के अंतर्गत सर्वाधिक आवेदन प्राप्त हुए।

समाधान शिविर में व्हीलचेयर मिलने से दिलीप के खिले चेहरे

मुंगेली। मुंगेली विकासखंड के ग्राम पंडरभट्ठा में आयोजित समाधान शिविर में एक दृश्य ऐसा भी था, जिसने जनकल्याण की भावना को जीवंत कर दिया। ग्राम चिरहूला के 65 वर्षीय दिलीप चतुर्वेदी, जो पिछले कई वर्षों से नस संबंधी गंभीर समस्या से जूझ रहे थे, व्हीलचेयर की आवश्यकता लेकर शिविर में पहुंचे। जैसे ही उन्होंने अपनी समस्या अधिकारियों के समक्ष रखी, जिला प्रशासन ने संवेदनशीलता और तत्परता की मिसाल पेश करते हुए तत्काल उन्हें व्हीलचेयर प्रदान किया। यह मानवीय पहल एक साधारण सहायता से कहीं अधिक थी। यह आत्मसम्मान, राहत और सहारे की वह भावना थी, जिसकी उन्हें वर्षों से तलाश थी। कार्यक्रम में उपस्थित मुंगेली विधायक पुन्नूलाल मोहले, कलेक्टर कुन्दन कुमार, जिला पंचायत

सीईओ प्रभाकर पाण्डेय और स्थानीय जनप्रतिनिधियों ने स्वयं अपने हाथों से दिलीप चतुर्वेदी को व्हीलचेयर सौंपते हुए उन्हें पुष्पाहार पहनाकर शुभकामनाएं दीं। व्हीलचेयर पाकर भावविभोर दिलीप चतुर्वेदी की आंखों में आभार की चमक और चेहरे पर सच्ची मुस्कान देखने को मिली। उन्होंने बताया कि वे कई वर्षों से नसों की बीमारी से पीड़ित हैं, जिससे चलने-फिरने और दैनिक कार्यों में कठिनाई होती थी। लेकिन अब, व्हीलचेयर मिलने से उनकी परेशानियां काफी हद तक दूर हो गई हैं। दिलीप ने मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के सुशासन और जनसेवा के लिए उन्हें धन्यवाद दिया और इस पहल को सच्चे जनसेवक की पहचान बताया। इस अवसर पर समाज कल्याण विभाग के उप संचालक मौजूद रहे।

''आयुष्मान महाअभियान'' को सफल बनाने अधिकारी-कर्मचारियों को दिया गया प्रशिक्षण

कलेक्टर ने किया निरीक्षण, कहा लक्ष्य को हासिल करने गंभीरता से लें प्रशिक्षण

मुंगेली। जिले में आयुष्मान महाअभियान का आयोजन किया जाएगा। इस महाभियान अंतर्गत स्वास्थ्य विभाग की टीम घर-घर जाकर सुबह से शाम तक हितग्राहियों का आयुष्मान कार्ड बनाएगी। इसके लिए जिला मुख्यालय स्थित स्वामी आत्मानंद स्कूल दाउपारा, जनपद पंचायत और शासकीय हाईस्कूल करही में प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। कलेक्टर कुन्दन कुमार ने प्रशिक्षण का निरीक्षण किया और प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण को गंभीरता से लेने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि आयुष्मान भारत योजना शासन की जनहितैषी योजना है। जिले में 01 लाख प्लस कार्ड बनाने का

लक्ष्य रखा गया है। लक्ष्य को प्राप्त करने प्रशिक्षण में गंभीरता से कार्य सीखें। निरीक्षण के दौरान कलेक्टर ने प्रशिक्षण की गुणवत्ता, प्रशिक्षणार्थियों की उपस्थिति तथा कार्यक्रम की रूपरेखा की बारीकी से जानकारी ली। उन्होंने उपस्थित अधिकारियों व स्वास्थ्यकर्मियों को प्रशिक्षण की बारीकियों के साथ प्रभावी ढंग से संचालित करने के निर्देश दिए। कलेक्टर ने कहा कि शिविरों एवं घर-घर संपर्क के माध्यम से अधिकतम लोगों तक पहुंच बनाकर शत-प्रतिशत आयुष्मान कार्ड निर्माण सुनिश्चित किया जाएगा। इसके लिए प्रशिक्षण में प्रभावी ढंग से जानकारी प्राप्त करना आवश्यक है। इस अवसर पर जिला पंचायत सीईओ प्रभाकर पाण्डेय सहित संबंधित अधिकारी और प्रशिक्षणार्थीगण मौजूद रहे।

बी.एड. एवं डी.एल.एड. परीक्षा 22 मई को, पर्यवेक्षकों को दिया गया प्रशिक्षण

मुंगेली। छत्तीसगढ़ व्यावसायिक परीक्षा मंडल, रायपुर द्वारा बी.एड. एवं डी.एल.एड. प्रवेश परीक्षा 22 मई को जिले के 22 केन्द्रों में आयोजित की जाएगी। कलेक्टर कुन्दन कुमार के निर्देशानुसार केंद्राध्यक्षों, नोडल अधिकारी द्वारा नियुक्त पर्यवेक्षक एवं समन्वयक अधिकारियों को जिला कलेक्टोरेट स्थित मनियारी सभाकक्ष में प्रशिक्षण प्रदान किया गया। अतिरिक्त कलेक्टर निष्ठा पाण्डेय तिवारी ने प्रशिक्षण में परीक्षा के सफल आयोजन के संबंध में आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने परीक्षा से संबंधित सभी प्रक्रियाओं को निर्धारित समयानुसार पूर्ण करने और पारदर्शी तरीके से सम्पन्न कराने के निर्देश दिए। इस दौरान संबंधित अधिकारी और बड़ी संख्या में परीक्षा के लिए नियुक्त पर्यवेक्षक मौजूद रहे।

सैमसंग ने भारत में गैलेक्सी S25 एज के लिए प्री-बुकिंग की घोषणा की; कीमत 109,999 रुपये से शुरू

गुरुग्रामः भारत के सबसे बड़े कंज्यूमर इलेक्ट्रॉनिक्स ब्रांड, सैमसंग ने आज अपने श्रेणी को परिभाषित करने वाले गैलेक्सी S25 एज के लिए प्री-बुकिंग शुरू कर दी है। यह गैलेक्सी s सीरीज़ का सबसे स्लिम स्मार्टफोन है। स्टाइल और ताकत को ध्यान में रखकर बनाया गया, गैलेक्सी S25 मजबूत टाइटेनियम बॉडी में प्रीमियम, प्रो-लेवल परफॉर्मेंस का नया बैलेंस प्रदान करता है। S25 एज S सीरीज़ की विरासत को आगे बढ़ाता है, इसमें एक आइकॉनिक गैलेक्सी एआई-इनेबल्ड कैमरा दिया गया है और यह एक पोर्टेबल डिवाइस में रचनात्मकता के नये द्वार खोलता है।

असाधारण रूप से पतला और मजबूत डिज़ाइन- गैलेक्सी S25 एज, 5.8 mm के पतले चेसिस के साथ, इंजीनियरिंग की दुनिया में एक शानदार उपलब्धि है। यह स्मार्टफोन डिज़ाइन के लगभग हर तत्व को फिर से परिभाषित करता है। इसका हल्का महज 163 ग्राम वजन वाला फ्रेम स्टाइल और कार्यक्षमता दोनों में अव्वल है। यह स्लिम स्मार्टफोन्स को नए स्तर पर ले जाता है और गैलेक्सी S सीरीज़ की एकजैसी डिज़ाइन को बनाए रखता है। अपनी खूबसूरत, स्लिम डिज़ाइन के साथ यह फोन बेजोड़ मजबूती भी लेकर आता है। इसके घुमावदार किनारे और मज़बूत टाइटेनियम फ्रेम रोज़मर्रा के इस्तेमाल में शानदार सुरक्षा देते हैं। फ्रंट डिस्प्ले में इस्तेमाल हुआ नया कॉर्निंग गोरिल्ला ग्लास सिरैमिक 2 न सिर्फ बेहतरीन चमक देता है, बल्कि असाधारण मजबूती भी प्रदान करता है।

भारत में स्वच्छ इस्पात निर्माण को नई ऊर्जा : आर्सेलर मित्तल की 1GW अक्षय ऊर्जा परियोजना से एएम/एनएस इंडिया को मिलने लगी बिजली

आर्सेलर मित्तल की अब तक की सबसे बड़ी अक्षय ऊर्जा परियोजना — एक गीगावॉट (1GW) की सौर और पवन ऊर्जा संयंत्र, जो भारत के दक्षिणी राज्य आंध्र प्रदेश में स्थित है — ने हाल ही में एएम/एनएस इंडिया को स्वच्छ बिजली की आपूर्ति शुरू कर दी है। एएम/एनएस इंडिया, आर्सेलर मित्तल और निप्पॉन स्टील के बीच 60:40 के अनुपात में गठित इस्पात निर्माण का संयुक्त उद्यम है। करीब 700 मिलियन डॉलर की इस परियोजना को आर्सेलर मित्तल की पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी, एएम ग्रीन एनर्जी द्वारा विकसित, निर्मित और चालू किया गया है। यह परियोजना हर वर्ष एएम/एनएस इंडिया के 1.5 मिलियन टन कार्बन उत्सर्जन को कम करने में सहायक होगी, जिससे कंपनी को 2021 को आधार वर्ष मानते हुए 2030 तक अपने इस्पात उत्पादन की कार्बन तीव्रता में 20% की कटौती के लक्ष्य को प्राप्त करने में मदद मिलेगी। इस परियोजना को एक हाइब्रिड मॉडल के रूप में विकसित किया गया है, जिसमें 1GW की सौर और पवन ऊर्जा क्षमता को एक तृतीय-पक्ष जल-आधारित पम्प्ड स्टोरेज प्रणाली (जो वर्तमान में परीक्षण चरण में है और जून 2025 तक चालू होने की उम्मीद है) के साथ जोड़ा गया है। यह संयोजन परियोजना को न्यूनतम 250 मेगावाट की राउंड- द-क्लॉक (24×7) बिजली आपूर्ति सुनिश्चित करने में सक्षम बनाएगा — जो इस्पात उत्पादन जैसे सतत ऊर्जा आवश्यकताओं वाले उद्योग के लिए अत्यंत आवश्यक है।

होंडा मोटरसाइकल एंड स्कूटर इंडिया ने ऑल-न्यू रिबेल 500 लॉन्च की 'बुकिंग्स ओपन'

गुरुग्रामः होंडा मोटरसाइकल एंड स्कूटर इंडिया (HMSI) ने आज भारतीय बाजार में बहुप्रतीक्षित रिबेल 500 मोटरसाइकल लॉन्च की, जो ब्रांड के प्रीमियम मोटरसाइकल पोर्टफोलियो में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। इस नई क्रूज़र मोटरसाइकल की बुकिंग्स चुनिंदा बिगविंग टॉपलाइन डीलरशिप्स पर शुरू हो चुकी हैं। ऑल-न्यू 2025 होंडा रिबेल 500 की एक्स-शोरूम (गुरुग्राम) कीमत 5.12 LAKH लाख रखी गई है। यह मोटरसाइकल केवल गुरुग्राम, मुंबई और बेंगलुरु में उपलब्ध होगी, और इसकी डिलीवरी जून 2025 से शुरू की जाएगी। रिबेल 500 पारंपरिक डिज़ाइन और आधुनिक इंजीनियरिंग का अनूठा संगम प्रस्तुत करती है, जो भारतीय मोटरसाइकल प्रेमियों को एक खास राइडिंग अनुभव प्रदान करती है। लॉन्च की घोषणा करते हुए होंडा मोटरसाइकल एंड स्कूटर इंडिया के प्रबंध निदेशक, अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री त्सुत्सुमु ओटानी ने कहा, हम भारत में विश्व स्तर पर प्रशंसित रेबेल 500 को पेश करते हुए बेहद उत्साहित हैं। इस बहुप्रतीक्षित क्रूज़र मोटरसाइकल को अंतरराष्ट्रीय बाजारों में जबरदस्त प्रतिक्रिया मिली है, और हमें विश्वास है कि यह भारतीय राइडर्स को भी उतना ही पसंद आएगी। रेबेल 500 केवल एक मोटरसाइकल नहीं है — यह स्टाइल, परफॉर्मेंस और स्वतंत्रता का प्रतीक है। अपने अनूठे डिज़ाइन, दमदार प्रदर्शन और होंडा की विश्वसनीय इंजीनियरिंग के साथ यह देशभर के अनुभवी व नए राइडर्स के साथ गहराई से जुड़ाव बनाएगी।

प्रमुख सचिव सोनमणि बोरा ने पीएम जनमन मॉडल आवास छतौरी का किया निरीक्षण

जशपुरनगर। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में राज्य में संचालित सुशासन तिहार के तृतीय चरण में आवेदनों का समाधान के अवसर पर रविवार को आदिम जाति विकास विभाग के प्रमुख सचिव सोनमणि बोरा ने मनोरा विकासखण्ड के ग्राम पंचायत करदना में विशेष पिछड़ी जनजाति पहाड़ी कोरवा बस्ती पहुंचकर पीएम जनमन मॉडल आवास छतौरी का निरीक्षण किया गया। इस अवसर पर उप सचिव बी.के. राजपूत, सहायक आयुक्त अंबिकापुर ललित शुक्ला, सहायक आयुक्त जशपुर संजय सिंह, अनुविभागीय अधिकारी जशपुर ओकार यादव, मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद पंचायत मनोरा रघुनाथ राम, पी.ओ. मनरेगा नमिता, सब इंजीनियर संजय दिवाकर, सरपंच पटवारी और छात्रावास अधीक्षक उपस्थित थे। प्रमुख सचिव ने निरीक्षण के द्वारा विशेष पिछड़ी जनजाति पहाड़ी कोरवा परिवारों से उनकी सुविधाओं के संबंध में चर्चा किया और मंगरा राम, बिसानी बाई और अरविंद राम के आवासों का भ्रमण किया गया। प्रमुख सचिव के द्वारा पहाड़ी कोरवाओं से आवास निर्माण और उनके आवास के लिए आबंटित राशि के संबंध में जानकारी ली उन्होंने पूछा की आवास के लिए किसी के द्वारा पैसों की मांग तो नहीं की गई है। उसके जवाब में मंगरा राम के द्वारा बताया गया कि किसी के द्वारा पैसे की मांग नहीं किया गया है, साथ ही प्रमुख सचिव के द्वारा राशन कार्ड एवं महतारी वंदन योजना के संबंध में मंगरा राम एवं बिसनी बाई से चर्चा किया गया। उनके द्वारा राशन कार्ड से चावल लेने एवं महतारी वंदन की राशि निकालने में कोई परेशानी नहीं है बताया गया। पीएम जन मन आवास निर्माण छतौरी में कुल 13 आवास एवं शौचालय निर्मित है निर्माण के संबंध में प्रमुख सचिव के द्वारा संतुष्टि जाहिर की गई। पहाड़ी कोरवा झमा राम के द्वारा आवास में गर्मी के कारण पंखा एवं पानी हेतु नल कनेक्शन का मांग किया गया। जनपद सीईओ के द्वारा मुर्गी एवं बकरी शेड निर्माण, आंगनवाड़ी निर्माण एवं आवास स्थल में पेवर ब्लॉक लगाने संबंधी जानकारी दी गई। प्रमुख सचिव के द्वारा बिजली, पानी एवं पंखा लगाने के संबंधी में विभाग से चर्चा कर पूर्ण कराने हेतु जनपद सीईओ को निर्देशित किया गया। प्रमुख सचिव ने विशेष पिछड़ी जनजाति पहाड़ी कोरवा परिवारों के बच्चों को बिस्किट और पैरों के लिए चरण पादुका भी वितरण किए। उन्होंने बहुत ही आत्मीयता से पहाड़ी कोरवा के बीच पहुंचकर सरल सहज रूप में उनकी बातों को सूना और सभी समस्याओं का गंभीरता से निराकरण करने के निर्देश दिए हैं।

सैमसंग 'गैलेक्सी एम्पावर्ड' ने भूटान के टीचर्स के लिए लॉन्च किया शानदार प्रोग्राम

गुरुग्रामः भारत का सबसे बड़ा कंज्यूमर इलेक्ट्रॉनिक्स ब्रांड सैमसंग, भूटान के दूरस्थ क्षेत्रों के उत्साही शिक्षकों का अपनी बढ़ती कम्युनिटी 'गैलेक्सी एम्पावर्ड' में स्वागत कर रहा है। यह एक अनूठा कम्युनिटी-नेतृत्व वाला प्रोग्राम है, जिसे शिक्षा क्षेत्र में शिक्षकों, प्रधानाचार्यों और प्रशासकों को सशक्त बनाकर शिक्षा को बदलने के लिए डिज़ाइन किया गया है। 'गैलेक्सी एम्पावर्ड' कार्यक्रम, जो शिक्षकों को भविष्य की कक्षाओं के लिए तैयार करने के लिए ऑनलाइन और ऑफ्लाइन प्रशिक्षण आयोजित करता है, दिसंबर 2024 में भारत में शुरू हुआ था। अब, भूटान के शिक्षक भी कार्यशालाओं और सहयोगी शिक्षण के जरिए उस आंदोलन में शामिल हैं, जो तकनीक और नए विचारों से कक्षाओं को बेहतर बना रहा है। सैमसंग ने भूटान के दूरस्थ और वंचित समुदायों में सेवा देने वाले इन शिक्षकों के लिए गुरुग्राम में अपने एक्जीक्यूटिव बिजनेस सेंटर (ईबीसी) में 'गैलेक्सी एम्पावर्ड' इमर्शन प्रोग्राम का आयोजन किया। इस प्रोग्राम के दौरान, शिक्षकों ने गैलेक्सी इकोसिस्टम, जिसमें गैलेक्सी स्मार्टफोन, गैलेक्सी बुक, टैबलेट, फ्लिपबोर्ड और डिस्प्ले शामिल हैं, का व्यावहारिक अनुभव प्राप्त किया। साथ ही, उन्हें सैमसंग के शिक्षा में नए आविष्कारों, जैसे कि आधुनिक और सभी के लिए उपयुक्त गैलेक्सी डिवाइसेस और गैलेक्सी एआई ऐप्स के बारे में बताया गया।

क्योरबे ने भारत में हेल्थकेयर को एक समान रूप से सुलभ बनाने के लिए बर्टल्समैन इंडिया इन्वेस्टमेन्ट, एलेवर इक्विटी और ब्रिटिश इंटरनेशनल इन्वेस्टमेन्ट से जुटाई 21 मिलियन डॉलर की धनराशि

नईदिल्ली। फर्स्ट हाइब्रिड हेल्थकेयर प्लेटफॉर्म क्योरबे ने बर्टल्समैन इंडिया इन्वेस्टमेन्ट्स के नेतृत्व में सीरीज़ बी फंडिंग राउण्ड में 21 मिलियन डॉलर की राशि जुटाई है। इस राउण्ड में मौजूदा निवेशक एलेवर इक्विटी, यूके के डेवलपमेन्ट फाइनैंस इंस्टीट्यूशन एवं इम्पैक्ट इन्वेस्टर ब्रिटिश इंटरनेशनल इन्वेस्टमेन्ट ने भी हिस्सा लिया। यह वंचित क्षेत्रों में एक इनोवेशन्स एवं सेवाओं की एक समान उपलब्धता के द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों को भरोसेमंद स्वास्थ्यसेवाएं उपलब्ध कराने की क्योरबे की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। क्योरबे का लॉन्च 2021 में किया गया, जिसका मुख्यालय उड़ीसा में है, आज यह सर्वश्रेष्ठ टेक स्टैक तथा प्रशिक्षित एवं सक्रिय स्वास्थ्य मित्रों के समर्पित कार्यबल के द्वारा पावर्ड स्केलेबल ई-क्लिनिक नेटवर्क के रूप में विकसित हो चुका है। यह उड़ीसा एवं छत्तीसगढ़ में 150 से अधिक ई-क्लिनिकों के नेटवर्क के माध्यम से ग्रामीण परिवारों को डॉक्टर कन्सलटेशन, डायग्नॉस्टिक्स, फार्मेसी एवं टर्शरी केयर के लिए गुणवत्तापूवर्ण, किफ़ायती एवं सुलभ सेवाएं उपलब्ध कराता है। इसके निवारक स्वास्थ्य प्रोग्राम में 90,000 सक्रिय सदस्य है, जिनकी रीन्यूअल रेट 60 फीसदी से भी अधिक है। इस नई जुटाई गई पूंजी का उपयोग क्योरबे के इन-हाउस, प्रॉपराइटरी टेक्नोलॉजी स्टैक को सशक्त बनाने, देश भर में विस्तार करने तथा सही टीमों के निर्माण द्वारा विकास के अगले चरण को प्रोत्साहित करने के लिए किया जाएगा। कंपनी प्रेडिक्टिव केयर एवं संचालन दक्षता में सुधार लाने के लिए एआई एवं डेटा क्षमता का उपयोग करती है। इसने नए राज्यों जैसे झारखण्ड, बिहार, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश में विस्तार का लक्ष्य तय किया है।

होंडा मोटरसाइकिल एंड स्कूरटर इंडिया ने लॉन्च किया ऑल-न्यू X-ADV 'बुकिंग शुरू'

गुरुग्रामः प्रीमियम टू-व्हीलर सेगमेंट में अपनी पकड़ को और मजबूत करते हुए, होंडा मोटरसाइकिल एंड स्कूटर इंडिया (HMSI) ने आज ऑल-न्यू X-ADV को लॉन्च किया है। यह गाड़ी एक ओर एडवेंचर मोटरसाइकिल की ताकत और परफॉर्मेंस देती है, वहीं दूसरी ओर मैक्सी-स्कूटर जैसी सुविधा और आराम भी। यानी बाइक की दमदारी और स्कूटर की सहूलियत — दोनों का बेहतरीन संगम। X-ADV की बुकिंग देशभर में होंडा की बिगविंग डीलरशिप्स पर शुरू हो चुकी है और इसकी डिलीवरी जून 2025 से शुरू होने की संभावना है। गुरुग्राम (हरियाणा) में इसकी एक्स-शोरूम कीमत 11.90 लाख रूपए रखी गई है। होंडा मोटरसाइकिल एंड स्कूटर इंडिया के प्रबंध निदेशक, प्रेसिडेंट और सीईओ श्री त्सुत्सुमु ओटानी ने लॉन्च की घोषणा करते हुए कहा, होंडा में हम हमेशा परंपरागत सोच से आगे बढ़ते हुए मोटरसाइक्लिंग के अनुभव को नया आकार देने की कोशिश करते हैं। X-ADV हमारी इनोवेशन और डिज़ाइन की सोच का प्रमाण है। यह एक ऐसी मशीन है जो एडवेंचर और शहरी राइडिंग की सीमाओं को तोड़ती है। इसकी खास स्टाइलिंग, दमदार परफॉर्मेंस और एडवांस टेक्नोलॉजी उन राइडर्स के लिए है जो दो पहियों पर कुछ नया तलाशते हैं। हमें पूरा विश्वास है कि ङ्ग-ष्ठङ्क भारत में प्रीमियम मोटरसाइकिल पसंद करने वाले एक नए वर्ग को आकर्षित करेगा। इस मौके पर होंडा मोटरसाइकिल एंड स्कूटर इंडिया के डायरेक्टर - सेल्स और मार्केटिंग श्री योगेश माथुर ने कहा, X-ADV का लॉन्च हमारी बिगविंग यात्रा में एक और अहम पड़ाव है।

दैनिक
विश्व परिवार

विचार-पक्ष

रायपुर गुरूवार 22 मई 2025

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

संपादकीय

आतंक को संरक्षण नहीं

भाजपा देश भर में 'तिरंगा यात्रा' निकाल रही है। इस दौरान भाजपा कार्यकर्ता ऑपरेशन सिंदूर की सफलता के बारे में बताएंगे। वे क्या बोलेंगे, यानी उनके टॉकिंग प्वाइंट्स क्या होंगे, उसका संकेत प्रधानमंत्री ने अपने राष्ट्र के नाम संबोधन में दिया। सत्ता पक्ष को शायद अहसास है कि बीते 11 साल में पहली बार ऐसा हुआ है, जब राष्ट्रीय सुरक्षा के मुद्दे पर कथानक उसके साथ से फिसल गया है। ऑपरेशन सिंदूर के सिलसिले में अचानक हुए युद्धविराम पर उससे ऐसे हलकों से भी सवाल पूछे जा रहे हैं, जो आम तौर पर राष्ट्रीय सुरक्षा के मामले में सत्ताधारी समूह के नजरिए से इत्तेफ़ाक रखते हैं। संभवत: इसी अहसास का नतीजा है कि अचानक प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के राष्ट्र के नाम संबोधन का कार्यक्रम बना और साथ ही खबर आई कि 13 से 23 मई तक भारतीय जनता पार्टी देश भर में 'तिरंगा यात्रा' निकालेगी। इस यात्रा के दौरान भाजपा कार्यकर्ता लोगों को ऑपरेशन सिंदूर की सफलता के बारे में बताएंगे। वे क्या बोलेंगे, उसका संकेत प्रधानमंत्री ने अपने संबोधन में दिया। बल्कि ये कहा जा सकता है कि उन्होंने 'तिरंगा यात्रा' में जाने वाले कार्यकर्ताओं को टॉकिंग प्वाइंट्स दिए। सार यही होगा कि ऑपरेशन सिंदूर के जरिए पाकिस्तान के सीने पर वार किया गया और वहां आतंक के ढांचे को नष्ट कर दिया गया है। इससे घबराए पाकिस्तान ने (डीजीएमओ के जरिए) जब भारत से संपर्क किया और वादा किया कि आगे वहां आतंक को संरक्षण नहीं दिया जाएगा, तब युद्धविराम के जरिए भारत ने पाकिस्तान को एक मौका दिया है। मगर ये बातें गले नहीं उतरतीं, क्योंकि दस मई के बाद से उठे कई अहम सवालों के जवाब प्रधानमंत्री के भाषण से नहीं मिले। मसलन, युद्धविराम कराने में अमेरिका की क्या भूमिका रही, क्या भारत तटस्थ स्थल पर पाकिस्तान से बातचीत के लिए राजी हुआ है, क्या साढ़े तीन तीन की कार्रवाई के दौरान भारत को लड़ाकू विमानों का नुकसान हुआ, और इस पूरे प्रकरण में- चाहे संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद हो या आईएमएफ बोर्ड- भारत दुनिया में अकेला खड़ा क्यों नजर आया? प्रधानमंत्री ने कहा कि टेरर और टॉक साथ-साथ नहीं हो सकते, लेकिन लगे हाथ यह संकेत भी दिया कि भारत पाकिस्तान से आतंकवाद और पीओके के सवाल पर वार्ता के लिए तैयार है। तो कुल मिलाकर प्रश्न अनुत्तरित रहे। नैरेटिव का क्या होगा, यह अलग सवाल है।

रिश्वत लेकर सवाल पूछने का नेताओं काला इतिहास रहा है

योगेंद्र योगी

पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी की तृणमूल कांग्रेस पार्टी (टीएमसी) की सांसद महुआ मोइत्रा का मामला अभी भी देश के लोगों की स्मृति से मिटा भी नहीं है। महुआ मोइत्रा ने रियल एस्टेट कारोबारी दर्शन हीरानंदानी के व्यवसायिक हितों की रक्षा के लिए संसद में सवाल पूछे। देश के नेताओं ने आजादी के बाद से भ्रष्टाचार के इतने काले कारनामे किए हैं कि यदि कोई नेता ईमानदारी से अच्छा भी काम करे तब भी उस पर सहज भरोसा करना मुश्किल होता है। देश के लोगों की याद से नेताओ के काले कारनामे की छाप मिटे, इससे पहले ही कोई न कोई नया कांड ऐसा सामने आता है और पूरे तंत्र की विश्वसनीयता पर सवाल खड़े हो जाते हैं। नया मामला राजस्थान का है। भारत आदिवासी पार्टी (बीएपी) के एक विधायक जयकृष्ण पटेल को राजस्थान भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो ने विधानसभा में सवाल पूछने के बदले 20 लाख रुपए की रिश्वत लेने के आरोप में रंगे हाथों गिरफ्तार कर लिया। राजस्थान की इस क्षेत्रीय पार्टी के दो विधायक और एक सांसद हैं। आदिवासियों के उत्थान के आहवान के साथ इस पार्टी का गठन किया गया। इस पार्टी ने 2023 के विधानसभा चुनाव मे कुल चार सीटें जीती, तीन सीटें राजस्थान मे और एक सीट मध्यप्रदेश मे जीती। बीएपी की टिकट पर डूंगरपुर बांसवाड़ा संसदीय सीट जीतने वाले राजकुमार रोत लोकसभा से सांसद बने। रिश्वत लेने के आरोपी बीएपी विधायक पटेल ने विधानसभा में बीते सत्र के दौरान 11 जुलाई 2024 को अवैध खनन, फार्म हाउस, वन्य जीव और नशा तस्करी को लेकर सरकार पर गंभीर आरोप लगाते हुए कुछ सवाल किये गए थे। विधानसभा में इन्हीं खनन से जुड़े सवालों को हटवाने को लेकर रिश्वत का खेल शुरु हुआ। बीएपी विधायक ने इन सवालों को हटाने के लिए 10 करोड़ की डिमांड की थी। अंतत: 20 लाख में सौदा तय हुआ और विधायक पटेल को रंगे हाथों दबोच लिया गया। यह पहला मौका नहीं है जब किसी जनप्रतिनिधि ने सदन की पवित्रता को तार-तार किया है। इससे पहले भी मामले सामने आ चुके हैं, जब विधानसभा हो या लोकसभा में सवाल पूछने या नहीं पूछने के ऐवज में रिश्वत मांग कर समूचे लोकतंत्र को कलंकित करने का काम किया गया है। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी की तृणमूल कांग्रेस पार्टी (टीएमसी) की सांसद महुआ मोइत्रा का मामला अभी भी देश के लोगों की स्मृति से मिटा भी नहीं है। महुआ मोइत्रा ने रियल एस्टेट कारोबारी दर्शन हीरानंदानी के व्यवसायिक हितों की रक्षा के लिए संसद में सवाल पूछे। आरोप था कि महुआ मोइत्रा ने हीरानंदानी के इशारे पर 61 सवालों में 50 में अंबानी और अडानी को टारगेट किया। दर्शन हीरानंदानी ने खुलासा किया कि महुआ मोइत्रा ने अपनी संसद लॉगिन और पासवर्ड उनके साथ साझा किया था। उन्होंने महुआ की ओर से सवाल पोस्ट किए थे। एथिक्स कमेटी ने 6-4 के बहुमत से महुआ मोइत्रा की संसद सदस्यता खत्म करने की सिफारिश कर दी। टीएमसी सांसद मोइत्रा से पहले भी जनप्रतिनिधियों के ऐसे कृत्यों से देश में राजनीतिक बवंडर उठ चुके हैं। वर्ष 2005 में ऐसे ही एक अन्य मामले में लोकसभा के 10 और राज्यसभा के एक सांसद की सदस्यता रद्द हुई थी। तब एक वेब पोर्टल ने स्टिंग ऑपरेशन किया था। स्टिंग में 11 सांसद सवाल के बदले में कैश का ऑफर स्वीकार करते दिखे थे। इनमें लोकसभा के 10 और राज्यसभा के 1 सदस्य को निष्कासित कर दिया गया था। तब केंद्र में डॉक्टर मनमोहन सिंह के नेतृत्व में यूपीए-1 की सरकार थी। संसद की सदस्यता गंवाने वालों में 6 बीजेपी के थे, 3 बीएसपी के और 1-1 कांग्रेस के सांसद थे। स्टिंग में सबसे कम कैश 15000 रुपये की भाजपा सांसद छत्रपाल सिंह लोढ़ा के सामने पेशकश की गई थी जबकि सबसे ज्यादा कैश 1,10,000 रुपये आरजेडी के सांसद मनोज कुमार को ऑफर की गई थी। 24 दिसंबर 2005 को संसद में वोटिंग के जरिए आरोपी सभी 11 सांसदों को निष्कासित कर दिया गया। लोकसभा में प्रणब मुखर्जी ने 10 सांसदों के निष्कासन का प्रस्ताव रखा था जबकि राज्यसभा में तत्कालीन पीएम मनमोहन सिंह ने एक सांसद को निष्कासित करने का प्रस्ताव रखा था। वोटिंग के दौरान भाजपा वॉकआउट कर गई थी। पार्टी के वरिष्ठ नेता और तत्कालीन नेता प्रतिपक्ष एलके आडवाणी ने कहा था कि सांसदों ने जो कुछ किया वह करप्शन कम, मूर्खता ज्यादा है। इसके लिए निष्कासन बहुत ही कठोर सजा होगी। जनवरी 2007 में सुप्रीम कोर्ट ने भी सांसदों के निष्कासन के फैसले को सही ठहराया था। उसी साल दिल्ली हाई कोर्ट के निर्देश में दिल्ली पुलिस ने इस मामले में केस भी दर्ज किया था। न्यूज पोर्टल के दो पत्रकारों के खिलाफभी चार्जशीट दाखिल हुई। संसद राज्यसभा हो या लोकसभा, सदन में सत्र की कार्यवाही के दौरान असहज कर देने वाली घटनाओं का पुराना इतिहास रहा है। पहले भी ऐसी कई घटनाओं का गवाह बना है चाहे वो पैसे के लेन-देन को लेकर आरोप लगाने का मामला हो या फिर नोटों की गड्डियां लहराने का। ऐसे कई किस्से हैं जब सदन की गरिमा को तार-तार किया गया। आदिवासियों के उत्थान के आहवान के साथ इस पार्टी का गठन किया गया। इस पार्टी ने 2023 के विधानसभा चुनाव मे कुल चार सीटें जीती, तीन सीटें राजस्थान मे और एक सीट मध्यप्रदेश मे जीती। बीएपी की टिकट पर डूंगरपुर बांसवाड़ा संसदीय सीट जीतने वाले राजकुमार रोत लोकसभा से सांसद बने। रिश्वत लेने के आरोपी बीएपी विधायक पटेल ने विधानसभा में बीते सत्र के दौरान 11 जुलाई 2024 को अवैध खनन, फार्म हाउस, वन्य जीव और नशा तस्करी को लेकर सरकार पर गंभीर आरोप लगाते हुए कुछ सवाल किये गए थे। विधानसभा में इन्हीं खनन से जुड़े सवालों को हटवाने को लेकर रिश्वत का खेल शुरु हुआ। बीएपी विधायक ने इन सवालों को हटाने के लिए 10 करोड़ की डिमांड की थी। अंतत: 20 लाख में सौदा तय हुआ और विधायक पटेल को रंगे हाथों दबोच लिया गया। यह पहला मौका नहीं है जब किसी जनप्रतिनिधि ने सदन की पवित्रता को तार-तार किया है। 22 जुलाई, 2008 को मनमोहन सरकार के विश्वासमत हासिल किए जाने के दौरान लोकसभा में एक करोड़ रुपए के नोटों की गड्डियां लहरा कर सनसनी फैला दी गई थी। नोट लहराने वालों में भाजपा के तीन सांसदों अशोक अर्गल, महावीर भागौरा और फग्गन सिंह कुलस्ते शामिल थे। तीनों सांसदों ने आरोप लगाया था कि समाजवादी पार्टी के तत्कालीन महासचिव अमर सिंह और कांग्रेस अध्यक्ष के राजनीतिक सचिव अहमद पटेल ने विश्वास मत में हिस्सा नहीं लेने के बदले रुपए देने की पेशकश की थी। जबकि इन दोनों ने इन आरोपों से इनकार किया था। इसी तरह राज्यसभा में 5 दिसंबर 2024 को कांग्रेस सांसद की बेंच से नोटों के बंडल मिलने का मामला सामने आया। राज्यसभा के सभापति जगदीप धनखड़ ने इसे गंभीर मामला बताया। साथ ही इसकी जांच कराने की बात कही है। यह सीट तेलंगाना से सांसद अभिषेक मनु सिंघवी की थी। देश के लोकतंत्र पर कालिख पोतने वाली ऐसी घटनाओं से जाहिर है कि कानून बना कर देश चलाने वाले जनप्रतिनिधियो पर आम लोगों का पूरा भरोसा नहीं है। इस भरोसे के दरकने के लिए नेता जिम्मेदार हैं। दरअसल नेता और जनप्रतिनिधी जब तक खुद को कानून से ऊपर समझते रहेंगे तब तक ऐसी शर्मनाक पुनरावृत्ति से देश शर्मसार होता रहेगा।

आलेख

भारत से हज यात्रियों का डिजिटल सशक्तिकरण

सी.पी.एस बख्शी

भारत सरकार ने हाल के वर्षों में समावेशी शासन पर अत्यधिक बल दिया है। एक ऐसा शासन, जो भूगोल, पृष्ठभूमि या विश्वास की परवाह किए बिना हर नागरिक तक पहुंचता हो। यह बात वार्षिक हज यात्रा के संचालन में भी स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। एक नियमित प्रशासनिक क्रियाकलाप से दूर, यह एक विशाल मानवीय, कूटनीतिक और तार्किक संचालन है, जो अनेक राष्ट्रों और संस्कृतियों तक फैला हुआ है। सबका साथ, सबका विकास के लोकाचार से प्रेरित होकर सरकार ने हज प्रबंधन को 21वीं सदी की सेवा वितरण के मॉडल के रूप में परिणत कर दिया है। भारत से हर साल लगभग 1.75 लाख तीर्थयात्री पवित्र हज यात्रा पर जाते हैं। सऊदी अरब साम्राज्य (केएसए) के साथ घनिष्ठ समन्वय में, भारतीय हज समिति के माध्यम से चार महीने तक चलने वाले इतने व्यापक और संवेदनशील ऑपरेशन का प्रबंधन करना राष्ट्रीय समन्वय, कूटनीति और सेवा का एक महत्वपूर्ण नमूना है। अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय के माध्यम से भारत सरकार यह सुनिश्चित कर रही है कि यह आध्यात्मिक यात्रा निर्बाध होने के साथ-साथ गरिमापूर्ण, समावेशी और तकनीकी रूप से सशक्त भी हो। बिना किसी पक्षपात के सभी समुदायों की सेवा करने की अपनी दृढ़ प्रतिबद्धता के साथ, सरकार हज के अनुभव को विदेशों में अब तक किए गए सबसे उन्नत सार्वजनिक सेवा संचालन में से एक के रूप में परिणत कर रही है। हज सुविधा ऐप को भारत सरकार ने 2024 में लॉन्च किया था। इसका उद्देश्य तीर्थयात्रियों के अनुभव को सरल और बेहतर बनाना था। इसके माध्यम से प्रत्येक तीर्थयात्री से जुड़े राज्य हज निरीक्षकों के विवरण के साथ-साथ निकटतम स्वास्थ्य सेवा और परिवहन सुविधाओं सहित आवास, परिवहन और उड़ान संबंधी विवरण जैसी सूचनाओं तक तत्काल पहुंच कायम करना संभव हो रहा है। यह ऐप शिकायत प्रस्तुत करने, उसकी ट्रैकिंग करने, बैगेज ट्रैकिंग, आपातकालीन एसओएस सुविधाएं, आध्यात्मिक सामग्री और तत्काल सूचनाएं प्राप्त करने में भी सक्षम बनाता है। पिछले साल 67,000 से अधिक तीर्थयात्रियों ने ऐप इंस्टॉल किया था, जो स्वीकृति की उच्च दर का संकेत देता है। केएसए में भारत सरकार द्वारा हाजियों के लिए स्थापित प्रशासनिक ढांचे द्वारा 8000 से अधिक शिकायतें और 2000 से अधिक एसओएस उठाए गए और उनका जवाब दिया गया। ऐप की फीडबैक-संचालित डिजाइन तीर्थयात्रा की पूरी अवधि के दौरान निरंतर सुधार की सुविधा देती है। हज-2024 के दौरान ऐप से प्राप्त जानकारी ने 2025 के लिए हज नीति और दिशानिर्देश तैयार करने के लिए महत्वपूर्ण इनपुट के रूप में काम किया। ये डेटा-समर्थित निर्णय भारत सरकार के अपने नागरिकों के लिए उत्तरदायी शासन के मॉडल का उदाहरण हैं। 2024 में इस सफलता को आगे बढ़ाते हुए, सरकार ने अब हज सुविधा ऐप 2.0 लॉन्च किया है। यह हज के पूरे दायरे को कवर करता है और तीर्थयात्रियों के लिए वास्तव में एंड-टू-एंड डिजिटल समाधान तैयार करता है। हज 2.0 में हज यात्रियों के डिजिटल आवेदन, चयन (कुर्रा), प्रतीक्षा सूची का प्रकाशन, भुगतान एकीकरण, अदाही कूपन जारी करने और रद्दीकरण तथा धन वापसी की प्रक्रियाओं से लेकर हज की पूरी प्रक्रिया शामिल है। अपडेट किया गया ऐप बैंकिंग नेटवर्क के साथ सहज एकीकरण प्रदान करता है, जिससे तीर्थयात्री यूपीआई, डेबिट/क्रेडिट कार्ड और इंटरनेट बैंकिंग के माध्यम से भुगतान कर सकते हैं। यात्रा के दौरान सुविधा के लिए तत्काल उड़ान संबंधी सूची और इलेक्ट्रॉनिक बोर्डिंग पास भी प्रदान किए जाते हैं। ऐप को पेडोमीटर सुविधा के साथ संवर्धित किया गया है। इसका उद्देश्य तीर्थयात्रियों में पैदल चलने की आदत डालना है, ताकि उनमें आगे की कठिन यात्रा के लिए आवश्यक सहनशक्ति विकसित हो सके। तीर्थयात्रियों की सहायता के लिए तत्काल मौसम के अपडेट भी जोड़े गए हैं, ताकि तीर्थयात्रियों को जलवायु संबंधी प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करने में मदद मिल सके और साथ ही उन्हें स्वस्थ और हाइड्रेटेड रखा जा सके। भारतीय हज चिकित्सा दल को सर्वश्रेष्ठ माना जाता है और यह मक्का एवं मदीना में हज के दौरान स्थापित क्षेत्रीय अस्पतालों तथा औषधालयों के नेटवर्क के माध्यम से तीर्थयात्रियों को विश्व स्तरीय चिकित्सा सेवाएं प्रदान करता है। एम्बुलेंस का एक नेटवर्क आपातकालीन चिकित्सा सहायता प्रदान करता है।

काशी,अयोध्या की तर्ज होगा बृंदावन के बांके बिहारी मंदिर का विकास मंदिर ट्रस्ट के धन का होगा इस्तेमाल, सर्वोच्च न्यायालय का फैसला.....

अजय दीक्षित

(धर्मक्षेत्र)

आगामी कुछ दिनों बाद श्रद्धालुओं को बृंदावन में बांके बिहारी मंदिर में दर्शन के लिए संघर्ष नहीं करना होगा। उत्तर प्रदेश सरकार की एक याचिका पर सुनवाई कर मंदिर की आसपास की पांच एकड़ भूमि को अधिग्रहण करने की स्वीकृति दी है और साथ में 500 करोड़ रुपए मंदिर ट्रस्ट से खर्च करने की घोषणा को भी सही ठहराया है। उल्लेखनीय है कि उत्तर प्रदेश सरकार ने अलाहाबाद हाइकोर्ट के उस आदेश के खिलाफ अपील की थी जिसमें कहा गया था कि पांच एकड़ भूमि के विकास के लिए मंदिर बृंदावन ट्रस्ट के धन का उपयोग नहीं किया जाए। जनसंख्या दबाव के कारण भारत के प्रमुख मंदिर अव्यवस्था से जूझ रहे हैं जिनमें बृंदावन का सुप्रसिद्ध श्री बांके बिहारी मंदिर भी हैं। बताया जाता है कि भगवान श्री कृष्ण की इस प्रतिष्ठित मूर्ति की प्राचीन काल में संत हरिदास महाराज ने स्थापित किया था।

कहते हैं कि ये 1600 ईसवी के आसपास की बात है। तत्कालीन समय में एक मंदिर भी बनाया गया था जो यमुना नदी के किनारे था तब यहां सघन बन हुआ करता था और उसमें बृंदा के पेड़ थे तो बृंदावन प्रचलित हो गया । संत हरिदास महाराज भगवान श्री कृष्ण के अनन्य भक्त थे और वह बन में पशु पक्षी, शेर भालू, चीते,हिरन, के साथ रहते थे और नित्य भोर यमुना नदी में स्नान करने के बाद श्री कृष्ण की सेवा में जुट जाते थे। तत्कालीन समय में मथुरा में कुछ बस्ती थी । एक भगवान श्री कृष्ण की जन्मभूमि थी जो लगभग महाभारत काल की ही थी। लेकिन समय के साथ बृंदावन में परिवर्तन हुआ। ब्रिटिश काल में 1884 में मंदिर का नए सिरे से निर्माण हुआ ।1970 तक यहां मंदिरों की स्थली ही थी जैसे पागल बाबा का मंदिर, द्वारिका धीश मंदिर आदि। वर्तमान समय में बृंदावन एक तीर्थ स्थलों में से एक है।यहां पूरे भारत से श्रद्धालुओं का आना जाना होता है।एक पर्यटक स्थल बन गया है बल्कि एक सर्किट बन गया है जिसमें गोकुल, दाऊजी, मथुरा, गोवर्धन, बरसाना शामिल है लगभग सौ किलोमीटर की दूरी तक पहुंच गई है।एक अनुमान के मुताबिक मथुरा पूरे देश से पांच करोड़ लोगों प्रतिवर्ष दर्शन करने आते हैं।इस लिए उत्तर प्रदेश सरकार ने राष्ट्रीय हरित प्राधिकरण के निरीक्षण प्रतिवेदन के आधार पर मथुरा और आसपास के क्षेत्रों को नवीनतम प्रारूप में स्थापित करने का निर्णय लिया है। उत्तर प्रदेश सरकार ने केएनबीजी,(कोसी, नंदगांव, बरसाना, गोवर्धन) सड़क परिवहन निर्माण कार्यक्रम भी आयोजित किया गया है, मथुरा से डींग बाया गोवर्धन,तथा गोवर्धन सोख, गोकुल, सड़क परियोजना भी 1000 करोड़ की स्वीकृत की है। दिल्ली, आगरा, भरतपुर, से शनिवार को 5000 वाहन आते हैं और अब बृंदावन की पुलिस अधिकारियों के चुनौती बन गई है ट्रैफिक व्यवस्था। बांके बिहारी मंदिर के पास कुंज गालियां , उनमें बस्तियां हैं। सर्वोच्च न्यायालय ने राष्ट्रीय हरित प्राधिकरण की समिति की सिफारिश पर यह फैसला लिया है कि मंदिर बृंदावन ट्रस्ट के चारों ओर हरित क्षेत्र बनाया जाए और पूरी बस्ती का पुनर्वास कर अन्यत्र शिफ्ट किया जाए। सर्वोच्च न्यायालय के फैसले से उत्तर प्रदेश सरकार अब एक कोरिडोर का निर्माण कार्य शुरू कर सकती है जिसमें पर्यटकों को सुविधा मिल सके। हरित क्षेत्र में पेड़ो को उगाया जाए, हरियाली रहे। भगवान श्री कृष्ण और राधा रानी का दिव्य स्थान बने। भारत सरकार में जब से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आसीन हुए हैं तब से काशी विश्वनाथ मंदिर, अयोध्या में भगवान श्री राम की जन्मभूमि पर भव्य दिव्य मंदिर मंदिर बने हैं। मैने कई दक्षिण भारत के मंदिरों के दर्शन किए हैं, जैसे मदुरई, रामेश्वरम, महाबलिपुरम, जगन्नाथपुरी, कोच्चि, त्रिचनापल्ली, पद्मनाभ मंदिर, द्वारिका,सभी अभी भी व्यवस्थित हैं।जबकि उत्तर भारत के मंदिरों में अव्यवस्था हैचाहे वह केदारनाथ, बद्रीनाथ, गंगोत्री, यमनोत्री, कैला देवी,हो ।एक भगवान श्री कृष्ण की जन्मभूमि थी जो लगभग महाभारत काल की ही थी। लेकिन समय के साथ बृंदावन में परिवर्तन हुआ। ब्रिटिश काल में 1884 में मंदिर का नए सिरे से निर्माण हुआ ।1970 तक यहां मंदिरों की स्थली ही थी जैसे पागल बाबा का मंदिर, द्वारिका धीश मंदिर आदि। वर्तमान समय में बृंदावन एक तीर्थ स्थलों में से एक है।यहां पूरे भारत से श्रद्धालुओं का आना जाना होता है।एक पर्यटक स्थल बन गया है बल्कि एक सर्किट बन गया है जिसमें गोकुल, दाऊजी, मथुरा, गोवर्धन, बरसाना शामिल है लगभग सौ किलोमीटर की दूरी तक पहुंच गई है।एक अनुमान के मुताबिक मथुरा पूरे देश से पांच करोड़ लोगों प्रतिवर्ष दर्शन करने आते हैं। आजादी के 77 वर्ष बाद ये कार्य शुरू हो रहे हैं।जबकि विश्व में भारत ही ऐसा देश है जिसमें सनातन धर्म के मंदिर है।नेपाल में यद्यपि पशुपतिनाथ मंदिर है ।मगर व्यवस्था वहां भी ठीक नहीं है। वैसे कहना नहीं चाहिए लेकिन कांग्रेस सरकार रहते हिन्दुओं के तीर्थ स्थलों पर कोई कार्य नहीं किया गया। जबकि भारत में 80 फीसदी से अधिक आबादी हिंदुओं की है। बताया जाता है कि सोमनाथ मंदिर का जीर्णोद्धार प्रथम राष्ट्रपति स्व राजेंद्र प्रसाद ने कराया था। लेकिन स्व जवाहर लाल नेहरू राजेंद्रजी के इस निर्णय से सहमत नहीं थे। तत्कालीन प्रधानमंत्री स्व जवाहर लाल नेहरू ने कहा था कि हे इस एक्सीडेंटल हिन्दू । नेहरू नहीं चाहते थे कि डॉ राजेंद प्रसाद , सर्वोच्च पद पर रहते किसी मंदिर का पुनर्वास कराए।

ऑपरेशन सिंदूर से बदली नीतियों का वैश्विक संकेत

उमेश चतुर्वेदी

ऑपरेशन सिंदूर के तहत चली महज चार दिनों की कार्रवाई के बाद संघर्ष विराम होने को लेकर सोशल मीडिया पर हंगामा है। बड़े वर्ग का मानना है कि पाकिस्तानी उकसावे के बाद जारी भारतीय कार्रवाई से पाकिस्तान की गर्दन भारतीय पैरों के नीचे आ गई थी। बीती छह मई की देर रात को पाकिस्तान स्थित आतंकी ठिकानों पर गरजती मिसाइलों ने दुनिया को कई संदेश दिए हैं। भारतीय कार्रवाई का पहला संदेश यह है कि अब ना सिर्फ भारत, बल्कि उसकी विदेश नीति भी बदल चुकी है। अब अगर भारत का बेगुनाह खून बहेगा तो खून बहाने वाले नापाक हाथों को भारत कहीं से भी ढूंढ़ निकालेगा और उसकी कब्र खोदने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ेगा। पाकिस्तानी हमले के सफल प्रतिकार ने स्वदेशी हथियार तकनीक की खुद-ब-खुद ब्रांडिंग हो गई। पहलगाम के खिलाफ हुई कार्रवाई के बाद भारतीय राजनीति और राजनय को देखने का दुनिया का नजरिया बदलना तय है। ऑपरेशन सिंदूर के तहत चली महज चार दिनों की कार्रवाई के बाद संघर्ष विराम होने को लेकर सोशल मीडिया पर हंगामा है। बड़े वर्ग का मानना है कि पाकिस्तानी उकसावे के बाद जारी भारतीय कार्रवाई से पाकिस्तान की गर्दन भारतीय पैरों के नीचे आ गई थी। लिहाजा जरूरी था कि उसकी कमर तोड़ दी जाए। भारत के एक बड़े वर्ग को उम्मीद थी कि मौजूदा कार्रवाई के जरिए पाकिस्तान के कब्जे वाला कश्मीर भी भारत का हिस्सा होगा। बहुत लोगों तो लगता था कि अगर ऑपरेशन सिंदूर जारी रहता तो बलूचिस्तान के लिए पाकिस्तान से अलग होने की राह आसान हो जाती। इस लिहाज देखें तो भारत का लोकमानस पाकिस्तान के खिलाफ कार्रवाई जारी रखने के पक्ष में था या कह सकते हैं कि अब भी है। लेकिन ध्यान रखना होगा कि युद्ध कभी-भी जनमत के दबाव में लड़े जाते। आधुनिक दौर में जब लड़ाई और हथियारों में तकनीक की पहुंच और पैठ बढ़ी है, सिर्फ जनमत के दबाव में युद्ध लड़ना ताकतवर से ताकतवर देश के लिए संभव नहीं। इस बीच संघर्ष विराम पर राष्ट्रपति ट्रंप के उतावले दावों ने संघर्ष विराम की हकीकत की जिज्ञासा बढ़ा दी है। लोग यह जानने के लिए उतावले हैं कि संघर्ष विराम की असल वजह आखिर क्या है? वैसे ऐसी संवेदनशील जानकारियां शायद ही कभी बाहर आ पाती हैं। इसलिए संघर्ष विराम के पीछे की असलियत को आने वाला इतिहास ही जान पाएगा। जिस तरह पाकिस्तान के एयरबेस समेत तमाम सैनिक ठिकानों को भारतीय सेना ने निशाना बनाया है, उससे बिलबिलाकर वह अमेरिका की शरण में पहुंचा और युद्ध विराम कराने के लिए गुहार लगाने लगा। यह जानकारी कुछ अमेरिकी अखबारों के पन्नों पर आ चुकी है। बहरहाल ऑपरेशन सिंदूर ने संदेश दिया है कि अब भारत रणनीति के तहत जवाब नहीं देगा, बल्कि अपने नागरिकों पर हमले, संप्रभुता और अखंडता पर चोट की हालत में वह निर्णायक कार्रवाई करेगा। इस ऑपरेशन ने एक लक्ष्मण रेखा खींच दी है, जिसे नजरंदाज करना पाकिस्तान के लिए अब संभव नहीं होगा। उसे अब पता चल गया है कि राजनीति और सेना पोषित आतंकवाद और आतंक की नीति को सीधा और करारा जवाब मिलेगा। भारत पिछले करीब साढ़े चार दशक से आतंकवाद को झेल रहा है। पाकिस्तान पहले पंजाब को आतंकवादी आग से झुलसाता रहा तो बाद के दिनों में जम्मू-कश्मीर में खून बहाता रहा। पाक परस्त आतंकी अगर भारतीय संसद, वाराणसी, जयपुर, मुंबई आदि जगहों पर बेगुनाह खून बहाने में कामयाब रहे तो इसकी बड़ी वजह रही पाकिस्तान की आतंकवाद केंद्रित नीति। ऑपरेशन सिंदूर के जरिए भारत ने संदेश दिया है कि अब यह नीति नहीं चलेगी। इस बार आतंकवादियों और उनके सरपरस्तों को जिस तरह भारत ने सफल निशाना बनाया, उसके बाद अब आतंकी कार्रवाई करने से पहले सौ बार सोचने को मजबूर होंगे। अब उन्हें सोचना होगा कि आतंक फैलाकर वे दूसरे देश की सीमा में जाकर चैन से नहीं रह पाएंगे। भारत की सेना उन्हें उनके घर में ही मारेगी। ऑपरेशन सिंदूर पर संघर्ष विराम के बाद प्रधानमंत्री मोदी ने राष्ट्र के नाम संबोधन में दो-तीन बड़ी बातें कहीं। पहला यह कि खून और पानी साथ नहीं बहेगा। यानी सिंधु जल समझौता स्थगित ही रहेगा। उन्होंने यह भी कहा कि टेरर यानी आतंक और ट्रेड यानी कारोबार एक साथ नहीं चलेगा। यानी आतंक फैलाने वाले देशों के साथ भारत ना तो कारोबार करेगा और न ही उन्हें कोई विशेष दर्जा देगा। सवाल यह है कि भारत की इस बदली नीति की वजह क्या है? भारत की इस बदली नीति की वजह है, उसकी बढ़ती आर्थिक ताकत। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के लिहाज से भारत दुनिया की चौथी बड़ी अर्थव्यवस्था बनने जा रहा है। जल्द ही जापान की अर्थव्यवस्था को वह पीछे छोड़ देगा। भारत की स्वदेशी हथियार तकनीक, चाहे आकाश मिसाइल हो या रूस के सहयोग से विकसित ब्रह्मोस, उन्होंने अपनी अचूक मारक क्षमता दिखाई है। एक तरफ देश आर्थिक ताकत बढ़ाता जा रहा है तो दूसरी तरफसैनिक ताकत भी बढ़ रही है। शांति के लिए मजबूत आर्थिक और सैनिक ताकत जरूरी होती है। कहना न होगा कि आर्थिक और सामरिक ताकत की वजह से भारत अपनी नीति बदलता हुआ दिख रहा है। भारत की अब तक की घोषित नीति रही है कि वह किसी दूसरे देश के मामले में न हस्तक्षेप करेगा ।

ब्र. राकेश जी मड़ावरा बने क्षुल्लक विप्रज्ञसागर जी महाराज

मुनि श्री सुप्रभसागर जी महाराज ने गुरु आज्ञा एवं निर्देशन में प्रथम क्षुल्लक दीक्षा प्रदान की

श्रावक की उत्कृष्ट दशा है क्षुल्लक दीक्षा : आचार्य श्री विशुद्धसागर जी

ललितपुर (विश्व परिवार)। मड़ावरा कस्बा निवासी ब्र. राकेश जैन चौधरी को भव्य क्षुल्लक दीक्षा पट्टाचार्य 108 विशुद्धसागर जी महाराज के निर्देशन में मुनि श्री सुप्रभसागर जी ने इंदौर में भव्य दीक्षा समारोह में प्रदान की। विशाल संघ के सान्निध्य में प्रथमबार श्रमणरत्न सुप्रभसागर जी महाराज ने इंदौर में भव्य दीक्षा दी। इस मौके पर अनेक आचार्य एवं विशाल संघ का सान्निध्य रहा। उत्कर्ष समूह भारत (मुनि श्री सुप्रभसागर जी की प्रेरणा से स्थापित) के निर्देशक डॉ. सुनील संचय ने बताया कि राकेश चाचा श्रमणाचार्य 108 विशुद्धसागर जी महाराज की आज्ञा एवं निर्देशन से 2019 से मुनि श्री सुप्रभसागर जी महाराज संघ में साधनारत थे। अब उन्हीं के कर कमलों से दीक्षा सम्पन्न हुई है जिससे मड़ावरा जैन समाज में भारी हर्ष है, नगर से एक और गौरव जुड़ गया है।

दीक्षा विधि के मंत्रोच्चार गुरुवर पट्टाचार्य श्री विशुद्धसागर जी के श्रीमुख से निःसृत हुए।

दीक्षा पूर्व मंगल चौक पूरण ब्र. राकेश जी की गृहस्थावस्था की बहुएं श्रीमती प्रतीक्षा, श्रीमती प्रीति जैन के साथ ब्र. सुरभि दीदी ने पूर्ण की। आचार्य, उपाध्याय, गणिनी, मुनि, आर्यिका, क्षुल्लक-क्षुल्लिका आदि चतुर्विध संघ के सान्निध्य में दीक्षा सम्पन्न हुई। इस मौके पर परम पूज्य पट्टाचार्य श्री विशुद्धसागर जी ने कहा कि मां जैसी ममता और पिता जैसा दुलार जहाँ एक साथ मिले, उसका नाम गुरु है।

दीक्षार्थी को सम्बोधन देते हुए आचार्यश्री ने कहा कि श्रावक की उत्कृष्ट दशा है यह क्षुल्लक दीक्षा जिसमें श्रावक परिग्रह त्याग, अनुमति त्याग, उद्दिष्ट भोजन त्याग रूप ग्यारह प्रतिमाओं को धारण करता है। शिष्य को गुरु आज्ञा प्रमाण होना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि जैसे व्यक्ति को नाती-पोते की प्राप्ति होने पर खुशी होती है वैसे ही गुरु को प्रशिष्य की प्राप्ति पर खुशी होती है।

मुनि श्री सुप्रभसागर जी ने इस अवसर पर कहा कि गुरु की उदारता का ही परिणाम है जो गुरु आज्ञा एवं निर्देशन में यह दीक्षा सम्पन्न हो रही है। जैसे आचार्य श्री ज्ञानसागर जी, आचार्य श्री विरागसागर जी ने स्वसाक्षी में अपने शिष्य को वृद्धिमान किया था वैसे ही आचार्य श्री विशुद्धसागर जी ने उदारता का महान उदाहरण प्रस्तुत किया है।

धर्म के माता-पिता बनने का सौभाग्य धर्मचंद जैन, श्रीमती नरेंद्र कुमारी (सौंरई) वालों को प्राप्त हुआ है। दीक्षा स्थल बास्केटबॉल सभागृह इंदौर में भव्य दीक्षा सम्पन्न हुई जिसमें भारत के विभिन्न स्थानों से श्रद्धालुओं के साथ ही मड़ावरा नगर से बड़ी संख्या में श्रद्धालु सम्मिलित हुए। उल्लेखनीय है कि ब्र. राकेश जी मड़ावरा शुरू से ही धार्मिक और सामाजिक क्षेत्र में सक्रिय रहे हैं। 12 वर्षों तक अतिशय क्षेत्र गिरार जी के महामंत्री रहे हैं।

पट्टाचार्य श्री विशुद्ध सागर महाराज पुण्य वर्गणाओ के प्रभाव से रूर साधूओ की नगरी के नाम से संपूर्ण भारत में प्रसिद्ध है : मुनी श्री सिद्धसागर जी महाराज

धुले (विश्व परिवार)। विशुद्धसागर महाराज जी के शिष्य सारस्वत सागर जी, जयंत सागर जी, सिद्ध सागर जी और श्रुतसागर महाराज जी का इंदौर से नांद्रे की ओर विहार शुरु है। 500 कि.मी की दुरी शेष हैं। विशुद्धसागर महाराज जी के शिष्य, सिद्ध सागर महाराज जी ने कहा की समय परिणमनशील है, काल परिवर्तित होते है और धर्म सार्थी के रुप में महान पुरुष धर्मस्थ को प्रवाहित करते रहते है। इनकी पुण्य वर्गणाओ से शितील हुआ धर्मरथ गती प्राप्त करता है और अनेको जीव चल पडते है भगवत्ता प्राप्त करने के लिए।

सम्प्रति मे ऐसे ही महापुरुष आचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज ने आकाश सम धर्म को विस्तार प्रदान किया। गुरुदेव का जन्म मध्य प्रदेश के भिंड जिला के रूर ग्राम में हुआ। यह वही भिंड जिला जिसे कभी डाकुओ के शहर के नाम से जाना जाता था। परंतु जब से आचार्य भगवन का जन्म हुआ उनकी पुण्य वर्गणाओ के प्रभाव से अब यह शहर साधूओ की नगरी के नाम से संपुर्ण भारत में प्रसिद्ध है। इस नगर से अनेको मुनी, आर्यिका और व्रति बन चुके है। मेरा सौभाग्य रहा जिस ग्राम रूर में जिस परिवार में आचार्य भगवन श्री विशुद्धसागर महाराज जी का जन्म हुआ उसी घर में मेरा भी जन्म हुआ।

बुंदेलखंड में कहते है पुत के लक्षण पालन में दिख जाते है। आचार्य श्री बचपन से ही धार्मिक प्रवृत्ती के रहे, घर में रहते थे तब ही अल्प आयु में समयसार जैसे महान ग्रंथ का स्वाध्याय करते थे।

आचार्य श्री किवमाता को गुरुजी के जन्म के पहले क्षेत्र वंदना करने के भाव आते थे। स्वप्न में मुनीराज के दर्शन होते थे। यही महान आत्मा के आगमन के शुभ चिन्ह कहलाता है।

16 वर्ष कि अल्प आयु में ही गणाचार्य भगवन विरागसागर महाराज से दिक्षा धारण कर अध्यात्म के सरोवर में प्रवेश कर ऐसी डुबकी लगाई कि फिर कभी आचार्य श्री ने पीछे नहीं देखा। समयसार, प्रवचनसार जैसे महान ग्रंथो पर भव्य जीवो के लिए देशना प्रदान कर जिनशासन को अध्यात्म सरोवर में डुबकी लगवा दी, स्वयं अध्यात्म योगी विशेषण से सुशोभीत हुए।

वर्तमान काल में नमोस्तु शासन को जयवंत करते हुए आचार्य श्री ने हजारो युवाओं को धर्म मार्ग पर लागाया। सैकडो को व्रती बनाया और 10 युवाओ को जैनेश्वरी दिक्षा प्रदान कर जिनशासन को वर्धमान किया।

गणाचार्य विराग सागर जी ने अपने 550 शिष्यों को आपकी योग्यता देखकर अपनी समाधी के पूर्व आपको अपना पट्टाचार्य पद नियुक्त किया। यही मंगल भावना आप स्वास्थ्य रहे, आपकी आयु दीर्घ हो, आप ऐसे ही नमोस्तु शासन को जयवंत करें। जिस प्रकार घर कि शोभा माँ से होती है, उसी प्रकार इस जिनशासन कि शोभा गुरुवर आपसे है। नमोस्तु भगवन, नमोस्तु। -**अभिषेक अशोक पाटील**

संक्षिप्त समाचार

सुशासन तिहार समाधान शिविर के तहत नगर पंचायत पाटन में समाधान शिविर आयोजित की गई

पाटन (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ शासन द्वारा चलाए जा रहे सुशासन तिहार समाधान के तहत आज 21/05/2025 को नगर पंचायत पाटन के वार्ड 15 अटारी में वार्डो का समाधान शिविर आयोजित की गई जिसमें नगरवासी अपनी जन समस्या, मांग, शिकायत हेतु आवेदन किए एवं संबंधित विभाग द्वारा त्वरित समाधान भी किया गया। राशन कार्ड, ड्राइविंग लाइसेंस, आदि का वितरण किया गया, जिसमें शिक्षा विभाग, परिवहन विभाग, समाज कल्याण, ऊर्जा विभाग, कृषि विभाग, सहकारिता विभाग, पशु चिकित्सा विभाग, श्रम विभाग, आयुष विभाग, पुलिस विभाग, महिला एवं बाल विकास विभाग, स्वास्थ्य विभाग, वन विभाग, खनिज विभाग, लोक निर्माण विभाग, विद्युत विभाग राजस्व विभाग, खाद्य विभाग, नगरीय प्रशासन विभाग शामिल हुई। शिविर में कुल 538 आवेदन प्राप्त हुए एवं 53 का निराकरण त्वरित किया गया। शिविर में प्रमुख रूप से नगर पंचायत पाटन अध्यक्ष योगेश निक्की भाले, नगर पंचायत पाटन ष्द्धश्च हेमंत वर्मा, पाटन मंडल अध्यक्ष श्रीमति रानी बंछोर जी, सभापति केवल देवांगन, पार्षद देवेंद्र ठाकुर, पार्षद श्रीमति अन्नपूर्णा पटेल, पार्षद श्रीमति संगीता धुरंधर, पार्षद दीपक यादव, पार्षद गुनीराम कौशिक, केशव बंछोर, प्रकाश बिजौरा, बाबा वर्मा सहित नगर पंचायत पाटन के समस्त अधिकारी, कर्मचारी गण उपस्थित थे।

आंगनबाड़ियों में घटिया सामान खरीदी करने वालो को बचाने के लिए जांच कमेटी बनाई गई

रायपुर (विसं)। महिला एवं बाल विकास मंत्री लक्ष्मी राजवाड़ों के द्वारा आंगनबाड़ियों में घटिया सामान खरीदी के लिए बनाई गई जांच कमेटी को बचाव कमेटी बताते हुए प्रदेश कांग्रेस के वरिष्ठ प्रवक्ता धनंजय सिंह ठाकुर ने कहा कि महिला एवं बाल विकास विभाग में सप्लायरों से मोटी रकम लेकर 40 करोड रुपए की घटिया सामानों की खरीदी की और उन्हें आंगनबाड़ियों में सप्लाई किया गया, जिसका पर्दाफ़ास होने के बाद अब मंत्री पूरे मामले की जांच कराकर कार्यवाही की बात कर रहे हैं असल में मंत्री के द्वारा बनाई गई जांच कमेटी मामले में लीपापोती करेगी और घटिया सामान खरीदी और सप्लाई करने वालों को बचाएगी। मंत्री के बिना संरक्षण के घटिया समानों की खरीदी नहीं हो सकती। समान सप्लायरों से बड़ा लेनदेन हुआ है अब पोल खुलने के बाद कार्यवाही की बात कही जा रही है।

जिसके भीतर हृदय होता है, चेतना होती है वह दूसरों को कष्ट देकर उन्नति नहीं चाहता : विनोद जैन आचार्य

रामगंजमंडी (विश्व परिवार)। विगत 17 मई से रामगंजमंडी नगर में ज्ञान की गंगा बह रही है। 17 मई से 26 मई तक धार्मिक अध्ययन शिविर चल रहा है। सुबह की बेला में श्री जी का अभिषेक शांतिधारा होती है जिसमें युवाओं का उत्साह देखते बनता है बच्चों को भी धार्मिक अध्ययन करने में खासा उत्साह देखने को मिल रहा है। सुबह की बेला में बच्चों को बालबोध 1 एवम 2 का अध्ययन कराया जा रहा है। शिविर का निर्देशन कर रहे हैं श्री प्रशांत जैन आचार्य आकाश जैन आचार्य ने बताया कि बच्चों को एवं समाज को धर्म से जोड़े रखने एवं धर्म का ज्ञान हो इस हेतु यह शिविर प्रतिवर्ष लगाया जाता है इसके साथ ही संध्या बेला में बच्चों को शिक्षाप्रद खेल प्रतियोगिताएं एवं क्राफ्ट सिखाया जाता है। उन्होंने बताया कि मंगलवार को छोटे बच्चों की रनिंग रिले प्रतियोगिता करवाई गई जिसमें स्तवन भजन की धुनों पर बच्चों ने भक्ति भी की।

मंगलवार की बेला में आचार्य श्री विद्यासागर महाराज की अमूर्त जीवंत कृति मूक माटी महाकाव्य पर अपना उद्बोधन देते हुए कहा कि माटी दूसरों को पीड़ा देकर यात्रा नहीं करनी चाहती।

विनोद भैया जी ने कहा कि विषय कषाय में लिपटा हुआ व्यक्ति पर की चिंता नहीं करता और पर की चिंता पर दुखी नहीं होता। जिसके भीतर हृदय होता है चेतना होती है उसे दूसरों को कष्ट देने में पीड़ा होती है वह नहीं चाहता मेरी उन्नति किसी की अवनति के माध्यम से हो। व्यवहारिक दृष्टिकोण बताते हुए भैया जी ने कहा कि सज्जन पुरुष अधिकार का प्रयोग पहले बातों से करता है बाद में हाथों से करता है।

अवैध गतिविधियों पर सख्त कार्यवाही और जनसमस्याओं का त्वरित समाधान ही सुशासन की प्राथमिक पहचान : गुरु खुशवंत साहेब जी

ग्राम बहनाकाड़ी में 'सुशासन तिहार' के अंतर्गत समाधान शिविर का आयोजन

आरंग/मंदिर हसौद/रायपुर (विश्व परिवार)। आज आरंग विधानसभा क्षेत्र के ग्राम पंचायत बहनाकाडी में मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय जी के नेतृत्व में प्रदेशभर में आयोजित 'सुशासन तिहार' के तहत समाधान शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में मुख्य अतिथि के रूप में आरंग विधायक एवं कैबिनेट मंत्री दर्जा प्राप्त, अनुसूचित जाति विकास प्राधिकरण छत्तीसगढ़ शासन के उपाध्यक्ष गुरु श्री खुशवंत साहेब जी की गरिमामयी उपस्थिति रही।

शिविर में क्षेत्रवासियों की बड़ी उपस्थिति देखी गई। जिला कलेक्टर, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक (SSP), विभिन्न विभागों के अधिकारी-कर्मचारी, भारतीय जनता पार्टी के पदाधिकारी, कार्यकर्ता, जनप्रतिनिधि एवं स्थानीय ग्रामीणजन भी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। शिविर में मौके पर ही मनरेगा जॉब कार्ड, ऋण पुस्तिका, राशन कार्ड, ड्राइविंग लाइसेंस, ट्राइसाईकिल, व्हीलचेयर, किसानों के लिए खाद, स्प्रेयर आदि का वितरण किया गया। इससे बड़ी संख्या में लोगों को तात्कालिक लाभ प्राप्त हुआ और शासन की योजनाओं के प्रति विश्वास भी मजबूत हुआ।

समाधान शिविर में विभिन्न विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे और जनसुनवाई के माध्यम से कई समस्याओं का मौके पर ही समाधान किया गया।

जनसमस्याओं के सुनवाई के दौरान गुरु साहेब जी को ग्रामीणों द्वारा गांव में अवैध शराब बिक्री की शिकायत दी गई, जिस पर उन्होंने आबकारी विभाग को तत्काल फटकार लगाते हुए सख्त निर्देश जारी किए। उन्होंने स्पष्ट कहा—अवैध शराब बेचने वालों के खिलाफ तुरंत कार्रवाई करते हुए उन्हें जेल में डाला जाए। हमारे क्षेत्र में किसी भी प्रकार की गैरकानूनी गतिविधियां बर्दाश्त नहीं की जाएंगी।

व्यापारी कल्याण बोर्ड की छठवीं बैठक में शामिल हुए अमर पारवानी, अध्यक्ष सुनील सिंघी के साथ आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने लिया संकल्प

नई दिल्ली (विश्व परिवार)। भारत सरकार के उद्योग संवर्धन और आंतरिक व्यापार विभाग (क्व्प्प्ज्) द्वारा गठित राष्ट्रीय व्यापारी कल्याण बोर्ड की छठवीं बैठक का आयोजन वाणिज्य भवन, नई दिल्ली में किया गया। बैठक की अध्यक्षता बोर्ड के अध्यक्ष श्री सुनील सिंघी जी ने की। इस महत्वपूर्ण बैठक में राष्ट्रीय व्यापारी कल्याण बोर्ड के सदस्य एवं वरिष्ठ व्यापारी नेता श्री अमर पारवानी ने सक्रिय रूप से भाग लिया और व्यापारियों की समस्याओं, समाधान और संभावनाओं पर अपने विचार प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किए।

बैठक में देशभर के लगभग 20 राज्यों से व्यापारी प्रतिनिधि तथा 9 मंत्रालयों एवं विभागों के पदेन प्रतिनिधि (संयुक्त सचिव) उपस्थित रहे। यह बोर्ड देश की स्वतंत्रता के बाद व्यापारियों के लिए केंद्र सरकार द्वारा स्थापित पहला राष्ट्रीय मंच है, जिसका उद्देश्य व्यापारियों एवं उनके कर्मचारियों के कल्याण हेतु कार्य करना है। यह श्रमेव जयते की भावना को मूर्त रूप देने की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम है। श्री अमर पारवानी ने बताया कि बैठक में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में प्रस्तुत बजट 2025-26 की सर्वत्र सराहना की गई। बजट को समावेशी, लाभकारी और विकसित भारत के संकल्प को साकार करने वाला बताया गया। बैठक में क्रेडिट लिमिट को 5 करोड़ से बढ़ाकर 10 करोड़ किए जाने तथा 12 लाख रुपये तक की आय को टैक्स फ्री किए जाने जैसे निर्णयों का स्वागत करते हुए केंद्र सरकार के प्रति आभार व्यक्त किया गया।

बैठक में ऑपरेशन सिंदूर की सफलता पर भारतीय सेना की बहादुरी और भारत की रक्षा नीति की भी सराहना की गई। इस अवसर पर बोर्ड अध्यक्ष श्री सुनील सिंघी के नेतृत्व में 20 बिंदुओं पर आधारित आत्मनिर्भरता का संकल्प लिया गया। श्री पारवानी ने बताया कि यह संकल्प भारत को न केवल आर्थिक रूप से बल्कि सामाजिक और सामरिक दृष्टि से भी सशक्त बनाएगा। उन्होंने कहा कि आने वाले समय में छत्तीसगढ़ सहित पूरे देश में व्यापारी संगठनों द्वारा विशेष कार्यक्रम आयोजित कर वोकल फॉर लोकल को प्रोत्साहन देने एवं दुश्मन देशों के उत्पादों के बहिष्कार का संकल्प व्यापक रूप से व्यापारियों और आमजन को दिलाया जाएगा। श्री अमर पारवानी ने आगे कहा कि भारत अब रक्षा आयातक नहीं, बल्कि रक्षा उत्पादों का निर्यातक देश बन चुका है। पिछले 11 वर्षों में रक्षा निर्यात में 34 गुना वृद्धि हुई है और भारत आज लगभग 100 देशों को रक्षा उत्पाद भेज रहा है। इसमें देश के व्यापारियों और उद्योगपतियों की भूमिका भी उल्लेखनीय रही है।

बैठक में पारित 20 बिंदुओं में मुख्य रूप से भारतीय उत्पादों को प्राथमिकता, स्थानीय कारीगरों के सामान को बढ़ावा, भारतीय आभूषण, वस्त्र, फल-फूल, मिट्टी के बर्तन, कालीन, पर्यटन, स्वास्थ्य सेवा, डिजिटल इंडिया, स्किल इंडिया, स्वच्छ भारत, वन डिस्ट्रिक्ट वन प्रोडक्ट जैसे अभियान शामिल हैं। सभी सदस्यों ने इन बिंदुओं को अपने जीवन में आत्मसात करने तथा व्यापक स्तर पर जन-जागरण चलाने का भी संकल्प लिया।

आहार दान संसार की सर्व श्रेष्ठ प्रक्रिया है : मुनि श्री जयकीर्ति जी

दस दिवसीय जैन रामायण कथा का चौथा दिन-सीता का हरण प्रसंग सुनकर श्रद्धालु हुए भावुक-आंखों से निकले आंसू

जयपुर (विश्व परिवार)। राजस्थान जैन युवा महासभा, जैन कनेक्ट, दुर्गापुरा जैन मंदिर ट्रस्ट एवं महिला मंडल दुर्गापुरा के संयुक्त तत्वावधान में दिगम्बर जैन मुनि जयकीर्ति के मुखारबिंद से गुलाबी नगरी जयपुर की पुण्य धरा पर पहली बार दुर्गापुरा के श्री दिगम्बर जैन मंदिर चन्द्र प्रभजी में दस दिवसीय जैन रामायण कथा का आयोजन चल रहा है। कथा में चौथे दिन मुनि जयकीर्ति महाराज ने रावण का जन्म, युवा अवस्था का वर्णन, घोर तपस्या, रावण द्वारा सीता हरण, जटायु द्वारा सीता रक्षा में प्राण त्यागना, राम का कर्ण विलाप एवं राम द्वारा जिन भक्ति दर्शन के प्रसंगों पर प्रकाश डाला। सीता हरण का प्रसंग सुनकर श्रोता भावुक हो उठे। कई महिलाओं की आंखों से अश्रु बहने लगे।

राजस्थान जैन युवा महासभा के प्रदेश अध्यक्ष प्रदीप जैन एवं प्रदेश महामंत्री विनोद जैन कोटखावदा ने बताया कि रविवार, 18 मई से मंगलवार, 27 मई, 2025 तक प्राचीन जैन ग्रन्थ 'पद्मपुराण' पर आधारित जैन रामायण कथा के भव्य संगीतमय आयोजन मे चौथे दिन बुधवार को भगवान चन्द्र प्रभू के चित्र का अनावरण एवं दीप प्रज्जवलन समाज श्रेष्ठी जी सी जैन, पं. चन्दन मल अजमेरा, विनोद जैन कोटखावदा, ज्ञान चन्द झांझरी, सुनील संघी, नरेश बाकलीवाल एवं ने किया। ब्रह्मचारिणी पल्लवी दीदी द्वारा मंगलाचरण प्रस्तुत किया। मुनि श्री जयकीर्ति महाराज के पाद पक्षालन समाज श्रेष्ठी अशोक-नीलू गंगवाल महारानी फार्म एवं सुशीला देवी पोद्दार नैनवा वालों ने किया।

इस मौके पर आयोजन समिति की ओर से प्रदीप जैन, विनोद जैन कोटखावदा, सुभाष बज चेतन जैन निमोडिया, रुपल गंगवाल, हिमांशु बज, मनीष सोगानी, कमलेश जैन, प्रकाश चांदवाड, सुनील संघी, नरेश बाकलीवाल, राजेन्द्र काला, रितु चांदवाड, रेखा लुहाड़िया, रानी सोगानी, रेखा पाटनी, प्रेम देवी बाकलीवाल आदि ने सभी अतिथियों का स्वागत एवं सम्मान किया। तत्पश्चात कथा के मुख्य श्रोता राजा श्रेणिक के रुप में जैन कनेक्ट परिवार के सदस्यों का गाजों बाजों के साथ सभागार में जयकारों के बीच आगमन हुआ।

राजा श्रेणिक परिवार परिवार द्वारा मुनि श्री को जिनवाणी भेट कर आशीर्वाद प्राप्त किया। तत्पश्चात राजा श्रेणिक बने जैन कनेक्ट के अंकुर-करिश्मा पाटनी एवं राहुल-दीपिका गोधा, राज कुमार सेठी ने मुनि श्री से प्रश्न किया कि हे गुरुवर सीता माता का हरण कैसे हुआ ? मुनि श्री द्वारा समाधान के रुप में रविषेणाचार्य द्वारा रचित प्राचीन जैन ग्रन्थ 'पद्मपुराण' में उल्लेखानुसार जैन रामायण कथा का वाचन प्रारम्भ किया।

गुरुदेव के मुखारविंद से राम कथा के चौथे दिन वैराग्य के बीज बोने वाली राम कथा, सीता का हरण और गुरुदेव का अदभुत वाचन देखने लायक था। आहार दान का अचिंत्य फल गुरुदेव ने बताया.. दाता को उत्तम भागों को प्रदान करने वाला है.पात्रदान . एवं पात्र को वैराग्य, तप, ज्ञान, संयम मोक्ष का रत्नत्रय का दान देने वाला है। इस आहार दान से राम लक्ष्मण और सीता को एक उत्कृष्ट और वैभवशाली रथ की प्राप्ति होना, दंडक वन में लक्ष्मण को सूर्यह्रास खड्ग की प्राप्त होना रावण का पणजन्म, बाल्यावस्था, युवावस्था का वर्णन, रावण भानुकर्ण एवं विभीषण तीनों भाई घनघोर वन में घोर तपस्या करके धन, वैभव और विधाओं को प्राप्त करते हैं

कलिंगा विश्वविद्यालय में एबीसी/एनएडी पोर्टल पर छात्रों के क्रेडिट डेटा अपलोड करने पर कार्यशाला का आयोजन सम्पन्न

नया रायपुर (विश्व परिवार)। डिजी लॉकर, डिजिटल इंडिया कार्यक्रम के तहत इलेक्ट्रॉनिक्स और आईटी मंत्रालय (MeitY) की एक प्रमुख पहल है। डिजी लॉकर का उद्देश्य नागरिकों के डिजिटल दस्तावेज़ वॉलेट में प्रामाणिक डिजिटल दस्तावेज़ों तक पहुँच प्रदान करके नागरिकों का 'डिजिटल सशक्तिकरण' करना है।

APAAR आईडी डिजिलॉकर के लिए एक लिंक के रूप में कार्य करती है, जो एक ऑनलाइन संग्रह है, जहां छात्र परीक्षा परिणाम जैसे आवश्यक दस्तावेजों को सुरक्षित रूप से संग्रहीत करते हैं। APAAR आईडी के माध्यम से अकादमिक बैंक ऑफ क्रेडिट्स (एबीसी) से जुड़ा यह संस्थान राष्ट्रीय शैक्षणिक डिपॉजिटरी के माध्यम से संस्थानों से शैक्षणिक क्रेडिट प्राप्त करता है। इससे प्रवेश या नौकरी के आवेदनों के लिए प्रमाणीकरण आसान हो जाता है, तथा शैक्षणिक अभिलेखों का सत्यापन सरल हो जाता है।

उच्च शिक्षा विभाग, छत्तीसगढ़ सरकार ने कलिंगा विश्वविद्यालय के सहयोग से 21-05-2025 को कलिंगा विश्वविद्यालय, नया रायपुर में छत्तीसगढ़ के सभी सरकारी और निजी विश्वविद्यालयों और स्वायत्त कॉलेजों के लिए अकादमिक बैंक ऑफ क्रेडिट (एबीसी) पर डेटा अपलोड करने पर एक कार्यशाला का सफलतापूर्वक आयोजन इस कार्यक्रम में राज्य भर से शिक्षाविदों ने भाग लिया।

कार्यक्रम की शुरुआत अतिथियों और गणमान्य व्यक्तियों द्वारा पारंपरिक दीप प्रज्ज्वलन समारोह के साथ हुई। कलिंगा विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. आर. श्रीधर ने स्वागत भाषण दिया। उच्च शिक्षा विभाग के संयुक्त निदेशक डॉ. जी. ए. घनश्याम ने कार्यशाला का अवलोकन प्रस्तुत किया। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) की अवर सचिव श्रीमती नीरा चोपड़ा ने भी सभा को संबोधित किया। छत्तीसगढ़ के राज्य समन्वयक श्री रोहित सिंह और डिजिलॉकर-एनएडी और एबीसी पहल के लिए तकनीकी सहायता विशेषज्ञ, सहायक प्रबंधक सुश्री पूनम सिंह ने तकनीकी सत्र लिये।

सत्र का उद्देश्य उच्च शिक्षा संस्थानों को डिजिलॉकर-एनएडी पोर्टल पर अकादमिक बैंक ऑफ क्रेडिट (एबीसी) का विवरण भरने के बारे में जानकारी प्रदान करना था। इंटरैक्टिव सत्र के दौरान छात्रों और उच्च शिक्षण संस्थानों के सामने आने वाली कठिनाइयों पर चर्चा की गई। दोहरी विशेषज्ञता और अन्य मामलों के साथ प्रविष्टियाँ कैसे भरी जाएं, इस पर प्रतिभागियों की शंकाओं पर चर्चा की गई। अधिकारियों ने प्रक्रिया को मजबूत करने के लिए पोर्टल में संशोधन और विकल्प जोड़ने से संबंधित कई महत्वपूर्ण सुझाव दिए।

कार्यक्रम का समापन कलिंगा विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. संदीप गांधी द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ। गणमान्य व्यक्तियों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। समारोह की संचालक वाणिज्य एवं प्रबंधन संकाय की सहायक प्रोफेसर डॉ. निष्ठा शर्मा थीं। सभी प्रतिभागियों को भागीदारी का प्रमाण पत्र प्रदान किया गया। कार्यक्रम का संचालन छात्र कल्याण एवं प्रशासन विभाग के डीन की टीम द्वारा बहुत अच्छे ढंग से किया गया।

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

छत्तीसगढ़

रायपुर, गुरुवार 22 मई 2025

6 महीने मे पैसा डबल कर के वापस देने का झांसा देकर ठगी करने वाले पिता पुत्र के खिलाफ एसपी से हुई शिकायत

जांजगीर चांपा। जिले के बम्हनीडीह थाना क्षेत्र के ग्राम पंचायत पोड़ी शंकर इन दिनों ठगों का ठिकाना बना हुआ है यहां के युवा से लेकर बुजुर्ग तक इस ठगी के मास्टर माइंड है यहां ठग लोगों को ट्रेनिंग में अधिक मुनाफा देकर उनसे ठगी कर रहे हैं । इसी तरह से यहां के ठगों ने बम्हनीडीह के एक युवक को अपने जाल में फंसाकर उससे दो लाख रुपए ठग लिये जिसकी शिकायत नवीन सराफ निवासी बम्हनीडीह ने पुलिस अधीक्षक से की अपनी शिकायत में बताया है की पोड़ीशंकर थाना बम्हनीडीह निवासी अभिषेक नामदेव पिता तपेश्वर उर्फ बुल्लू नामदेव के द्वारा उससे 6 महीने में पैसा डबल कर वापस करने के नाम से पैसा लेकर ठगी करने का आरोप लगाया है प्रार्थी का आरोप है कि पिता पुत्र ने मिल कर पहले तो उसे तरह तरह के लालच और प्रलोभन दिया और 200000 लाख रुपए ले लिये प्रार्थी ने पुलिस अधीक्षक से की शिकायत में आरोप लगाया है कि अभिषेक नामदेव और तपेश्वर नामदेव उर्फ बुल्लु उसके पास अपने मारूति सुजुकी स्विफ्ट वाहन क्रमांक CG 11 B J 3516 में फरवरी 2024 को उसके घर गये और कहने लगे की भैया आज कल मैं ट्रेडिंग का व्यवसाय कर रहा हूं और 6 महीने में पैसा डबल कर के वापस दे देता हूं।

साथ ही कहने लगा कि आप भी मुझे पैसा दो मै दिये रकम को ट्रेडिंग में लगाऊंगा। तब प्रार्थी ने बोला कि मैं इसके बारे में घर में बात करेगा उसके बाद फिर बताऊंगा फिर अभिषेक नामदेव अपने पिता तपेश्वर उर्फ बुल्लू नामदेव फिर से प्रार्थी से मिले और कहने लगे, पैसा लगा दो भैया मैं सबको 6 महीने में डबल कर के देता हूं आप विश्वास रखो आपको भी दूंगा। पर समय पुरा होने के बाद से दोनों प्रार्थी से लिये रकम वापस करने में आनाकानी कर रहे हैं जिले लेकर प्रार्थी ने इसकी शिकायत पुलिस अधीक्षक से करते हुए दोनों के खिलाफ कार्यवाही करने की मांग की है। दोनों व्यक्ति के द्वारा प्रार्थी से लिये रकम के बदले में उसे एक्सीस बैंक का चेक दिया है।

झारखंड के जामताड़ा की तरह छत्तीसगढ़ का छोटा सा गांव पोड़ीशंकर भी ठगों का गढ़

जांजगीर चांपा जिले के बम्हनीडीह थाना क्षेत्र के एक छोटे से गांव पोड़ीशंकर में दर्जनों ठगों का ठिकाना है यहां के युवा भी झारखंड के जामताड़ा के साइबर ठगों की तरह मशहुर है यहां के दर्जनों ठग लोगों को 6 महीने में बडल कर पैसा रिटर्न करने के नाम से पुरे छत्तीसगढ़ में अपना जाल फैला कर अरबों रुपए की ठगी कर के बैठे हैं यहां पीयूष जायसवाल अभिषेक नामदेव तपेश्वर नामदेव उर्फ बुल्लु नामदेव जैसे बड़े ठग लोगों से लाखों करोड़ों की ठगी कर आराम की जिंदगी बिता रहे हैं वहीं पीयूष जायसवाल वर्तमान में जेल में ठगी के मामले बंद है तो वहीं पिता पुत्र अभिषेक नामदेव और तपेश्वर नामदेव लोगों से ठगी करने के बाद आराम से अपना जीवन जी रहे हैं इनके अलावा यहां और भी बहुत सारे ठग इस गांव में बैठे हैं।

ऑपरेशन सिंदूर तहत चांपा में निकाली गई तिरंगा यात्रा, देशभक्ति और एकता का संदेश

चांपा। नगर पालिका चांपा द्वारा ऑपरेशन सिंदूर की सफलता के उपलक्ष्य में एक भव्य तिरंगा यात्रा का आयोजन किया गया। इस रैली का उद्देश्य भारत की एकता, अखंडता और देश की सुरक्षा में तैनात भारतीय सेना के प्रति आभार प्रकट करना था। इस ऐतिहासिक आयोजन में चांपा की देशभक्ति एक बार फिर से जनमानस के सामने मुखर रूप से दिखाई दी। प्रातः 7 बजे नगर पालिका कार्यालय से यात्रा की शुरुआत की गई, जो परशुराम चौक होते हुए शहीद स्मारक चौक तक पहुँची। यह यात्रा जिला कलेक्टर जन्मे जय मोहबे के दिशा-निर्देशन, अनुविभागीय अधिकारी (राजस्व) सुमित बघेल के मार्गदर्शन तथा मुख्य नगर पालिका अधिकारी भोलाशंकर सिंह ठाकुर के नेतृत्व में सम्पन्न हुई। यात्रा का संचालन कार्यपालन अभियंता योगेश राठौर के निर्देशन में हुआ। इस गौरवमयी रैली में नगर पालिका परिषद के अधिकारी, कर्मचारी, चांपा तहसीलदारों एवं चांपा नगर के जनप्रतिनिधि, एवं सामुदायिक संगठक राजकुमारी सिंह एवं सुनीता प्रधान, स्वच्छता दीदीयाँ, एवं बड़ी संख्या में आम नागरिक शामिल हुए। सभी ने हाथों में तिरंगा लेकर देशभक्ति के नारों के साथ रैली को उत्साहपूर्वक सफल बनाया। तिरंगा यात्रा के माध्यम से न सिर्फ ऑपरेशन सिंदूर की सफलता का जश्न मनाया गया, बल्कि यह भी संदेश दिया गया कि चांपा के नागरिक देश की रक्षा और अखंडता के प्रति सदैव सजग और कृतज्ञ हैं। यह रैली भारत की एकता और सामूहिक चेतना का प्रतीक बनी, जिसमें सभी वर्गों की भागीदारी देखने को मिली। इस अवसर पर नगर पालिका के अधिकारियों ने बताया कि इस तरह के आयोजन युवाओं में देशभक्ति की भावना को प्रबल करते हैं और समाज को एकजुट करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

हैदराबाद के गुलजार हाउस में हुई भीषण आगजनी की घटना में काल कलवित हुए लोगों को अंतरराष्ट्रीय अग्रवाल सम्मेलन परिवार ने दी श्रद्धांजलि

सक्ती। तेलंगाना राज्य के हैदराबाद शहर में चारमीनार के पास गुलजार हाउस में हुई भीषण आग दुर्घटना में अग्रवाल मोदी परिवार की 17 जिंदगियों के असामयिक निधन से संपूर्ण अग्रवाल समाज का मन बेहद व्यथित है। अंतर्राष्ट्रीय अग्रवाल सम्मेलन परिवार तेलंगाना राज्य के पदाधिकारी मनोज अग्रवाल द्वारा संपूर्ण घटना की जानकारी अंतरराष्ट्रीय अग्रवाल सम्मेलन के अध्यक्ष राजकुमार मित्तल को दी गई,जिस पर अध्यक्ष राजकुमार मित्तल ने गुलजार हाउस की इस घटना पर संवेदनाएं व्यक्त करते हुए कहा कि इस हृदयविदारक दुखदाई घटना से परिवार की खुशियां कुछ ही समय में राख में बदल गईं। सहारे के लिए अपनों की चीखें, परिवार की वेदनाएं और , दर्द भरे आंसुओं नें आज समूचे देश के नागरिकों के दिलों को झकझोर कर रख दिया है,अंतर्राष्ट्रीय अग्रवाल सम्मेलन परिवार इस भीषण त्रासदी में मोदी परिवार के लिए गहरी संवेदनाएं व्यक्त करता है, एवं इस बेहद मुश्किल की घड़ी में अंतर्राष्ट्रीय अग्रवाल सम्मेलन परिवार के सभी सदस्य शोक संतप्त परिजनों के साथ खड़े हैं, जिन्होंने अपने प्रियजनों को खो दिया है। ईश्वर से प्रार्थना है कि परिवार की सभी दिवंगत आत्माओं को चिर शांति व अपने चरणों में स्थान दें तथा परिवार के अन्य घायल पीड़ितों को शीघ्र स्वास्थ्य लाभ प्रदान करें, साथ ही शोक संतप्त परिवारों को इस असहनीय पीड़ा को सहने की शक्ति प्रदान करें। गुलजार हाउस की उपरोक्त घटना पर अंतरराष्ट्रीय अग्रवाल सम्मेलन के अध्यक्ष राजकुमार मित्तल सहित सभी केंद्रीय पदाधिकारियो ने कहा है कि इस त्रासदी की घड़ी में पूरा राष्ट्र एकजुट होकर मोदी परिवार के इस घोर दुःख में सहभागी है।

करोड़ो रूपयें लेकर धोखाधड़ी करने वाले आरोपियों को किया गिरफ्तार

जांजगीर-चंपा । करोड़ो रूपयें लेकर धोखाधड़ी करने वाले आरोपियों को किया गिरफ्तार। आरोपियों द्वारा लोगो को रकम दुगुना करने के लालच देकर रकम लेकर करता था धोखाधड़ी। आरोपी रामनारायण वस्त्रकार एवं उसकी पत्नी सुनिता वस्त्राकार के द्वारा लोगों को लुभावने प्रलोभन देकर धोखे से पैसा लेते थे और उसे ट्रेडिंग डलकर उन्हे अधिक ब्याज देते थे बाद में धीरे धीरे जब लोगो कर विश्वास हो जाता था तब आरोपी उनके पैसे वापस नही करता था। आरोपियों द्वारा अगल-अलग किस्तों में पैसा दुगना करने का प्रलोभन देकर अलग अलग लोगो से कुल 1,02,54,000/ रूपया लियें जाने की सूचना रिपोर्ट पर आरोपियों के विरूद्ध अपराध धारा पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया। अधिकारीयों के मार्गदर्शन में पूछताछ करने पर अलग-अलग लोगो से लुभावने प्रलोभन देकर पैसा दुगुना करने का लालच देकर रकम लेकर धोखाधड़ी करना जुर्म स्वीकार किये जाने से आरोपियों को विधिवत् गिरफ्तार कर 18.05.2025 को न्यायिक रिमाण्ड पर भेजा गया।उपरोक्त कार्यवाही में उपनिरीक्षक राकेश कुमार सूर्यवंशी चौकी प्रभारी नैला एवं प्रआर रूद्रनारायण कस्यप का सराहनीय योगदान रहा।

एक्ज़ोनोबेल इंडिया ने आर्कीटेक्ट्स एवं इंटीरियर डिज़ाइनर्स को सशक्त बनाने के लिए लॉन्च किया 'ड्यूलक्स मास्ट्रो' प्रोग्राम

गुरूग्राम : हाल ही में हुए एक अध्ययन के मुताबिक' भारत में इंटीरियर डिज़ाइन का मार्केट 14.3 फीसदी की दर से बढ़कर 2030 तक 81.2 बिलियन डॉलर तक पहुंच जाएगा। भारत में शहरीकरण 2050 तक तकरीबन 50 फीसदी के आंकड़े को पार कर जाएगा, ऐसे में टियर 2 और टियर 3 शहरों में क्यूरेटेड एवं पर्सनलाइज़्ड लिविंग स्पेसेज़ की मांग तेज़ी से बढ़ रही है। ड्यूलक्स मास्ट्रो के लॉन्च पर बात करते हुए रोहित तोतला, एक्ज़क्टिव डायरेक्टर एक्ज़ोनोबेल इंडिया ने कहा, ''हाइपर-पर्सनलाइज़्ड एवं ट्रेंडी लिविंग स्पेसेज़ की बढ़ती मांग के बीच आज के संपन्न उपभोक्ता इंटीरियर डिज़ाइनरों एवं आर्कीटेक्ट्स की विशेषज्ञता का लाभ उठा रहे हैं। गुणवत्ता एवं इनोवेशन में एक्ज़ोनोबेल की 70 सालों की धरोहर के साथ ड्यूलक्स मास्ट्रो एक प्रोडक्ट से कहीं बढ़कर है। यह डिज़ाइन प्रोफेशनल्स को सशक्त बनाने की हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाता है, ताकि वे महानगरों में और महानगरों के दायरे से आगे बढ़कर डिज़ाइन के प्रति सजग नए भारत में स्पेसेज़ को नया आयाम दे सकें।'' आर्कीटेक्ट्स एवं इंटीरियर डिज़ाइनरों की ज़रूरतों को ध्यान में रखते हुए डिज़ाइन किए गए ड्यूलक्स मास्ट्रो प्रोग्राम में कलर, विज़ुअलाइज़ेशन एवं पर्सनलाइज़ेशन में ड्यूलक्स के रूझानों के साथ आधुनिक बिज़नेस सपोर्ट शामिल है। साईट इंस्पेक्शन से लेकर, ऑन-साईट सैम्पलिंग, एक्सपर्ट कलर कन्सलटेन्सी और 2000 से अधिक शेड्स वाले ड्यूलक्स कलर प्लग-इन से युक्त अडवान्स्ड डिजिटल विज़ुअलाइज़ेशन तक; टेकनिकल ट्रेनिंग से लेकर ऑन-डिमांड प्रीव्यू तक- ड्यूलक्स के मान्यता प्राप्त सर्वोच्च कॉन्ट्रैक्टर्स एवं कोटेशन टूल्स के साथ यह प्रोग्राम हर चरण पर प्रोफेशनल्स को सशक्त बनाता है।

एयरटेल और गूगल ने अपने पोस्टपेड और वाई-फाई ग्राहकों को गूगल वन सब्सक्रिप्शन देने के लिए साझेदारी की

रायपुरः भारत की अग्रणी टेलीकॉम कंपनी भारती एयरटेल और गूगल ने एक साझेदारी की घोषणा की है, जिसके तहत एयरटेल के ग्राहकों को गूगल वन क्लाउड स्टोरेज सब्सक्रिप्शन की सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी। यह पहल उन ग्राहकों के लिए विशेष रूप से फायदेमंद होगी, जो सीमित डिवाइस स्टोरेज की समस्या का सामना कर रहे हैं। एयरटेल के सभी पोस्टपेड और होम वाई-फाई ग्राहक इस पेशकश के तहत छह महीने तक 100 जीबी का गूगल वन क्लाउड स्टोरेज बिना किसी अतिरिक्त शुल्क के प्राप्त कर सकेंगे। ग्राहक यह स्टोरेज पांच अन्य लोगों के साथ साझा भी कर सकेंगे। एयरटेल और गूगल की यह साझेदारी उस बढ़ती हुई चुनौती का समाधान करने के उद्देश्य से की गई है, जिसमें उपभोक्ता सीमित स्टोरेज के कारण बार-बार फाइलें डिलीट करने या महंगे फिजिकल स्टोरेज विकल्पों का सहारा लेने को मजबूर होते हैं। इस सुविधा से ग्राहक अपने फोटो, वीडियो, दस्तावेज़ और अन्य डिजिटल सामग्री को बिना किसी झंझट के स्टोर कर पाएंगे। इसके अतिरिक्त, एंड्रॉइड यूज़र्स के लिए व्हाट्सएप चैट्स का बैकअप भी गूगल अकाउंट स्टोरेज में सुरक्षित रहेगा, जिससे नए डिवाइस में स्थानांतरण आसान हो जाएगा। यह क्लाउड स्टोरेज सुविधा एंड्रॉइड और आईओएस दोनों प्लेटफॉर्म्स पर उपलब्ध होगी, जिससे एयरटेल के विस्तृत और विविध ग्राहक वर्ग को इसका सीधा लाभ मिलेगा। इस साझेदारी पर बात करते हुए सिद्धार्थ शर्मा, डायरेक्टर मार्केटिंग और सीईओ ङ्क कनेक्टेड होम्स, भारती एयरटेल ने कहा, ÷आज स्मार्टफोन सिर्फ संचार का माध्यम नहीं, बल्कि पर्सनल और प्रोफेशनल लाइफ को सुचारू ढंग से मैनेज करने का जरिया बन गए हैं। ऐसे में स्टोरेज की समस्या ग्राहकों के लिए बड़ी चुनौती बनती जा रही है।

कैनडियर ने शाहरुख़ ख़ान को बनाया अपना ब्रांड एम्बेसडर

मुंबईः कल्याण ज्वैलर्स के लाइफस्टाइल ज्वैलरी ब्रांड कैनडियर ने बॉलीवुड के बादशाह शाहरुख़ ख़ान को अपना नया ब्रांड एम्बेसडर घोषित किया है। यह साझेदारी कैनडियर की राष्ट्रीय विस्तार रणनीति का एक अहम पड़ाव है, और आधुनिक ग्राहकों की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए ज्वैलरी को फिर से परिभाषित करने की दिशा में एक मजबूत कदम है। ब्रांड ने ऐसी ज्वैलरी पेश की है, जो व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति, अर्थपूर्ण उपहार और दैनिक स्टाइल का प्रतीक बने। बॉलीवुड अभिनेता शाहरुख़ ख़ान, जिनकी लोकप्रियता सिर्फ भारत ही नहीं बल्कि वैश्विक स्तर पर फैली है, अब कैनडियर के डिजिटल, टीवी, प्रिंट और इन-स्टोर कैंपेन का चेहरा होंगे। उनके कालातीत आकर्षण और गहराई से जुड़े फैनबेस के चलते वे कैनडियर के विज़न के साथ पूरी तरह मेल खाते हैं। कैनडियर के डायरेक्टर, श्री रमेश कल्याणरमन ने कहा, भारतीय ज्वैलरी उद्योग में अब स्पष्ट सेगमेंटेशन देखने को मिल रहा है – उपभोक्ता अब ऐसी ज्वैलरी चाहते हैं जो उनके व्यक्तित्व, जीवनशैली और खास मौकों से मेल खाए। कैनडियर इसी बदलाव के अनुरूप बना है – खासकर उन लोगों के लिए जो दिल से ल्तद्गठ्ठ हैः अभिव्यक्तिपूर्ण, अलग और डिजिटल रूप से जुड़े हुए। शाहरुख़ ख़ान के साथ हमारी साझेदारी हमारी इन्हीं भावनाओं को दर्शाती है। वे पीढ़ियों को जोड़ते हैं और आज के दौर में भी उनकी लोकप्रियता शानदार है। उनके साथ हम यह संदेश देना चाहते हैं कि कैनडियर की ज्वैलरी अब सिर्फ साज-सज्जा नहीं, बल्कि पहचान और इरादे की सोच-समझकर की गई एक विचारशील, व्यक्तिगत अभिव्यक्ति है।

जेएसडब्ल्यू एमजी मोटर इंडिया की ईवी सेगमेंट में आक्रामक रणनीति निरंतर है जारी, एमजी विंडसर एक्सक्लूसिव प्रो वेरिएंट को किया लॉन्च

रायपुर। भारतीय ईवी सेक्टर में अपनी गति को निरंतर बनाए रखते हुए, जेएसडब्ल्यू एमजी मोटर इंडिया ने आज एमजी विंडसर एक्सक्लूसिव प्रो वेरिएंट को पेश किया है, इससे कंपनी के इलेक्ट्रिक वाहन पोर्टफोलियो का और विस्तार हुआ है। एमजी विंडसर एक्सक्लूसिव प्रो वेरिएंट 17,24,800 रुपए की एक्स-शोरूम कीमत और 12.24रु रुपए +4.5 रुपए/किमी की BaaS कीमत पर उपलब्ध होगी। आज यानी मंगलवार से ही, ग्राहक अपने निकटतम एमजी डीलरशिप पर 11,000 रुपए का भुगतान कर इस कार को बुक कर सकते हैं. इस वेरिएंट की डिलीवरी जून के पहले सप्ताह से शुरू होगी. लग्जरी और व्यावहारिकता को एक साथ मिलाते हुए, एक्सक्लूसिव प्रो वेरिएंट एमजी विंडसर की विशिष्ट आरामदायक सुविधाओं के साथ-साथ लंबी दूरी की चिंता मुक्त यात्रा के लिए एक बड़े बैटरी पैक के साथ आती है। विलासिता और व्यावहारिकता को एक साथ लाते हुए, एक्सक्लूसिव प्रो वेरिएंट एमजी विंडसर की विशिष्ट आरामदायक सुविधाओं के साथ-साथ लंबी दूरी की चिंता मुक्त यात्रा के लिए एक बड़ी बैटरी पैक प्रदान करता है। इस लॉन्च के अवसर पर बोलते हुए, राकेश सेन, बिक्री प्रमुख, जेएसडब्ल्यू एमजी मोटर इंडिया ने कहा, एमजी विंडसर प्रो को मिली जबरदस्त प्रतिक्रिया सराहनीय है, क्योंकि इसके लॉन्च के 24 घटों के भीतर 8,000 से ज्यादा बुकिंग हो गई है। टॉप वेरिएंट के बाजार में स्थापित होने के साथ, हम एमजी विंडसर की पहुंच का विस्तार कर रहे हैं और एक्सक्लूसिव प्रो वेरिएंट पेश कर रहे हैं, जो प्रीमियम आराम और सुविधा के साथ एक बड़े बैटरी पैक के साथ आती है। इस कदम का उद्देश्य एमजी विंडसर प्रो को और अधिक ग्राहकों के करीब लाना है। एमजी विंडसर एक्सक्लूसिव प्रो में फ्यूचरिस्टिक एयरोग्लाइड डिजाइन का इस्तेमाल किया गया है और यह एमजी के ग्लोबल स्मार्ट इलेक्ट्रिक प्लेटफॉर्म पर निर्मित है, जो अपनी विश्वसनीयता के लिए प्रसिद्ध है। नया इंटीरियर्स आलीशान है, और रिक्लाइनेबल (135 डिग्री तक) एयरो लाउंज सीट हर यात्रा को एक प्रीमियम अनुभव प्रदान करती है। इसकी इमर्सिव तकनीक, जो i-SMART ™ द्वारा संचालित है, जिसमें 80 से ज्यादा कनेक्टेड फीचर्स, 100 से ज्यादा एआई आधारित वॉयस कमांड और मनोरंजन फीचर्स शामिल हैं, सेंट्रल कंसोल में एक विशाल 15.6 इंच ग्रैंडव्यू टच डिस्प्ले द्वारा संचालित है, जिसमें नौ स्पीकर्स लगे हैं।

विशेषज्ञों ने बताये नाश्ते के आसान और सेहतमंद आइडिया, ताकि दिन की हो बेहतर शुरुआत

रायपुर। भारत समेत दुनियाभर की महिलाओं में पॉलीसिस्टिक ओव्हरी सिंड्रोम (पीसीओएस) के मामले तेजी से बढ़ रहे हैं। पीसीओएस के कारण हॉर्मोन में असंतुलन होता है, जिससे पूरी सेहत, मेटाबोलिज़्म और वजन पर असर पड़ता है।ऐसे में जीवनशैली में बदलाव के साथ-साथ खानपान पर विशेष ध्यान देना जरूरी है। पौष्टिक तत्वों से भरपूर संतुलित आहार शरीर को न केवल ऊर्जा देता है, बल्कि लंबे समय तक स्वास्थ्य को भी संबल प्रदान करता है। विशेषज्ञ मानते हैं कि रोज़ाना के नाश्ते में बादाम जैसे मेवों को शामिल करना इस दिशा में एक असरदार कदम हो सकता है। बादाम शरीर को दिनभर स्थिर ऊर्जा देते हैं और पीसीओएस डाइट को बेहतर बनाने में अहम भूमिका निभाते हैं। इस विषय पर जानकारी साझा करते हुए मैक्स हेल्थकेयर, नई दिल्ली में डायटीटिक्स की रीजनल हेड ॠतिका समद्दार बताती हैं कि पीसीओएस से जूझ रही महिलाओं के लिए ऐसे नाश्ते के विकल्प जरूरी हैं जो न केवल आसान और पौष्टिक हों, बल्कि व्यस्त सुबह के लिए भी उपयुक्त हों। उनका मानना है कि आहार में पौष्टिकता और स्वाद का संतुलन होना चाहिए। ॠतिका के अनुसार, साबुत अनाज, हरी पत्तेदार सब्जियां और बादाम जैसे तत्व हार्मोन संतुलन बनाए रखने, वजन नियंत्रित करने और समग्र स्वास्थ्य सुधारने में सहायक होते हैं। आलमंड एण्ड ओट मिल्क ब्रेकफास्ट स्मूदीः यह एक ऐसा हेल्दी ड्रिंक है, जो बादाम और ओट्स के पोषण से भरपूर मिश्रण से तैयार होता है।

घट सकती है सक्ती जिले के मालखरौदा जैसी बड़ी घटना

तेज नुकीली मशीनों के साथ सड़कों पर दौड़ रही हार्वेस्टर, प्रशासन मौन

बम्हनीडीह। गांव में इन दिनों धान की कटाई का कार्य जोरों पर है और गांवों में बाहर से हार्वेस्टर मशीनें मंगाई जा रही हैं। लेकिन इन मशीनों का उपयोग जिस तरीके से किया जा रहा है, वह न सिर्फ नियमों का उल्लंघन है बल्कि जानलेवा भी साबित हो सकता है। बम्हनीडीह के नागरिकों द्वारा धान काटने के लिए बुलवाई गई हार्वेस्टर मशीनों को मेन रोड पर खुलेआम चलाया जा रहा है। सबसे चिंता की बात यह है कि इन हार्वेस्टरों में आगे-पीछे तेज और नुकीली मशीनें लगी हुई हैं, जिन्हें बिना किसी सुरक्षा व्यवस्था के सड़कों पर दौड़ाया जा रहा है। नियमों के अनुसार, हार्वेस्टर जैसे भारी और नुकीले औजारों वाली मशीनों को मुख्य मार्गों पर चलाने के लिए विशेष सावधानियां बरतना आवश्यक होता है, जिनमें सुरक्षा कवर, चेतावनी संकेत और ट्रॉली व्यवस्था शामिल है। परंतु इन नियमों की अनदेखी करते हुए मेन रोड पर बेधड़क मशीनें दौड़ाई जा रही हैं, जिससे कभी भी कोई बड़ा हादसा हो सकता है।

नियम : खेतों में जाकर लगाए नुकीले मशीन, बाहर के लोगों एक पूरा ब्यौरा थाने में जमा हो

दरअसल नियम अनुसार देखे तो हार्वेस्टर में धान काटने के लिए जो आगे और पीछे नुकीले मशीन लगती है उसे खेत में जाने के पश्चात ही लगाए जाना चाहिए लेकिन एक जगह से दूसरे जगह जाकर पुनः मशीन निकाल कर लगाकर समय और पैसे दोनों खर्च होते हैं जिसके कारण गाड़ी मालिक गाड़ी को वैसे ही नुकीले मशीन लगे हुए में रोड से एक जगह से दूसरे जगह लाना ले जाना करवा देते हैं जिससे गांव में रहने वाले नागरिकों के जान में जान खतरे में है। हार्वेस्टर को चलने के लिए बाहर बाहर के लोगों को बुलाया जाता है जिनकी आई डी प्रूफ थाने में जमा करना होता है पर यहां सारे नियमों को तोड़ कर खुले कम कम किया जा रहा है।

हो सकती है मालखरौदा जैसी घटना

बीती रात जिला सक्ती के मालखरौदा मैं मैं हार्वेस्टर मालिक द्वारा गाड़ी के आगे नुकीले मशीन लगाकर हार्वेस्टर एक जगह से दूसरे जगह ले जाया जा रहा था तभी सामने से तेज रफ्तार में तीन युवक बाइक में आ रहे थे जो कि सीधे जाकर हार्वेस्टर के आगे नुकीले मशीन में घुस गए इसके पश्चात उन युवकों को का मौके पर ही मौत हो गई जिसमें एक युवक का सिर धड़ से अलग हो गया । गांव में भी इस प्रकार की घटना न हो इसलिए बम्हनीडीह के नागरिक प्रशासन से इस प्रकार के गाड़ियों पर प्रतिबंध लगाने की मांग की है।

कार्यालय जिला आयुष अधिकारी, दुर्ग (छ.ग.)

क्रमांक/स्टोर/2025/271 दुर्ग, दिनांक 17/05/2025

"शुद्धि-पत्र" निविदा

कार्यालय जिला आयुष अधिकारी, दुर्ग छ.ग. के अधीन संचालित जिला शासकीय आयुर्वेद चिकित्सालय दुर्ग में आने वाले पेंशनर हेतु आयुर्वेद शास्त्रोक्त एवं पेटेन्ट औषधियों का क्रय हेतु इस कार्यालय के पत्र क्र./ स्टोर/ 2025/ 252 दिनांक 13.05.2025 द्वारा टू-बीड पद्धति से निविदा आमंत्रित की गई है, में निम्नानुसार शर्तें/पक्तिंया जोड़ी जाती हैः-

1. "पेंशनर्स हेतु क्रय किये जाने वाली आयुर्वेद शास्त्रोक्त एवं पेटेन्ट औषधियों के क्रय हेतु केवल दुर्ग एवं भिलाई नगर निगम पालिक सीमा में स्थित औषधि निर्माता / अधिकृत विक्रता ही भाग ले सकते है"।

शेष शर्तें इस कार्यालय के पत्र क्र./ स्टोर/ 2025/ 252 दिनांक 13.05.2025 में उल्लेखित अनुसार पूर्ववत/ यथावत रहेगी।

जिला आयुष अधिकारी
दुर्ग (छ.ग.)

G-252600972/3

पंडरिया विधायक भावना बोहरा ने विभिन्न ग्रामों में 81 लाख रुपए के अधोसंरचना निर्माण एवं विकास कार्यों का किया भूमिपूजन

ग्रामीण क्षेत्रों का समुचित विकास और जनसुविधाओं का विस्तार हमारी प्राथमिकता है : भावना बोहरा

पंडरिया (विश्व परिवार)। पंडरिया विधानसभा के ग्रामीण क्षेत्रों में विकास कार्यों को गति देने एवं जनता की मूलभूत व आवश्यक सुविधाओं के विस्तार के लिए विधायक भावना बोहरा द्वारा निरन्तर अधोसंरचना निर्माण एवं विकास कार्यों का लोकार्पण व भूमिपूजन किया जा रहा है। गुणवत्तापूर्ण और तय समय में विकास कार्यों को पूरा करने के लिए वे स्वयं विधानसभा में होने वाले सभी कार्यों की समय-समय पर समीक्षा कर रहीं हैं वहीं उनका निरिक्षण भी कर रही है। आज भावना बोहरा ने व्यापारियों एवं जनता की मूलभूत सुविधाओं के मद्देनजर विभिन्न ग्रामों में 80 लाख 91 हजार रुपए की लागत से होने वाले विकास कार्यों का भूमिपूजन किया। इस दौरान उन्होंने ग्राम गोरखपुर कला में सामुदायिक भवन, सुरजपुरा में नाली, शौचालय एवं भवन, ग्राम कोसमंदा में भवन, रणवीरपुर में व्यवसायिक परिसर, डोंगरिया में सी.सी. रोड, नवघटा में भवन एवं ग्राम उड़िया खुर्द में सी.सी.रोड निर्माण कार्यों का भूमिपूजन किया।

इस अवसर पर पंडरिया विधायक भावना बोहरा ने कहा कि हमारे देश की पहचान हमारे गाँव से है, इसलिए हमारे ग्रामीण क्षेत्रों का निरन्तर विकास और जनता की मूलभूत सुविधाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करना हमारी प्राथमिकता है। यह सभी निर्माण कार्य हमारे ग्रामीण क्षेत्रों के विकास एवं जनता की सुविधाओं का विस्तार करने में बहुमूल्य भूमिका निभाएंगे। जब से छत्तीसगढ़ में भाजपा की सरकार बनी है तब से छत्तीसगढ़ में अधोसंरचना विकास से लेकर कल्याणकारी योजनाओं के सफल क्रियान्वयन से जन-जन के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन आ रहा है। पंडरिया विधानसभा में विकास कार्य प्रगति पर हैं, जनता को योजनाओं का लाभ मिल रहा है, महिलाओं का सशक्तिकरण, किसानों को सम्मान और युवाओं को रोजगार के साथ हमारे वृद्धजनों को आयुष्मान योजना के माध्यम से बेहतर स्वास्थ्य सुविधाओं का लाभ मिल रहा है।

उन्होंने आगे कहा कि माननीय मुख्यमंत्री विष्णु देव साय जी के नेतृत्व में हमारी सरकार मोदी की गारंटी में किये अपने वादों को पूरा करते हुए डबल इंजन सरकार के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ की जनता की आकाँक्षाओं अनुरूप कार्य किये जा रहें हैं, ध्रुव गति से अधोसंरचना विकास के साथ ही मूलभूत सुविधाओं जैसे सड़क, बिजली, पानी जैसी आवश्यक सुविधाओं पर भी जमीनी स्तर पर कार्य किये जा रहें हैं, जिसका सकारातमक परिणाम दिखाई दे रहा है। आज हमारा प्रदेश भय और भ्रष्टाचार को मुक्त कर प्रदेश में सुशासन स्थापित कर रही है जहाँ पूर्ण पारदर्शिता के साथ विकास और अधोसंरचना निर्माण के कार्य तेजी से पूरे किये जा रहें हैं और साधन एवं संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित होने से हमारे ग्रामीण क्षेत्रों की आर्थिक प्रगति सुनिश्चित हुई है। हमें पूरा विश्वास है कि आज इन सभी विकास कार्यों से ग्रामवासियों को सुविधा मिलेगी और हमारा लक्ष्य एवं प्रयास भी यही है कि जनता की समस्याओं का समाधान कर विकास व उनका सशक्तिकरण करना।

पीएनबी एमएसएमई मासिक आउटरीच कार्यक्रम मई-2025

रायपुर (विश्व परिवार)। जाब नैशनल बैंक, अंचल कार्यालय, रायपुर के समन्वय से मध्य कॉर्पोरेट केंद्र (एमसीसी-1) रायपुर द्वारा दिनांक 20 मई 2025 को सायाजी होटल, तेलीबांधा रायपुर में एमएसएमई मासिक आउटरीच कार्यक्रम मई -2025 का भव्य आयोजन किया गया, कार्यक्रम का उद्घाटन छत्तीसगढ़ मिनी स्टील प्लांट एसोसिएशन के उपाध्यक्ष माननीय श्री मुकेश पांडे जी एवं पंजाब नैशनल बैंक, अंचल कार्यालय रायपुर के महाप्रबंधक/ अंचल प्रबंधक श्री आशीष चतुर्वेदी जी के करकमलों द्वारा किया गया। इस अवसर पर पंजाब नैशनल बैंक, मंडल कार्यालय, रायपुर के मंडल प्रमुख श्री वीरेंद्र कुमार शर्मा जी, एवं पंजाब नैशनल बैंक के अन्य गणमान्य अधिकारी प्रमुख रूप से उपस्थित थे। इस अवसर पर श्री मुकेश पांडे जी ने कहा कि पीएनबी की ओर से यह एक अच्छी पहल है जहाँ एक ही छत के नीचे रायपुर के उद्यमियों को इतनी सारी ऋण सुविधाओं के साथ अनुकूलित ऋण समाधान, प्रतिस्पर्धी ब्याज दरें, डिजिटल बैंकिंग उपकरण और व्यापार वृद्धि में तेजी लाने के लिए सरकार समर्थित योजनाओं तक पहुंच प्रदान की जा रही है। उन्होंने इस आयोजन की अत्यंत सराहना की और कहा कि पीएनबी जैसे बड़े बैंक को उस प्रकार के आयोजन करते रहने चाहिए।

श्री आशीष चतुर्वेदी जी ने बताया कि पीएनबी एमएसएमई आउटरीच कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) को अनुकूलित वित्तीय समाधान, विशेषज्ञ मार्गदर्शन और त्वरित वितरण के साथ समर्थन और सशक्त बनाना है। एक दिवसीय कार्यक्रम में एमएसएमई उद्यमी, वित्तीय विशेषज्ञ एक साथ आएंगे, तथा उन्हें अनुकूलित ऋण समाधान, प्रतिस्पर्धी ब्याज दरें, डिजिटल बैंकिंग उपकरण जैसी अन्य बैंकिंग सेवाएं प्रदान कराना है। उपस्थित ग्राहकों को मौके पर ही ऋण स्वीकृति पत्र, पीएनबी बैंकिंग विशेषज्ञों के साथ आमने-सामने परामर्श और प्रमुख उद्योग हितधारकों के साथ नेटवर्किंग के अवसरों का लाभ उठा सकते हैं। पात्र ग्राहक पीएनबी जीएसटी एक्सप्रेस, पीएनबी ट्रेड ग्रोथ आदि जैसी नकदी प्रवाह आधारित योजनाओं में सैद्धांतिक मंजूरी भी प्राप्त कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त, कार्यक्रम स्थल पर समर्पित डिजिटल टैब उपस्थित लोगों को तुरंत डिजी एमएसएमई ऋण तक पहुंचने में सक्षम करेगा, जिससे स्वीकृति प्रक्रिया तेज और अधिक सुविधाजनक हो जाएगी।

इस दौरान पीएनबी एमसीसी-1 रायपुर कार्यालय के सहायक महाप्रबंधक श्री दीपक कुमार वर्मा जी ने कहा कि पीएनबी का उद्देश्य रायपुर के उद्यमियों को अपने व्यसाय हेतु विशेष एमएमएमई ऋण उत्पादों और योजनाओं की सम्पूर्ण जानकारी प्रदान करना है साथ ही पीएनबी जीएसटी एक्सप्रेस, और पीएनबी ट्रेड ग्रोथ जैसी एमएसएमई ऋण योजनाओं के लिए तुरंत स्वीकृति पत्र प्रदान किये जाएंगे। कार्यक्रम में व्यापारियों को 10 लाख से 100 करोड़ तक का लोन दिया जाएगा। उन्होंने बताया कि पंजाब नैशनल बैंक कई तरह की स्वस्थ्य ऋण योजना प्रदान करता है। इनमें प्रधानमंत्री मुद्रा योजना, बुनकर मुद्रा योजना, और स्वस्थ्य प्राइम प्लस शामिल हैं। उन्होंने कहा कि हाल के समय में 15 फरवरी को पीएनबी द्वारा देशभर में अयोजित किये गये एमएसएमई एक्सपो 2025 की सफलता के बाद, पंजाब नेशनल बैंक एमएसएमई क्षेत्र में इस पहल को आगे बढ़ाते हुए अर्थव्यवस्था को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। एमएसएमई मासिक आउटरीच कार्यक्रम उद्यमियों को वित्तीय समाधानों तक निर्बाध पहुंच प्रदान करके व्यवसाय विकास और वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देने के लिए बैंक की प्रतिबद्धता को दर्शाता है, यह सुनिश्चित करता है कि उन्हें अपने उद्यमों को आत्मविश्वास के साथ बढ़ाने के लिए सही समर्थन मिले।

संक्षिप्त समाचार

अमृतसर-बिलासपुर छत्तीसगढ़ एक्सप्रेस का वीरांगना लक्ष्मी बाई जंक्शन (झाँसी) पर परिचालन समय में परिवर्तन

बिलासपुर (विश्व परिवार)। उत्तर मध्य रेलवे से प्राप्त जानकारी के अनुसार दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे से संबंधित गाड़ी संख्या 18238

अमृतसर-बिलासपुर छत्तीसगढ़ एक्सप्रेस वीरांगना लक्ष्मी बाई जंक्शन (झाँसी) पर दिनांक 28 मई, 2025 से प्रवर्तित समय आगमन 12.50 बजे प्रस्थान 12.55 बजे पहुँचकर अपने गंतव्य को रवाना होगी। रेल प्रशासन यात्रियों को होने वाली असुविधा के लिए खेद व्यक्त करता है तथा सहयोग की आशा करता है। यात्रियों से अनुरोध है कि असुविधा से बचने के लिए रेलवे द्वारा अधिकृत रेलवे पूछताछ सेवा ह्ज्ञश्वस/139 से गाड़ी की सही स्थिति की जानकारी प्राप्त करके तदनुसार यात्रा प्रारम्भ करें। उक्त विशेष ट्रेनों के विस्तृत समय और ठहराव की विस्तृत जानकारी हेतु कृपया www.enquiry.indian-rail.gov.in पर जाएं या NTES ऐप डाउनलोड करें।

महिलाओं ने माथे पर सिंदुर लगाकर हाथों में पकड़ा तिरंगा, विधायक ने भी लगाए जयकारे

रिसाली (विश्व परिवार)। नगर पालिक निगम रिसाली के तत्वधान में शहर की महिलओं ने बुधवार की शाम रैली निकाली। वे पहले एक दूसरे के माथे पर सिंदुर का तिलक की। इसके बाद हाथों में तिरंगा लेकर दुर्ग ग्रामीण विधायक ललित चंद्राकर, आयुक्त नगर पालिक निगम रिसाली मोनिका वर्मा के नेतृत्व में रैली निकाली। महिलाओं ने रैली तिरंगा के सम्मान में निकाली। ऑपरेशन सिंदुर के सफल होने पर दशहरा मैदान में महिलाओं ने आपस में सिंदुर का तिलक की। इसके बाद विधायक के नेतृत्व में रैली भारत माता के जयकारे लगाते हुए कृष्णा टाकिज रोड पहुंची। कृष्णा टाकिज रोड भ्रमण करते हुए रैली वापस शहीद स्मारक स्थल पहुंची। जहां महिलाओं ने और वरिष्ठ नागरिकों ने शहीद स्मारक पर पुष्प अर्पित किए। इस अवसर पर एमआईसी सदस्य डॉ. सीमा साहू, पार्षद रमा साहू, माया यादव, धर्मेन्द्र भगत, सांसद प्रतिनिधि दीपक पप्पू चंद्राकर, मण्डल अध्यक्ष राजू जंघेल, अनुपम साहू, महिला स्व समूह की सदस्य व नगर पालिक निगम रिसाली की महिला कर्मचारी-अधिकारी उपस्थित थे।

छत्तीसगढ़ बाल अधिकार संरक्षण आयोग ने किया आह्वान- हर बच्चा है अधिकारों का हकदार

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ बाल अधिकार संरक्षण आयोग द्वारा बाल अधिकारों पर आह्वान नामक जागरूकता कार्यक्रम का

आयोजन किया गया। राजधानी रायपुर के न्यू सर्किट हाउस में आयोजित कार्यक्रम का उद्देश्य बच्चों के अधिकारों की सुरक्षा, उनके कल्याण और जागरूकता को बढ़ावा देना रहा। आयोग की अध्यक्ष डॉ. वर्णिका शर्मा ने अपने उद्बोधन में कहा कि मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के नेतृत्व और महिला एवं बाल विकास मंत्री श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े के मार्गदर्शन में छत्तीसगढ़ शासन द्वारा बाल अधिकारों के संरक्षण के लिए हर संभव प्रयास किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि बच्चों को जीवन, सम्मान, शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा और विकास के समान अवसर मिलना उनके मौलिक अधिकार हैं। बच्चों को शोषण, दुर्व्यवहार, उपेक्षा और हिंसा से बचाना समाज की सामूहिक जिम्मेदारी है। उन्होंने बाल श्रम, तस्करी और यौन शोषण जैसे खतरों से बच्चों की रक्षा करने की आवश्यकता पर बल दिया। आयोग के सचिव श्री प्रतीक खरे ने कहा कि आज के समय में बच्चे विभिन्न प्रकार की हिंसा और शोषण का सामना कर रहे हैं, जिसे रोकने के लिए जागरूकता आवश्यक है। उन्होंने सभी संबंधित हितधारकों जैसे माता-पिता, शिक्षक, समुदाय, पुलिस और बाल सहायता संस्थाओं से मिलकर कार्य करने की अपील की।

कमिश्नर ने स्वास्थ्य प्रभारी व पार्षद समेत निगम अफसरों के साथ राजीव नगर में सफाई व्यवस्था देखी

बडी नालियों के निर्माण कार्यों के प्रस्ताव तैयार करने, सड़क सीमा से बाहर अतिक्रमणकर्ताओं को नोटिस लेकर 24 घंटे में कार्रवाही करने निर्देश

दुर्ग (विश्व परिवार)। नगर पालिक निगम सीमा अंतर्गत महा सफाई अभियान महापौर श्रीमती अलका बाघमार के मार्गदर्शन में शहर की सफाई व्यवस्था को बेहतर बनाने निगम कमिश्नर सुमित अग्रवाल ने वित्त प्रभारी नरेंद्र बंजारे, स्वास्थ्य प्रभारी नीलेश अग्रवाल, नोडल स्वास्थ्य अधिकारी मोहेंद्र साहू, मण्डल अध्यक्ष कमलेश फेकर के साथ राजीव नगर क्षेत्र, नया पारा, तालाब क्षेत्र सहित वार्ड के विभिन्न गलियों के वार्ड 02 का निरीक्षण किया। सड़क की सफाई व नाली/नाला की सफाई बेहतर करने के निर्देश दिए।

उन्होंने सड़क की सफाई व नाली सफाई कामों का निरीक्षण किया। इस दौरान कमिश्नर ने सफाई कर्मचारियों से बात की। उनकी समस्याओं को समझा। प्रभारी नीलेश अग्रवाल ने कहा बारिश के पहले सफाई व्यवस्था को और अधिक प्रभावी बनाने के निर्देश दिए। उन्होंने नालियों की नियमित सफाई करने कहा तुरंत कूड़ा कचरा को उठाने की बात कही।उन्होंने कचरा निस्तारण की उचित व्यवस्था करने चेताया। इसके अलावा स्थानीय नागरिकों से भी बातचीत कर उनकी समस्याओं और सुझावों को सुना। बड़ी नालियों के निर्माण कार्यो के प्रस्ताव तैयार करने के निर्देश दिये।सड़क सीमा से बाहर अतिक्रमणकर्ताओं को नोटिस लेकर कार्रवाही करने की बात कही।

आयुक्त ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि सफाई कार्यों में किसी भी प्रकार की लापरवाही न हो और महा अभियान के तहत सभी वार्डों में नियमित निरीक्षण किया जाए। उन्होंने आमजन से भी अपील की है कि वे स्वच्छता बनाए रखने में सहयोग मांगा। इस दौरान उपायुक्त मोहेंद्र साहू, उपअभियंता विनोद मांझी, उपअभियंता विकास दमाहे, सहायक स्वास्थ्य अधिकारी पंकज चंद्रवंशी, गौतम साहू, सुरेश भारती, रामलाल भट्ट सहित सुपर वाइजर मौजूद रहें।

देवी अहिल्या बाई होलकर की 300वीं जयंती पर स्वच्छता दीदीयों के साथ परिचर्चा एवं स्वास्थ्य परीक्षण कराया गया

भिलाईनगर (विश्व परिवार)। देवी अहिल्या बाई होलकर की 300वीं जयंती 21 मई से 31 मई तक आयोजित किए जाने का शासन से निर्देश प्राप्त हुआ है। अहिल्या बाई होलकर के जीवन गाथा के बारे में जन जागरूकता लाने के लिए स्वच्छता दीदीयों के बीच में परिचर्चा आयोजित की गई। आयुक्त राजीव कुमार पाण्डेय ने परिचर्चा के दौरान उनसे पूछा की आप लोग देवी अहिल्या बाई होलकर के बारे में क्या जानते हो। सुनकर सब सांत रहे, कोई कुछ नहीं बोल पाया। तब आयुक्त ने बताया कि देवी अहिल्या बाई होलकर सामान्य परिवार में जन्म लेकर होलकर साम्राज्य की महारानी बनी। उन्होने अपने शासनकाल में बहुत से सुधार किए। जिसमें प्रमुख रूप से बालिकाओं को शिक्षा का अधिकार, नगर का औद्योगिकरण, महिलाओं में सुरक्षा का अधिकार, राष्ट्रहित एवं धर्म संबंधी जन जागरूकता उनके द्वारा विकसित किया गया था। विशम परिस्थितियों में भी अपने राज्य के कार्य को संभालते हुए एक अच्छी महिला प्रशासक के रूप में उनका नाम इतिहास में सम्मान पूर्वक लिया जाता है। स्वच्छता दीदी नुशरत बानो ने बताया कि देवी अहिल्या बाई होलकर के जीवनी के बारे में हम लोगो को कोई जानकारी नहीं थी। अच्छा हुआ आज हम सब को यह सीख मिली कि एक महिला अपने लगन एवं परिश्रम से सब कुछ कर सकती है।

इस अवसर पर सभी स्वच्छता दीदीयों का स्वास्थ्य परीक्षण मोबाईल मेडिकल यूनिट के माध्यम से बैकुण्ठधाम में आयोजित किया गया। जिसमें उनका बीपी, सुगर, अस्थमा, खून जॉच, सर्दी, खॉसी, घुटना दर्द आदि का ईलाज करवाया गया, साथ में 115 स्वच्छता दीदीयों के जॉच के बाद दवा वितरित किया गया। वहां कार्यरत डॉक्टर रिचा शर्मा ने स्वच्छता दीदीयों को समझाया कि 41 प्रकार के खून का जॉच होता है। इसी जॉच को बाहर क्लीनिक में कराने पर 3 से 4 हजार रूपये खर्चा आ जाता है। जबकि यहां पर शासन द्वारा यह सुविधा नि:शुल्क प्रदान की जाती है। सुबह जॉच के बाद दोपहर 2 बजे तक रिपोर्ट मोबाईल में आ जाता है। उसके साथ ही आवश्यक रूप से सभी प्रकार की दवाईयॉ भी नि:शुल्क दी जाती है। यह शिविर वार्ड अनुसार चयनित स्थल पर लगाया जाता है।

भिलाई-चरौदा निगम के तीसरे सुशासन समाधान शिविर में पहुंचे अहिवारा विधायक डोमन लाल कोर्सेवाडा

हितग्राहियों को ड्रायविंग लाईसेंस के साथ राशन कार्ड एवं श्रमिक कार्ड का वितरण

भिलाई-चरौदा (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ शासन से प्राप्त निर्देश तथा जिला प्रशासन दुर्ग से प्राप्त मार्गदर्शन के अनुसार सुशासन तिहार कार्यक्रम का आयोजन नगर निगम भिलाई-चरौदा द्वारा किया जा रहा है। दिनांक 08 अप्रैल से 11 अप्रैल 2025 तक प्रथम चरण में नागरिको से मांग और समस्या संबंधी आवेदन प्राप्त किये गये। जबकि दुसरे चरण में सभी आवेदनो पर नियमानुसार कार्यवाही की गयी। जिन आवेदनों को निगम स्तर पर निराकृत किया जा सका अनका निराकण करते हुए अन्य विभाग जैसे श्रम, विधुत, खादय, राजस्व, चिकित्सा आदि के आवेदनों को उचित कार्यवाही के लिए उक्त विभाग को अग्रेषित किया गया है। इसके बाद तीसरे चरण में सुशासन तिहार का स्वरूप समाधान शिविर के तौर पर प्रत्येक 10 वार्ड के लिए एक स्थान पर लगाया जा रहा है। जिससे आवेदनकर्ता को कृत कार्यवाही के विवरण से अवगत कराया जा सके।

इसके पूर्व वार्ड क्रमांक-01 से वार्ड क्रमांक-06 के लिए दिनांक 07 मई को उमदा में तथा वार्ड-08 से लेकर वार्ड-17 के लिए 14 मई को मंगल भवन भिलाई-03 में समाधान शिविरो का आयोजन किया जा चुका है। जबकि वार्ड क्रमांक-19 से वार्ड क्रमांक-29 तक के वार्ड के लिए आज सामुदायिक भवन चरौदा में समाधान शिविर आयोजित किया गया। इस दौरान निगम के सभी विभाग एवं जिला प्रशासन के सभी विभाग प्रतिनिधियों द्वारा आवेदन निराकरण की जानकारी देते हुए शासन की सभी संचालित की जा रही योजनाओं की जानकारी से नागरिको को अवगत भी कराया गया।

विधायक श्री कोर्सेवाडा द्वारा शिविर में पहुंचे लोगों से संवाद करते हुए उनकी समस्या के निदान हेतु उपस्थित अधिकारियों को निर्देशित किया गया। इसके पश्चात आंगवाडी के 06 माह पूर्ण कर चुके नन्हे शिशुओं को अन्नप्राशन कराया तथा गर्भवती महिलाओं की गोंदभराई की रस्म में भी शामिल हुए।

आज शाम 4 बजे से प्रधानमंत्री आवास योजना की लॉटरी निगम भिलाई में

भिलाईनगर (विश्व परिवार)। शासन की महत्वकांक्षी प्रधानमंत्री आवास योजना मोर मकान-मोर चिन्हारी घटक से निर्मित मकानों का आबंटन किया जा रहा है। आयुक्त राजीव कुमार पाण्डेय के निर्देश पर जोन 04 शिवाजी नगर खुर्सीपार वार्ड क्रं. 42 गौतम नगर खुर्सीपार मेन सीवर लाईन से पूर्ण रूप से प्रभावित 18 हितग्राहियों में जो पूर्ण राशि जमा कर चुके है। उन्हे लॉटरी के माध्यम से मकान आबंटन किया जाएगा। इसी प्रकार आंशिक राशि जमा हितग्राहियों का प्रावधिक आबंटन करने स्वीकृति की प्रत्याशा में एक मुश्त तथा आंशिक अंशदान राशि जमा कराकर मोर मकान-मोर आस घटक से निर्मित मकान सामान्य वर्ग एवं दिव्यांग/वरिष्ठ नागरिकजनों को मकान खुली लॉटरी पद्वति से किया जाना है।

प्रमुख स्थल कृष्णा इंजीनियरिंग कॉलेज के पीछे खम्हरिया, आम्रपाली हाउसिंग बोर्ड, माईल स्टोन के पीछे खम्हरिया, सूर्या विहार के पीछे खम्हरिया, स्वप्निल बिल्डर्स कुरूद एवं अन्य परियोजना स्थलों से निर्मित/निर्माणाधीन आवासों का आबंटन हेतु जिला चयन समिति की बैठक में अनुमोदन पश्चात हितग्राहियों से 10 प्रतिशत अंशदान की राशि जमा कराकर 22 मई 2025 को समय दोपहर 4:00 बजे नगर निगम भिलाई मुख्य कार्यालय के सभागार में खुली लॉटरी पद्धति से आवास आबंटन किया जाएगा। नागरिक आवश्यक दस्तावेज साथ में लाकर लॉटरी में भाग ले सकते है और मकान प्राप्त कर सकते है।

नागरिको के सहुलियत के अनुसार छोटे-छोटे स्तर पर लॉटरी प्रक्रिया अपनाई जा रही है। जिससे लोग अपने मन पसंद स्थल पर अपना मकान प्राप्त कर सकते है। आयुक्त पाण्डेय ने क्षेत्र के नागरिको से अपील किए है कि जिन नागरिको के पास स्वयं का मकान नहीं है और मकान के लिए आवेदन करना चाहते है। वे सभी निगम मुख्य कार्यालय के योजना शाखा के काउंटर पर जाकर आवेदन प्राप्त कर सकते है। योजना विभाग में लॉटरी को लेकर सभी तैयारी पूर्ण कर ली गई है। मांगे गए आवश्यक दस्तावेज संलग्न कर आवेदन काउंटर पर जमा करें। उसके पश्चात पात्र सूची में नाम आने के बाद नियमानुसार मकान की राशि जमा कराकर लॉटरी में भाग लेकर मकान प्राप्त कर सकते है।

रिसाली के नागरिक घर बैठे जमा कर सकते हैं टैक्स, अब ऑनलाइन की सुविधा

रिसाली (विश्व परिवार)। नगर पालिक निगम रिसाली के नागरिक अब घर बैठे मोबाइल से संपत्तिकर, जलकर, समेत समस्त प्रकार के कर जमा कर सकते है। ऑनलाइन सेवा में सभी प्रकार जैसे कार्ड, यू.पी.आई., क्यू.आर.कोड सुविधा दी गई है। इसके अलावा निगम के कर्मचारी टैक्स की राशि लेने घर पहुंच सेवा भी देंगे।

निगम के संपत्तिकर विभाग के अधिकारी रवि श्रीवास्तव ने बताया कि पूर्व में निजी कंपनी से कर वसूली के लिए निगम ने अनुबंध किया था। वर्तमान में निगम स्वयं कर वसूली करने का निर्णय ली है। उन्होंने बताया कि कर दाता को कर की राशि जमा करने कार्यालय आने की जरूरत नहीं है।

''डब्ल्यू. डब्ल्यू. डब्ल्यू.मुनिश्पल कार्पेरेशन.इन'' टाइप करने से रिसाली का आप्शन आएगा। इसके बाद रिसाली सलेक्ट कर वे वार्ड, मोबाइल नंबर एवं नाम अंकित कर टैक्स जमा कर सकते है। यह सेवा 24 घंटे उपलब्ध है।

कार्यालय में कैश काउंटर- राजस्व निरीक्षक ने बताया कि ऐसे नागरिक जिन्हे ऑनलाइन व टैक्स जमा करने में असुविधा हो रही है वे कार्यालय आकर कर की राशि जमा कर सकते है। श्याम नगर स्थित पानी टंकी कार्यालय में सुबह 10 बजे से शाम 5:30 बजे तक कैश या कार्ड, पेटीएम से राशि जमा कर रसीद प्राप्त कर सकते है।

सवा छः प्रतिशत छुट- 31 मई तक संपत्तिकर जमा करने पर कर दाता को सवा छः प्रतिशत की छुट दी जाएगी। वही 31 जुलाई तक 5 प्रतिशत, 30 अगस्त तक 4 प्रतिशत और नवंबर माह में केवल 2 प्रतिशत की छुट का लाभ कर दाता ले सकते है।

दैनिक
विश्व परिवार
महानगर

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

रायपुर, गुरुवार 22 मई 2025

पेलमनाला जलाशय योजना के लिए 8.16 करोड़ रूपए स्वीकृत

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ शासन, जल संसाधन विभाग द्वारा रायगढ़ जिले के विकासखंड धरमजयगढ़ अंतर्गत पेलमनाला जलाशय योजना के कार्यों के लिए आठ करोड़ 16 लाख 72 हजार रूपए स्वीकृत किए है। योजना के तहत क्षेत्र के किसानों को 206 हेक्टेयर खरीफ एवं 20 हेक्टेयर रबी की फसलों की सिंचाई की जाएगी।

कॉस्मेटिक एवं प्लास्टिक सर्जरी पर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

रायपुर (विश्व परिवार)। कालड़ा बर्न एन्ड प्लास्टिक सर्जरी सेण्टर पचपेढ़ी नाका रायपुर में कॉस्मेटिक एवं प्लास्टिक सर्जरी से से जुडी जानकारी साझा करते हुए प्लास्टिक सर्जन डॉ सुनील कालड़ा ने बताया की कॉस्मेटिक और प्लास्टिक सर्जरी, और उपचार को लेकर लोगो में अभी भी जागरूकता का अभाव है, जबकि यह हर घर की आवश्यकता है। हम महीने में दो बार लोगो अवेयर करने के लिए यह प्रोग्राम कराते हैं ताकि कॉस्मेटिक और प्लास्टिक सर्जरी से संबधित जानकारी समाज के उन लोगो तक पहुँच सके जो जानकारी के अभाव में सामान्य जीवन व्यतीत नहीं कर पा रहे है, अस्पताल में नि:शुल्क योजनाए खासतौर पर ट्रांसजेंडर्स के लिए और स्माइल ट्रेन के अंतर्गत कटे फटे होठ तालु वाले बच्चो के लिए नि:शुल्क योजना निरंतर चलाई जा रही है। अवेयनेस कार्यक्रम मे बड़ी संख्या में हाउस वाईफ, ब्यूटी पार्लर एवं सेलून संचालक सहित स्वास्थ्य कार्यकर्ताओ ने हिस्सा लिया। रायपुर सहित अन्य छत्तीसगढ़ के जिलों से लोग आकर कार्यक्रम में शामिल होते है और जानकारी लेकर लोगो को जागरूक करते है।कार्यक्रम में मुख्य रूप से डॉ सुनील कालड़ा, डॉ हार्दिक कालड़ा, डॉ कृति कालड़ा एवं हॉस्पिटल प्रबंधक उषा साहू, अतुल श्रीवास्तव सहित प्रीती साहू, राजकुमारी केशी, तपस्या लिहारे, लक्ष्मी पाल, शालिनी लिहारे सुमी जंघेल, नूतन साहू, धनेश्वरी साहू, नूतन साहू, बिमला साहू, अंजलि मचखण्डे, अतेंद्र सेन, अम्बा साहू, अनीता राजपूत, गीता साहू, प्रीती साहू, ललिता पटेल, कामिनी साहू, बिशेषरी साहू, दुलेशरी साहू, तिलेश्वरी साहू आदि शामिल हुए।

जीईरोड एम्स के सामने चौक बनाने का निर्देश

रायपुर (आरएनएस)। जीईरोड स्थित एम्स के सामने मरीजों की बढ़ती संख्या में आवागमन की सुविधा को सही बनाने गेट नंबर 4 पर एक चौक बनाया जाएगा। रायपुर में एम्स दुर्ग-भिलाई रोड पर स्थित है। यहां पर आवागमन बढ़ता जा रहा है। महापौर के निर्देश पर एम्स हॉस्पिटल टाटीबंध जीईमार्ग के मुख्य द्वार गेट चार नंबर, जो मुख्य ओ पी डी के आवागमन का मुख्य द्वार है, में सड़क पर चौक का निर्माण करने के सम्बन्ध में नगर निगम जोन 8 जोन कमिश्नर श्रीमती राजेश्वरी पटेल, कार्यपालन अभियंता श्री अभिषेक गुप्ता सहित सम्बंधित जोन 8 अधिकारियों के साथ स्थल निरीक्षण के दौरान शहीद भगत सिंह वार्ड पार्षद और नगर निगम स्वास्थ्य विभाग की अध्यक्ष श्रीमती गायत्री सुनिल चंद्राकर ने वहाँ आवश्यक कार्यवाही करते हुए शीघ्र चौक का निर्माण करने के निर्देश दिये है।

ऑपरेशन सिंदूर की सफलता पर रायपुर में डेढ़ हजार से अधिक महिलाओं ने उत्साह से निकाली तिरंगा यात्रा

महापौर मीनल चौबे, महिला पार्षदों ने तिरंगा यात्रा में सम्मिलित होकर उत्साह से भाग लिया

महिलाओं ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को देशवासियों के गौरव के प्रतीक ऑपरेशन सिंदूर के लिए हार्दिक धन्यवाद दिया

रायपुर (विश्व परिवार)। आज राजधानी शहर रायपुर की महिलाओं ने देशवासियों के गौरव एवं राष्ट्रभक्ति की अलख जगाने का प्रतीक बने भारतीय सेना के ऑपरेशन सिंदूर की शानदार सफलता पर राजधानी शहर में नगर पालिक निगम रायपुर के मुख्यालय भवन महात्मा गांधी सदन से गांधी मैदान एवं सिटी कोतवाली महावीर चौक होकर मालवीय रोड होते हुए जय स्तंभ चौक तक लगभग डेढ हजार से अधिक की संख्या में महिलाओं ने राष्ट्र भक्ति का परिचय देते हुए राजधानी शहर की प्रथम नागरिक नगर पालिक निगम रायपुर की महापौर श्रीमती मीनल चौबे संयुक्त नगर निगम की महिला पार्षदों एवं अधिकारियों कर्मचारियों की उपस्थिति में आपरेशन सिंदूर की शानदार सफलता के लिए भारत गणराज्य के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी एवं भारतीय सेना को धन्यवाद दिया।

उल्लेखनीय है कि भारतीय सेना ने ऑपरेशन सिंदूर चलाकर दुश्मन देश के सौ से अधिक आतंकवादियों का सफाया किया। उनके 9 आतंकी ठिकानो का सफाया करने की अदभूत सफलता देश के लिए अर्जित की। भारतीय सेना के ऑपरेशन सिंदूर के अभियान की शानदार सफलता से कृत्य कृत्य होकर राजधानी की महिलाओं ने उत्साह के साथ आज शहर के मुख्य मार्गों में तिरंगा यात्रा हाथ में राष्ट्रध्वज तिरंगा लिए निकाली एवं सेना की शानदार सफलता से अभिभूत होकर महिलाओं ने आपस में सिंदूर खेला। आपरेशन सिंदूर की सफलता पर तिरंगा यात्रा में सम्मिलित होकर महापौर श्रीमती मीनल चौबे सहित महिला पार्षदों ने उत्साह के साथ सक्रिय सहभागिता दर्ज करवायी एवं प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अगुवाई में भारतीय सेना को ऑपरेशन सिंदूर में मिली शानदार सफलता पर राजधानी के हृदय स्थल जयस्तंभ चौक पर एकत्र होकर हार्दिक धन्यवाद दिया। तिरंगा यात्रा के दौरान रायपुर नगर निगम के पूर्व एमआईसी सदस्य एवं रायपुर शहर जिला भाजपा अध्यक्ष श्री रमेश सिंह ठाकुर की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

उरला क्षेत्र के उद्योगो से निकलने वाले केमिकलयुक्त पानी को साफ करने एस.टी.पी. प्लांट लगाने की मांग : महापौर नंदलाल देवांगन

बीरगांव (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के मुख्य आतिथ्य एवं उप मुख्यमंत्री अरुण साव की अध्यक्षता व राजस्थान अलवर जिले के रहने वाले वॉटर मैन आफ इंडिया राजेंद्र सिंह जिन्हें भारत मे जल पुरुष के रुप में भी जाना जाता है, की गरिमामयी उपस्थिति में मंगलवार को संचालनालय नगरीय प्रशासन एवं विकास विभाग छत्तीसगढ़ के द्वारा दीनदयाल उपाध्याय आडिटोरियम रायपुर मे पंडित दीनदयाल उपाध्याय भू-जल संवर्धन मिशन शहरी का शुभारंभ कार्यक्रम सह कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में भू जल संरक्षण और संवर्धन के विभिन्न पहलुओं पर उप मुख्यमंत्री अरुण साव सहित छत्तीसगढ़ शासन के जल संसाधन विभाग, लोक निर्माण विभाग, लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग, वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग के विषय विशेषज्ञों, हाइड्रोलॉजिस्ट के अलावा वॉटर मैन ऑफ इंडिया के द्वारा जल की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए बहुत ही सहज ढंग से जल संरक्षण और संवर्धन के तकनीकी और सामाजिक दायित्वों की चर्चा की गई। इस कार्यक्रम में अन्य विभागों में कार्यरत अभियंतागण, आर्किटेक्ट के साथ साथ नगर निगम के महापौर, सभापति, जल विभाग के अध्यक्ष व नगरपालिका व नगरपंचायत के अध्यक्षों को आमंत्रित किया गया था। जिसमें भु-जल संवर्धन हेतु किये जा रहे प्रयासों पर चर्चा की गई साथ ही जनप्रतिनिधियों से सुझाव भी लिया गया। बीरगांव निगम क्षेत्र मे फैक्ट्रियों से निकलने वाला पानी केमिकल युक्त है। गंदे पानी को साफ करने के लिए रायपुर निगम द्वारा ग्राम कारा में एस टी पी संचालित किया जा रहा है।वही नगर निगम बीरगांव के महापौर नंदलाल देवांगन के द्वारा केमिकल युक्त पानी को साफ करने के बारे में प्रश्न पूछने पर वॉटर मैन ऑफ इंडिया से कहा कि इस पानी को एस टी पी में साफ नहीं किया जा सकता। बल्कि इसे साफ करने के लिये एस टी पी प्लांट लगाने की आवश्यकता है वही नगर निगम बिरगांव के जल प्रभारी इकराम अहमद ने केमिकल युक्त पानी को साफ करने के लिए तेंदुआ नाला में ईटीपी लगाने की मांग की है। जिससे लगभग 8 सौ फैक्ट्रियों से निकलने वाले केमिकलयुक्त पानी साफ कर निगम क्षेत्र की जनता को साफ पर्याप्त पानी दिया जा सके।

श्री शंकराचार्य इंस्टीट्यूट ऑफ प्रोफेशनल मैनेजमेंट एंड टेक्नोलॉजी (SSIPMT) और डॉ. अभिमन्यु आयुर्वेद मल्टीस्पेशलिटी हॉस्पिटल के बीच हुआ एक ऐतिहासिक एमओयू

रायपुर (विश्व परिवार)। श्री शंकराचार्य इंस्टीट्यूट ऑफ प्रोफेशनल मैनेजमेंट एंड टेक्नोलॉजी (SSIPMT), रायपुर और डॉ. अभिमन्यु आयुर्वेद मल्टीस्पेशलिटी हॉस्पिटल, रायपुर के बीच एक महत्वपूर्ण समझौता ज्ञापन (MOU) पर हस्ताक्षर किया गया।

इस MOU के तहत दोनों संस्थाएं शिक्षा, चिकित्सा, नवाचार और जनस्वास्थ्य के क्षेत्र में एक दुसरे का सहयोग करेंगी। इस समझौते का मुख्य उद्देश्य लोगों में आयुर्वेद के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना है, ताकि वे हमारी प्राचीन भारतीय चिकित्सा प्रणाली पर विश्वास स्थापित कर सकें और उसका लाभ उठा सकें।

डॉ. अभिमन्यु आयुर्वेद हॉस्पिटल के डायरेक्टर डॉ. अभिमन्यु साहू ने जानकारी दी कि इस सहयोग के तहत (SSIPMT), के समस्त स्टाफ को चिकित्सा सुविधा में विशेष छूट दी जाएगी। साथ ही, हॉस्पिटल परिसर में हेल्थ अवेयरनेस कैंप, योग शिविर एवं आयुर्वेद परामर्श शिविरों का आयोजन भी किया जाएगा।

डॉ. साहू ने आगे बताया कि आयुर्वेद चिकित्सा प्रणाली में कई जटिल रोगों जैसे कि गृध्रसी (साइटिका), पक्षाघात (पैरालिसिस), बवासीर (पाइल्स) एवं वर्तमान परिदृश्य में व्यवसायिक/प्रदूषण संबंधी बीमारियों का सफलतापूर्वक इलाज संभव है। इस पहल से लोगों को आयुर्वेद पद्धति से उपचार करने की प्रेरणा भी मिलेगी, जिससे वे प्राकृतिक और दुष्प्रभावरहित चिकित्सा की ओर अग्रसर हो सकेंगे। SSIPMT की ओर से चेयरमैन श्री निशांत त्रिपाठी जी, और हॉस्पिटल की ओर से निदेशक डॉ. अभिमन्यु साहू ने समझौते पर हस्ताक्षर किए। दोनों पक्षों ने इस समझौते को तकनीकी शिक्षा और पारंपरिक चिकित्सा के समन्वय का एक नया अध्याय बताया, जो न केवल छात्रों के लिए बल्कि समाज के लिए भी लाभकारी सिद्ध होगा।

कांग्रेस का दिव्यांग सेवा सद्भावना शिविर, पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न राजीव गांधी के जन्मदिवस पर शुभारंभ

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ प्रदेश कांग्रेस विकलांग सेवा प्रकोष्ठ द्वारा दिव्यांग सेवा सद्भावना शिविर का आज भारतरत्न राजीव गांधी के जन्मदिवस पर प्रकोष्ठ के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष महेन्द्र कोचर व विजय चोपड़ा, डॉ सुनील कालड़ा ने शुभारंभ किया। भारत में कम्प्यूटर युग के प्रणेता राजीव गांधी की तस्वीर पर दीप प्रज्ज्वलित कर माल्यार्पण किया गया। शिविर में कटे-फटे होंठ व तालु के जन्मजात विकृति के बच्चों का परीक्षण ऑपरेशन शिविर का आयोजन कालड़ा बर्न व कास्मेटिक सेंटर में डॉ. सुनील कालड़ा के मार्गदर्शन में किया गया है। राजीव गांधी के जन्मदिवस पर आयोजित शिविर में कटे फ़टे होंठों के ऑपरेशन सहित वैशाखी वितरण, श्रवण यन्त्र का वितरण किया जावेगा साथ ही हाथ पैर कटे दिव्यांगों का परीक्षण किया जावेगा। कांग्रेस विकलांग सेवा प्रकोष्ठ के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष महेन्द्र कोचर व विजय चोपड़ा ने बताया कि शिविर में कटे फ़टे होंठ के बच्चों का परीक्षण डॉ सुनील कालड़ा द्वारा किया गया और 17 बच्चों का ऑपरेशन हेतु चयन किया गया है।जिनके होंठ तथा तालू में छिद्र का नि:शुल्क ऑपरेशन किया जावेगा। पूर्व अध्यक्ष महेन्द्र कोचर ने इस अवसर पर कहा कि कई बच्चों के जन्म से चेहरे विकृत होते हैं जिससे उन्हें खाने पीने में दिक्कत होती है, बोलने में उच्चारण सही नही हो पाता व बच्चों व माता पिता में हीन भावना पैदा हो जाती है। डॉ सुनील कालड़ा द्वारा ऐसे बच्चों के चेहरे ऑपरेशन से ठीक किये जावेंगे। महेन्द्र कोचर ने बताया कि ये ऑपरेशन प्राइवेट में कराने से लगभग 25 से 30 हजार रुपये का खर्च आता है जिसे प्रदेश कांग्रेस विकलांग सेवा प्रकोष्ठ के माध्यम से डॉ सुनील कालड़ा द्वारा नि:शुल्क किया जा रहा है। शिविर में आज सलमा 14 वर्ष, विकास साहू 14 वर्ष, निकिता बरिहा 12 वर्ष, भानुमति 15 वर्ष, रेहज 4 माह, खातिमा 5 वर्ष, कुसुम 9 माह, फातिमा खातून 11 माह, अरुण 4 वर्ष, मोहम्मद रिजवन 12 वर्ष समीर 12 वर्ष, शेरू खातून 8 वर्ष सरोज साहू 5 वर्ष के कटे फ़टे होंठों का सफल ऑपरेशन प्रसिद्ध सर्जन डॉ सुनील कालड़ा द्वारा किया जावेगा। प्रदेश पूर्व अध्यक्ष महेन्द्र कोचर ने बताया कि 12 वर्षीय निकिता की माता अपनी बेटी के जन्म से ही चेहरे की विकृति देखकर दु:खी व चिंतित हैं। निकिता स्कूल में भी उदास रहती है, ऑपरेशन से सभी बच्चों के चेहरे सुन्दर हो जावेंगे। पिता व माँ की खुशी साफ झलक रही है। कांग्रेस विकलांग सेवा प्रकोष्ठ के पूर्व अध्यक्ष महेन्द्र कोचर ने बताया कि कांग्रेस प्रकोष्ठ द्वारा अभी तक पच्चीस हजार से ज्यादा विकलांगों को कृत्रिम पैर हाथ, ट्राइसिकल, कैलिपर्स, श्रवण यंत्र वैसाखी इत्यादि से लाभान्वित किया गया है।

220 केवी उपकेंद्र भिलाई में दो नए फीडर बे ऊर्जीकृत

रायपुर (विश्व परिवार)। भिलाई खेदामारा 400 केवी अति उच्चदाब विद्युत उपकेंद्र से 220 केवी में 2 फीडर बे को प्रबंध निदेशक पारेषण कंपनी श्री आर.के. शुक्ला द्वारा 21 मई को ऊर्जीकृत किया गया। पूर्व में 400 केवी खेदामारा से 220 केवी के लाइनों से विद्युत आपूर्ति की जा रही थी। छत्तीसगढ़ स्टेट पॉवर कंपनी द्वारा अपने पारेषण तंत्र को मजबूत करने की दिशा में इस कार्य को पूर्ण किया गया। 400 केवी अति उच्चदाब विद्युत उपकेंद्र खेदामारा से 220 केवी उपकेंद्र भिलाई में पहले ही 2 लाइनों से विद्युत आपूर्ति की जा रही थी। श्री शुक्ला द्वारा आज 2 अन्य फीडर बे को ऊर्जीकृत किया गया जिससे अब 220 केवी से कुल 4 लाइनों से विद्युत आपूर्ति की जाएगी।

नए लाइन की लंबाई क्रमश: 12.72 किलोमीटर व 17.92 किलोमीटर है। यह कार्य अति उच्चदाब निर्माण वृत्त के मार्गदर्शन में पूर्ण किया गया, जिसकी लागत 5 करोड़ रु. है। इस कार्य से दुर्ग, भिलाई क्षेत्र के उपभोक्ताओं को गुणवत्तापूर्ण विद्युत आपूर्ति होगी, इसके अलावा गुरूर और भाटापारा क्षेत्र को भी भिलाई उपकेंद्र से विद्युत आपूर्ति होगी। इस कार्य से गर्मी के मौसम में किसानों एवं उपभोक्ताओं को राहत मिलेगी।

इस अवसर पर कार्यपालक निदेशक लाइन श्री संजय पटेल, दुर्ग क्षेत्र के मुख्य अभियंता श्री संजय खण्डेलवाल, श्री पीपी सिंह, श्री सुनील भूआर्य, श्रीमती पुष्पा पिल्लई तथा अन्य अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे।

भारत में स्वच्छ इस्पात निर्माण को नई ऊर्जा

आर्सेलर मित्तल की 1GW अक्षय ऊर्जा परियोजना से एएम/एनएस इंडिया को मिलने लगी बिजली

रायपुर (विश्व परिवार)। आर्सेलर मित्तल की अब तक की सबसे बड़ी अक्षय ऊर्जा परियोजना- एक गीगावॉट (1GW) की सौर और पवन ऊर्जा संयंत्र, जो भारत के दक्षिणी राज्य आंध्र प्रदेश में स्थित है- ने हाल ही में एएम/एनएस इंडिया को स्वच्छ बिजली की आपूर्ति शुरू कर दी है। एएम/एनएस इंडिया, आर्सेलर मित्तल और निप्पॉन स्टील के बीच 60:40 के अनुपात में गठित इस्पात निर्माण का संयुक्त उद्यम है।

करीब 700 मिलियन डॉलर की इस परियोजना को आर्सेलर मित्तल की पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी, एएम ग्रीन एनर्जी द्वारा विकसित, निर्मित और चालू किया गया है। यह परियोजना हर वर्ष एएम/एनएस इंडिया के 1.5 मिलियन टन कार्बन उत्सर्जन को कम करने में सहायक होगी, जिससे कंपनी को 2021 को आधार वर्ष मानते हुए 2030 तक अपने इस्पात उत्पादन की कार्बन तीव्रता में 20त्न की कटौती के लक्ष्य को प्राप्त करने में मदद मिलेगी।

इस परियोजना को एक हाइब्रिड मॉडल के रूप में विकसित किया गया है, जिसमें 1GW की सौर और पवन ऊर्जा क्षमता को एक तृतीय-पक्ष जल-आधारित पम्प्ड स्टोरेज प्रणाली (जो वर्तमान में परीक्षण चरण में है और जून 2025 तक चालू होने की उम्मीद है) के साथ जोड़ा गया है। यह संयोजन परियोजना को न्यूनतम 250 मेगावाट की राउंड-द-क्लॉक (24×7) बिजली आपूर्ति सुनिश्चित करने में सक्षम बनाएगा- जो इस्पात उत्पादन जैसे सतत ऊर्जा आवश्यकताओं वाले उद्योग के लिए अत्यंत आवश्यक है। यह संयंत्र एएम/एनएस इंडिया के हजीरा, गुजरात स्थित इस्पात संयंत्र की वर्तमान कुल ऊर्जा आवश्यकताओं का 20 प्रतिशत से अधिक योगदान देगा।

अपने विशाल आकार के कारण, यह परियोजना अत्यंत प्रभावशाली है- सौर ऊर्जा संयंत्र 2,400 एकड़ में फैला है, जो 1,700 से अधिक फीफा आकार के फुटबॉल मैदानों के बराबर है, जबकि पवन ऊर्जा स्थल 700 एकड़ क्षेत्र में विस्तृत है। अब, जब यह परियोजना पूर्ण रूप से चालू हो चुकी है और नामित क्षमता पर कार्य कर रही है, तो लगभग 15 लाख सौर पैनल और 91 पवन टरबाइन मिलकर सालाना 2.5 बिलियन किलोवॉट-घंटा (kWh) बिजली उत्पन्न करेंगे- जो कि लगभग एक करोड़ भारतीय घरों की वार्षिक बिजली आवश्यकताओं के बराबर है।

इस अवसर पर आर्सेलर मित्तल के सीईओ, आदित्य मित्तल ने कहा कि नवीकरणीय ऊर्जा उत्पादन में निवेश आर्सेलर मित्तल के लिए एक रोमांचक नया व्यावसायिक क्षेत्र है। यह हमारे इस्पात निर्माण कार्यों के लिए लागत-प्रभावी स्वच्छ ऊर्जा सुरक्षा प्रदान करता है और हमारे डीकार्बोनाइजेशन (कार्बन न्यूनीकरण) लक्ष्यों को भी सुदृढ़ करता है।

भारत में यह परियोजना हमारे प्रमुख नवीकरणीय ऊर्जा पहलों में से पहली है जिसे चालू किया गया है। यह एक व्यापक और महत्वाकांक्षी परियोजना है जिसे लगभग 18 महीनों में दक्षता और सुरक्षा के साथ पूरा किया गया- भारत में इस पैमाने की सबसे तेज़ पूर्ण हुई परियोजनाओं में से एक। अब यह एएम/एनएस इंडिया को स्वच्छ बिजली की आपूर्ति कर रही है। इस सफलता के लिए परियोजना से जुड़े सभी सहयोगियों को मेरी ओर से हार्दिक बधाई। यह परियोजना भारत में सुरक्षित और सतत विकास के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

भारत की यह परियोजना आर्सेलर मित्तल द्वारा विश्व स्तर पर विकसित की जा रही कई अक्षय ऊर्जा पहलों में से एक है। वर्तमान में कंपनी भारत, ब्राज़ील और अर्जेंटीना में कुल 2.3GW क्षमता की अक्षय ऊर्जा परियोजनाओं पर कार्य कर रही है।

यह परियोजना आर्सेलर मित्तल की रणनीतिक विकास योजनाओं का भी हिस्सा है, जिनसे कंपनी को 2027 के अंत तक सभी परियोजनाओं के पूर्ण होने पर वार्षिक 1.9 बिलियन की अतिरिक्त EBITDA अर्जित होने की उम्मीद है।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति रायपुर की अर्धवार्षिक बैठक सम्पन्न

रायपुर (विश्व परिवार)। दिनांक 21.05.2025 को मंडल रेल प्रबंधक एवं अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रायपुर दयानंद की अध्यक्षता में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रायपुर की वर्ष 2025 की प्रथम अर्धवार्षिक बैठक रेल अधिकारी क्लब, उल्हास में आयोजित की गई। सर्वप्रथम मुख?य अतिथि श्री दयानंद, अध?यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रायपुर एवं मंडल रेल प्रबंधक तथा विशिष?ट अतिथियों द्वारा दीप प्रज?वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। इसके पश्चात अध?यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रायपुर एवं मंडल रेल प्रबंधक एवं श्री नरेंद्र सिंह मेहरा, उपनिदेशक (कार्यान्वयन), क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल का पुष्पगुच्छ से स्वागत किया गया।

बैठक के दौरान नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रायपुर के सदस्य कार्यालयों की दिनांक 01.07.2024 से 31.12.2024 तक की अवधि की राजभाषा प्रगति की समीक्षा समिति के सचिव श्री निकेश कुमार पाण्डेय द्वारा की गई। साथ ही विभिन्न मदों पर चर्चा भी की गई। इस बैठक में श्री नरेंद्र सिंह मेहरा, उपनिदेशक (कार्यान्वयन), क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल विशेष रूप से उपस्थित रहे। उन्होंने अपने संबोधन में दिनांक 17.02.2025 को जयपुर में आयोजित संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में नराकास, रायपुर को ' नराकास राजभाषा सम्मान ' प्राप्त होने पर सभी सदस्य कार्यालयों को बधाई दी तथा वार्षिक कार्यक्रम में दिए गए लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु आवश्यक प्रयास करने का अनुरोध किया।

अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रायपुर एवं मंडल रेल प्रबंधक श्री दयानंद ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि आप सभी राजभाषा हिन्दी के प्रति अपने संवैधानिक कर्तव्यों का पालन अच्छी तरह से कर रहे हैं। हम सभी देश की जनता, देश की प्रगति और पूरी दुनिया में देश की अमिट पहचान बनाने के लिए कार्य करते हैं। अत: हम अपने दैनिक काम-काज में हिन्दी का जितना अधिक प्रयोग करेंगे, हम उतना ही बेहतर तरीके से अपने कार्यों को आमजन तक पहुंचा पाएंगे।'' बैठक में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रायपुर के कुल 82 सदस्य कार्यालयों एवं उपक्रमों के कार्यालय प्रमुख एवं उनके प्रतिनिधि उपस्थित हुए। बैठक का संचालन श्री निकेश कुमार पाण्डेय, सचिव, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रायपुर एवं राजभाषा अधिकारी, द.पू.म. रेलवे, रायपुर ने किया। बैठक के पश?चात उपस्थित गणमान्य अतिथियों के करकमलों से नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रायपुर की पत्रिका 'मुक्तांगन' के द्वितीय अंक का विमोचन किया गया। अंत में धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ।

प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी प्रियेश कुमार जैन द्वारा आसमां पब्लिसर्स इंडिया प्रा.लि. पंजाब नेशनल बैंक के सामने, जयस्तंभ चौक, रायपुर से मुद्रित एवं ओलंपस जिम के पीछे, सेक्टर-1, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.) से प्रकाशित। संपादक : प्रदीप कुमार जैन, फोन नं. : 0771- 4017966, मो.- 9981924252 RNI.NO.CHHHIN/2013/50354